सोवणो सफर : मोवणा पड़ाव

(आखै भारत रे दर्शन जोग ठामां रा चित्राम)

सोवणो सफर
सोवणा पड़ाव

अमरनाथ कश्यप

© : लेखक
मूल्य : पचास रुपये
संस्करण : 1992
आवरण : आसाराम गोस्वामी
प्रकाशक एवं : प्रज्ञाभारती प्रकाशन
वितरक पोकर क्वार्टर्स, रानी बाजार, बीकानेर
मुद्रक : शिव प्रिंटिंग प्रेस, जैन पाठशाला के सामने, बीकानेर

SOWANO SAFAR MOWANA PADAW (Rajasthani)
by Amarnath Kashyap Price : 50/-

भूमिका

आखै भारत री प्राकृतिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक अर धार्मिक विशेषतावां री दृष्टि सूं विविध भांत रा सरस तथा प्रेरणादायक चित्राम इण पुस्तक मांय प्रकाशमान है। भारतीय जीवन दर्शन री दोय विशेषतावां है—आत्मिक सत्ता री एकता तथा प्रकृति साथै मिनख रो हार्दिक जुड़ाव। ग्रै दोनूं ही खूबिया इण पुस्तक माय घणै सुरुचि पूर्ण रूप में प्रकट हुई है। आ विद्वान लेखक री निजी सामर्थ्य तथा गरिमा है।

इण पुस्तक मांय भारत रै दर्शन जोग विश्व विख्यात ११ ठामां री यात्रावा रा अनूठा संस्मरण संकलित है। हिमालय रा हिम मण्डित ऊंचा पर्वत, तपती मरुभूमी, उफणता समुद्र, आस्था रा तीरथ, स्थापत्य रा बेजोड स्मारक, मिंदर, बाग बगीचा अर ग्रोरण सैं कुछ ग्रापरी रंगत ग्रर ग्रांचलिक विशेषतावां सागै मूर्तिमान हू जावै। इण मे सम्पूर्ण जीवन शैली, ललित कलावा अर ऐतिहासिक गौरव एक साथै गुम्फित है। ग्रलग-अलग जनपदां री विविघतावां राष्ट्र री एकता ने पुष्ट करती प्रकट हुवै। आ पुस्तक परम्परा अर ग्राधुनिकता रो एक सोवणो सेतु है। इण सूं राष्ट्र री प्रकृति अर संस्कृति रै मूल्यां नै समझणै तथा परखणै मांय सहज सुविधा मिलसी।

वर्तमान मांय राजस्थानी भाषा में गद्य-पद्यात्मक विविध-विधावां में ग्रनेक रचनावां ग्रागै आय रैई है, अर वै सरावण जोग है। पण यात्रा

विषयक रचना रा लेखक तो मात्र श्री अमरनाथ कश्यप ही ज है। आपरी इणी विषय मायँ एक पुस्तक 'मुळकता मिनख: मोवणी धरती' आगै प्रकाशित होय चुकी है अर उण प्रकाशन नै खासी लोकप्रियता मिली है। आ विशेष प्रसन्नता री बात है। इणी ज क्रम मांय श्री कश्यप री आ दूजी पुस्तक प्रकाशित हुई है। ओ नयो प्रकाशन देख'र दूणी प्रसन्नता हुवै। आशा है इण नै भी पूरो सम्मान मिलसी तथा विशेष लोकप्रियता प्राप्त होसी। साथै ही ओ भी विश्वास है कै इण प्रकाशन से प्रेरणा लेकर दूजा लेखक भी मायड़ भाषा राजस्थानी में आपरा यात्रा वृतांत प्रस्तुत करसी।

इण सोवणे-मोवणे तथा उपयोगी प्रकाशन सारू विद्वान लेखक हार्दिक साधुवाद रा पात्र है।

—डॉ. मनोहर शर्मा
हिन्दी विश्व भारती, बीकानेर

रचना सारू

मानव सुभाव सूं ई परिवर्तन प्रेमी है । एक सरीसे जीवन, एक ही ठाम अर हरमेश एक जिसे वातांवरण सूं ऊब'र जाग्यां-जाग्यां रे लोक जीवन, प्रक्रिति रे सुंदर स्वरूप आळी नद्यां, पाहा, झीला, सरोवरां, झरणां, जूणा स्मारका, किलां, महला, प्राचीन तीरथा, अनेक भांत री विनस्पती अर प्राणिमा रे परतख दरसन सूं आणद रे साथै आपरी सभ्यता अर संस्क्रिति सूं भी औ रु-ब-रु हुवै । इण परतख अनुमव सूं उण री मन बुद्धि मे जाणे कित्ती जाणकारी रो भण्डार भरै । भिन्न भिन्न खेतरां री अळायदी जीवन शैली नै नजदीक सूं निरख'र उणा री विशेषतावां ने जाणे-अणजाणे वो आपरे ब्योहार मैं आत्मसात भी करतो जावो । भांत-भांत रे लोगां, उणा री भाषा, रीति-रिवाज, परम्परावां रे समपरक सूं मानव मैं समन्वय भाव मजबूत हुवै । यात्रावां आतस री भावनात्मक एकता री बेल नै सींचै । इण सूं अनेकता में एकता अर सगळा धरमां रे सम्मान रा भाव द्रढ़ हुवै ।

प्राचीन भारत रा धरमगुरु अर रिखी-मुनी समता भावना नै जगावण मे यात्रावां रे महत्त्व अर मरम नै आछी तरां जाणता हा । इण खातर ई आदि शंकराचार्य खुद निजी रूप सूं सगळै भारत री चार बार जातरा करी अर इणी उद्देश्य सूं देस रे चारूं कुणा में चार धाम, थरपिया । सात पुरी, द्वादश ज्योतिर्लिंग, कुम्भ रा मेळा अर अनेक लोक तीरथां री थापना लारे भा ही दीठ ही । सता, पीरां, पैगम्बरां री पूजा रे मूल में भी ओ ही भाव है । भावनात्मक एकता री पुष्टी खातर ही उत्तर रै बद्री धाम रा पुजारी ठेठ दखण रा नमुद्री ब्राह्मण नियुक्त करीजा अर दखण रे रामेश्वरम् रे अभिषेक वास्ते गंगा जल रे अरघ रो विधान बणायो । कासी मैं शैव, वैष्णव अर बौद्ध तीन्यू धरमां नै समान आदर मिल्यो । सम्प्रदाय रै भेद-भाव बिना नानक, रैदास, रज्जब, रामदेव सैं समान आदर जोग महान संत मानीज्या । इण कारण आं तीरथां री जातरा असल मे समपूरण भारत माता मिंदर री ही जातरा हे ।

विगत

अमरनाथ री जातरा

भारत रै मुगट दांई सोभा पावते कश्मीर री अंग-अंग प्राकृतिक सुन्दरता रो मोकळो भंडार है। अठै रा चावी वरणा ऊंचा डूंगर, गभीर गर्जन सागै बैहती अर उछाळ सागै ऊजळा मोती बिखेरती नद्यां झर-झर झरते जळ री सोवणी झालर बणाता सैकड़ूं मन मोवणा झरणा, चारूं मेर हरयावळ सूं लद्या अर जोरावर पून मैं झूमता बिरख दर्शकां नै आपोआप निज कानी खीच लेवै। धरती माथै सुरग समान इण भूम मैं सदाशिव अमरनाथ रो पावन धाम १३५०० फूट री लूंठी ऊंचाई माथै थित है। हरमेश सावण री पूनम नै अठै देश भर सूं हजारूं जातरी भगवान महादेव रै दर्शनां ताई आपरा सरधा सुमन चढ़ावणनै आवै।

भारत रै संग देवी-देवतावां में महादेव शिव रो रूप बोत अनूठो है। दूजा देवता चोखा परिधानां अर अलंकारां सूं भूषित हुवै। पण शिव कोपिन रै सिवाय दिगम्बर रैवे। गळे में सरपां नै धारण करै। दूजा देव मुगट धारै, अगर चंदन सूं मंडित रैवे, शिव रो प्रसाधन भस्म हुवै। दूजा देव सुरीला वाद्य बजावै, शिव रो बाजो डमरू ही है। [illegible], आद लाडू, मेवा कर मिष्ठान सूं तिरप्त हुवै अर [illegible] इच्छावां पूरी करै तो शिव आक अर धतूरे जिसी साधारण [illegible] सूं प्रसन्न हुय धरम, अरथ, काम, मोक्ष जिसा चार बड़ा फळ प्रदान करै। [illegible] धरती री उपज तांई जहर रो पान करै। [illegible] उजाळो बरसावै। मानखे री मुगती [illegible]

सब रैं कल्याण रो बिधान करै। इण खातर ई तो शिव रो अरथ ई मंगळ ह्वैग्यो है। अलौकिक गुणा री बोळायत सूं ई शिव नैं सर्व शक्तिमान अर स्वयभू कैवे। अमरनाथ घाम मैं तो इण रैं स्वयभू रूप रा साक्षात दर्शन हुवै। अमरनाथ गुफा री छात सूं पाणी री छांटा पड़ती रैवे। अठै गम्यो मैं भी शून्य सूं नीचो तापमान हुणे सूं इणा बूंदा सूं ई जम'र बरफ रैं हिम लिंग री इसी नैणामिराम आक्रिति बणै अर कुदरत रैं इण करिश्मे नैं परतख देख'र सरधालु जातरी आध्यात्मिक भाव सूं अभिभूत हो'र मन मुग्ध रै जावै। इसे धाम री जातरा री कल्पना मात्र सूं म्हे रोमांचित हु ग्या हा।

पंद्रह साथ्या सागै सन् १९८३ मैं अगस्त महीने री १६ ता. नैं बीकानेर सू भटिंडा, फिरोजपुर, जालंधर, पठान कोट मारग सूं जम्मू तवी ताई पूग्या। आगे बस सूं श्रीनगर गया। जम्मू सूं सीधो बनावल अर अनन्तनाग हूं'र पहलगाव जायो जा सकै। पण कश्मीर रा श्रीनगर आद दूजा सोवणा ठांम देखण रो लोभ नी छोड़ सक्या। पामपुर हूंता राजमारग सूं श्रीनगर पूग्या।

जातरा खातर रवाना हूंण सू पैलां बीकानेर मे ही केई पूर्व अनुभवी जातरी मिलग्या हा। उण लोगां री सळाह मुजीब खासी तैयारी भी कर ली ही। पैरण ओढणा ताई गरम ऊनी कपड़ा, बरफ री आंधी सू बचण खातर चश्मो, पिट्ठु, पाणी री कैतली, सामान्य सर्दी जुकाम, बुखार री दवायां, कपड़े रा जूता, लो री नुकै वालो-लाठी, बरसाती, टार्च, चाकू, खाद्य सामग्री ताई बिस्कुट, सूखा मेवा, भुजिया, आद आवश्यक जिन्सा प्रति व्यक्ति रैं हिसाब सारू साथै ले ली। आ बात बताईजी ही कै पहलगाव में तम्बू हजार डेढ़ हजार रुपयां मैं किराए मिलैं। इण वास्ते म्हे आपणो निजी तम्बू बीकानेर सूं ही लेग्या, जिण सू वास्तव मे खरचे में किफायत तो रैईही मारग मे इच्छा रैं मुजीब ठहरण आद री सुविधा भी रैई। चाय बणाण

ताई स्टोव-बर्तन, एक बडो प्रेशर कुकर अर चावल दाल साथे ले लिया। इण सूं हतको पण पौष्टिक खाणो बणावण रो सुभीतो रयो अर जातरा वेसी ग्रानन्द पूर्ण बणगी।

श्रीनगर मे म्हे तीन दिन ठहर्या अर गुलमर्ग, सोनमर्ग, क्षीर भवानी, हरबन, निशात, शालीमार, चश्मेशाही, डल झील, चार चिनार आद दर्शनीय ठामां रो भ्रमण दर्शन कर्यो। २१ ग्रगस्त, ग्यारस रै दिन दसनामी अखाडे सूं शकराचार्य मंदिर रै शिवजी रै त्रिशूल सागै अमरनाथ यात्रा श्रीनगर सू सरु हुवै। इण नें वठै छड़ी साहेब कवै। जिला मैजिस्ट्रेट रै सरकारी सरक्षण मे डल रै सारै ऊचे डूंगर माथै थित शकराचार्य मंदिर मे पारम्परिक पूजा अर्चना रै बाद-छड़ी नै बादशाह चौक रै अखाडे में लावै। वठै सूं भोराभार ही मंत्रोचार, हरजस अर शखनाद रे साथै यात्रा रवाना हुई। मुस्लिम वोळायत री कश्मीर सरकार इण हिन्दू धाम री जातरा रो जितो सातरो अर व्यवस्थित परबध करै बो निश्चय ही सरावण जोग है। पुलिस, चिकित्सा व्यवस्था, यातायात परबध, संचार व्यवस्था, यात्र्या रो पंजीयन, जातरा पड़ाव वास्ते तम्बू-सिरक्यां रो परबध, जातरा मारग री सुरक्षा व्यवस्था आद सै कुछ री बौत चोखी अर कुशल व्यवस्था जिसी ग्रठै देखणे में आवै बिसी घणखरे दूजे हिन्दू राज्यां मे भी देखण नै नी मिले। ग्रठै रा मुसलमान भी इण जातरा नै बहुत सम्मान देवै। अधिकारी गण चौकसी अर निष्ठा सूं जातर्यां री सहायता मैं जुट्या रवै। घोड़ा अर तम्बू आद सामान रा किराया राज सूं तय करोड्या हुवै अर नाजायज किराए वसूली आद रा मामला कम ई सुणीजण में आवै। घोडे वाळां नै तो जातरा री वापसी मैं जातर्यां द्वारा दियोडो संतोष जनक ब्यौहार रो प्रमाण पत्र अधिकार्यां सामै पेश करणो पडै, तो ई उणा नै घोड़ा रो किरायो मिलै।

छड़ी साब री जातरा नै ग्यारस नै रवाना कर्यां पछै अगले दिन २२ ता० नै श्रीनगर सूं दिन री बस सूं म्हें पैलां देपार गांव पूग्या। लीदर

रै सामै उत्तरी रेल्वे गैस्ट हाउस रै कनै एक ऊंची पाळी जाग्यां मा
आपणो तम्बू लगायो । नीचे हरी दूब, ऊपर चिमार रा झबरा हरा रूं
तीन मेर बरफ सूं ढक्या डूंगर अर शीतल वातावरण मे मन आगै
मनोरम जातरा री कल्पना सू आनन्द उल्लास सू भरग्यो । दो साथ्या
ले'र यात्रा रो पंजीयन कराणे अर सामना खातर घोड़े वास्ते निकळ्या
पंजीयन रो काम आसानी सूं आध घन्टे में ई हुग्यो । थोड़ी दूर दखणा
में लीदर रै डावै पासे नदी रे सूखे आगोर में सैंकडू घोडा अर वा रा सई
खड्या हा । अब्दुल सम्मद नाम रै घोड़े वाले सू आणे जाणे रो अनुबं
सरकारी दर रै मुजीव १०० रु प्रति घोडे रै हिसाब सूं तय हुयो । म्हा
दो घोड़ा री दरकार ही । एक तम्बू खूटा आद वास्ते अर दूजो बिस्तरा अ
खाणे-पीणे रे सामान वास्ते । बात तै हुयां पछै सरकारी कार्यालय मे स
साथ्या रा नाम पता अर घोड़े वाले रो नाम अर हस्ताक्षर आद दर्ज कराया
दफ्तर आळा हैजे रो टीके लगावण खातर कैयो । पण म्हे लोग तो बीकाने
सूं ईं टीको लगवा'र उण री प्रमाण पत्र साथै लेग्या हा जिण सूं टीके रं
छूट मिलगी । सिझ्या रे भोजन रै उपरात गैर जरुरी सामान राजकी
सामान घर मैं २ रु. प्रति नग रै हिसाब सूं जमा करा दिया ।

पहलगाव श्रीनगर सूं ९६ कि. मी. री दूरी माथै समुद्र तट
७ हजार फुट ऊंचाई माथै बस्योड़ो घणो साफ सुथरो एक छोटी पाड
कस्बो है । लीदर अर तानिन नदयां रै फूटरे संगम माथै थित हुणै सूं अ
रो कुदरती निजारो आंख्यां नै ईं नी मन आत्मा नै भी आपरै काबो खी
लेवै । जातरी चकित भाव सू चौफेर बर्फीली पाड्या, बस्ती, नदी अ
हर्यावळ नै निरखतो सैं कुछ भूल'र ऊभो रह जावै । वनस्पति री मोकळ
यत अर खुशनुमा जलवायु रै कारण आ जाग्यां बोत ताजगी अर खुशी दे
आळी अनुभव हुवै । ठैरण खातर अठै टूरिस्ट बगलो, अणेक छोटा बा
होटल, गैस्ट हाऊस आद तो है ही सीजन रै दिना मैं लोग आमदणी ता
आपरे घरां मैं भी जातर्यां नै ठैरा'र चोखा पइसा कमा लेवै । लीदर

सारै आगूणे खुल्ले मैदान मैं 'टूरिस्ट हट' भी बण्योड़ा है, जठै सूं नदी रै प्रवाह नै नैडै सूं देखणे रो मजो लियो जा सकै। पहलगांव सूं ई अमरनाथ री परसिध जातरा तो सरू हुवै ई है, दूजा सैलाणी अठै पडाव बणा'र सोनसर, तारसार, लिडरवेट अर कोल्हाई ग्लेशियर आद भी जावै।

दि. २३ नै तेरस रै दिनुगै दैनिक कार्यक्रम सूं निपट, चाय नाश्तो कर'र सामान बांध्यो अर अब्दुल समद ने बुला'र घोड़े माथै सामान लाद्‌वायो। शुभ जातरा ताई समद नै पाच रुपिया नेग रा दिया। आ एक तरह री बगसीस ही है जकी घोड़े वालां नै सैग जातरी देवै। इण सूं आपसी सद्‌भाव अर खुलोपण बणै। जातरा रो आरम्भ ऊंचे कंठा सूं बाबा अमरनाथ री जय अर 'ओम नमो शिवाय' रै उद्‌घोष सूं हुवै। सैमूळो वातावरण धार्मिक भाव अर उमाव उत्साह सूं तरंगित लागण लागै। छोटा-बड़ा, मोटियार अर बूढा-ठेरा लोग और लुगायां सै प्राय: एक जिसी वेश भूषा मैं मजिल ताई बढ़ण नै उत्सुक दीसै। जात-पात, अमीर-गरीब, धरम, भाषा, अर प्रदेश आद रा सारा बधन अठै आपै खतम हू जावै। एक दूजै सूं बतळावण करता, निश्छळ भाव सूं मुकाम ताई पूगण नै उत्साह दिरावता लोग आपस मैं हेत सूं आगै प्रस्थान करै। राष्ट्रीयता ही नई साचे मिनखपणे रो असली रूप अठै देखणनै मिलै।

पहलगांव करवे री लुगायां टाबर आपरे घरां सामै निकळ'र ऊभा हु जावै। वै आदर अर उमग सूं जातरयां नै निरखता मुळकता दीसै। कदै कदै कोई विचित्रता बानै केई जांवतोडे मैं दोसे तो आपरी भाषा कस्तवारी मे बोलता हसण लागै। नाना टाबर हाथ हला'र जांवतोड़ा जातरयां रो अभिवादन करै। अणजाण, अपरिचित अर अबोध बाळका री आ सद्‌भावना मन नै मायं ताई छू जावै। कश्मीरी महिलावां लम्बे चोगे नुमा कुरतो फिरन अर ढीली सलवार पैरै। माथे माथै रेशमी रुमाल बांधे। अठै चांदी रा गैणां-कर्ण-फूल, हार आदि रो रिवाज घणो है। हिन्दू

महिलावां कानां में लम्बी लटकन आळी माळां सूं जुड़्या कर्ण भूषण पैरे जको आपरी निजी पहचान थका घणो फूटरो लागै। कुदरत अठै रै मानखे नैं भी उदारता सूं खूबसूरती जाणै लुटाई है। अठै रा टाबरां रा मूंडा भी सेव री ललाई अर नुवां फूलां सो रंग, ताजगी अर मुळक विसेरता लागै। अठै रा टाबर चपळ नी हुवै। सील अर संकोच रो भाव वैगा रै चैरा माथै मण्ड्यो लागै। औ प्रकृति रो सुखद प्रभाव तो है ही शायद इति बड़ी संख्या मैं बारला आदम्यां रै बड़े टोळां नैं देखणे रो अनुभव भी वांने अचम्भे में डालण आळो हुवै।

इण जातरा मैं आखे देस सूं साधु-संत, जातरी अर सैलाणी तो आवै ही है, विदेशी जातरी भी खासी संख्या मैं ढूकै। केई विदेशी महिला जातरी भी देखण मैं आवै। गेरुआ गाभा अर रुद्राक्ष री माळा पैरयां अंग्रेज सी लागण आळी एक महिला केई दूर तांई, पहलगांव सूं थोड़े रस्ते बाद ई म्हारै साथै-साथै चाले ही। एक साथी अंग्रेजी मैं बांरे देस बाबत पूछ्यो, तो वै नाराज हू'र हिन्दी मे पूठा बोल्या "मुझे नही लगता कि मैं अमर नाथ की पवित्र यात्रा पर हूं, बल्कि लगता है कि इग्लैण्ड के किसी बाजार में घूम रही हूं।" उणा रै व्यंग रे मरम सूं म्हा सब नैं सरम अर दुःख रो अनुभव हुयो। पण मैं बाने समझायो कै म्हाने सुपने मैं भी औ अनुमान नी हो कै थे हिन्दी जाणो। घणखरा विदेशी जातरी अंग्रेजी जरुर जाणता हुवै, आ समझ'र ही अंग्रेजी मैं परिचय पूछ्यो हो। बाद मैं तो म्हे ३-४ कि. मी. तांई हिन्दी में बोलता बतळावंता गया।

मन री दीठ सामैं इण प्रसंग सूं आळायदो १९५४ रो एक दूजो चित्राम घूमग्यो। दिल्ली मे प्रथम उद्योग प्रदर्शिनी प्रगति मैदान में लागी ही। रूस रै प्रदर्शन में कक्ष केई आधुनिक वेशभूषा आळै सज्जन अंग्रेजी में कोई मशीन रे सचालन रे बारे में प्रश्न पूछ्यो। रूसी कोई जवाब नी दियो। दूजी वेला पूछणे पर बै फटकार लगातां कैयो "क्या आपको हिन्दी नहो

आती। या तो आप हमारी भाषा रूसी में बात करें, नही तो अपनी भाषा हिन्दी में—यह साम्राज्यवादियों की भाषा की गुलामी कब तक ढोयेंगे ?" फेरु उणां री रोजीना उथळावण सूं श्रोजूं ताई भी आपणो पिंड छुडाणे में देशवासी कता'क सफल हू सक्या है ? आज भी श्रौ सगळां तांई मनन रो विषय है। हालांकि उपरले प्रसंग मैं जातरी महिला सूं अंग्रेजी मैं पूछणो मात्र परिस्थिति रै गैर मुजीब नी हो। उण महिला सूं पतो लाग्यो कै बा पैरिस मैं अध्यापिका है अर तीसरी बार अमरनाथ री जातरा माथै आयी है। वां रो कैणो हो कै श्रमरनाथ री जातरा सूं हर बार बानै अनूठी आत्मिक शांति मिलै है। जकी जातरा विदेशयां तांई भी इति प्रेरक हुवै उणरा सहभागी हुणे रो गौरव अर सांस्कृतिक स्वाभिमान सूं म्हे सै साथी उमाव सूं भरग्या।

पहलगाव सूं चंदन बाड़ी रो १३ कि. मी. रो मारग घणी ऊभी चढाई आळो नी है। पहाड रै पत्थरां सूं कच्ची सड़क भी अबै चंदन बाड़ी तांई वणगी है। मारग लीदर रे सारे सारे चाले। चीड़ रा विरख घणी तादाद मैं मिलै। चारूं मेर घणी हरियावळ छायोडी रैवे। मारग में बसुरन, तूल्यिन आरु अर लीदर वैट नाम री जाग्यां मैं हरी घास रा मोवणा चरागाह भी मिलै। म्हारी टोळी प्रातः ७ बज्यां पहलगाव सूं रवाना हुयी ही। २ बजता बजतां म्हे चंदन बाड़ी सूं पैला लीदर रै पुळ माथै ठैरग्या। अब्दुल समद घोड़े वाळे ने अठै मिलने रो ई कैयोडो हो। खासी ताळ बाद करीब ३.१५ बज्या घोड़ो अर सामान पूग सक्यो। नदी पार मैदान मे खुली जाग्यां देख'र तम्बू लगायो। दोपहर बाद ठण्ड लागी। पूरी बायां रा सूटर आद निकळ'र पहर्‌या। २ साथ्या ने चाय बणावण रो कं'र कुदरत रे अनूठे द्रश्य नै देखण ने आसे पासे घूमण लाग्या।

चंदन वाड़ी री ऊंचाई ६५०० फिट हूणे रे कारण अठै ठंड रो अनुभव हूण लाग्यो। चारूं मेर री पहाड़्यां माथै री चादी वरणां वरफ अबै

नजदीक दीसण लागगी। इण जाग्यां तापमान कम हूंणे सूं चाय बणने में आध घण्टे सूं बी वेसी समय लागग्यो अर प्याला में परसतां ई चाय ठण्डी हूयगी। बाद में तो सबक लिये कै इण क्षेत्र में चाय रा बरतन भी गरम पाणी मैं घोवणा चाहिजै। सिझया रै भोजन मैं खिचड़ी बणावण तांई लीदर सूं पाणी लेणें गया तो नदी रो तेज परवाह देख'र डर लाग्यो। ज्यूं त्यूं डरता डरता बाल्टी दूर सूं पाणी मैं डबो'र आधी पूणी बाल्टी तो भरली, बाकी बाल्टी भरण तांई गिलास नदी में डुबोयो तो तेज धारा रे परवाह में गिलास हाथ सूं छूट'र वैहग्यो। और पाणी री आस छोड'र पाछा आया तो तम्बू रै आसे पासे दूजा तम्बू लागणे सूं आपणो तम्बू जोवण मैं दिक्कत हुई। फेर तो एक डंडे माथै रुमाल बांध'र झण्डे ढाई तम्बू माथे लगायो ताकी निसाणी रै कारण कोई नै दिक्क्त नी होवै। जातरा रे समय चदन बाड़ी में छोटो मोटो बाजार अर भोजन व्यवस्था तांई अनेक ढाबा अर लंगर लगाया जावै। अस्थाई बिजली री व्यापक व्यवस्था की जावै। जैनरेटरां सूं केई जाग्यां बिजळी रो परबंध करीजै। खास तौर सूं नदी रै पुळ, बाजार, पहाड़ी मोड आद जाग्यां रोशनी जरूर लगावै, नहीं तो अणजाण अर खतरनाक घाट्यां में हादसे री घटनावा रो डर रैवे। चंदन वाड़ी मैं रात्रि विसराम कर्‌यो। तम्बू मे तिरपाल बिछा'र बिस्तर खोल्या। हरेक साथी कनै २-२ कांबल बिछावण नै अर २-२ ओढण खातर हा। पण सगळा ऊनी कपड़ा पैर'र सोणे अर कांबळा नै ओढ़णे रे उपरांत भी सावळ नींद कोई नैं नी आ सकी।

आगले दिन तड़के ही वैगा तैयार हू'र ७ बज्यां रे नेड़े जातरा रै दूजे चारण शेषनाग तांई टुर्‌या।

चदन बाड़ी छोड़तां ई बरफ रै हिमनद नैं पार करणो पड़ै। बरफ री परत ठोस अर तिसळने आळी हुवै। अठै बेलदार इण री परत माथै वेलचां अर कुदाळां सूं खोद'र जाग्या जाग्यां खाचा बणावै, जिणसूं कै

लोग पग टिका'र धीमैं धीमैं इण मार्ग चाल सकै अर तिसलणे सूं बच सकै। प्रायः घणखरा जातरां वास्ते औ नूवो अर रोमांचकारी अनुभव हुवै। कमजोर दिल आळा आदमी तो पैलां डर'र अळगा ही ऊभा हू जावै अर दूजा नै जांवता देख'र दिल जमावै। बाद मे वै डरता डरता हिम्मत बांध'र 'शिव शिव' करता उण नै पार करै।

इण ग्लेशियर सू थोडी दूर आगे पूग्या ही हा कै एक मजेदार घटना सामै दीखी। कई साधु खाली लगोटी लगाया गोळ बणा'र बैठ्या स्यात सुलफे री चिलम पी रैया हा। इति ऊंचाई अर भीषण ठंड मैं उघाड़ा साधुआं नै बैठ्या देख'र एक विदेशी कैमरे सूं बांरी तसवीर लैणी चाई। ज्यूं ई बिण कैमरे रे लैंस सू सीधा बाधणे री तैयारी करी एक साधू अग्रेजी मैं बोल्यो 'स्टोप'। अग्रेज रुकग्यो। साधु पाचू आगळयां नै भेळी करतो अर खोलतो इशारा करता मळै कैयो 'फाइफ रूपीज'। यानी फोटो खीचणी है तो पाच रुपिया दो। मगळा जातरी इण तमासे नै देख नै ऊभा व्है ग्या अर हसता हसता ओ द्रश्य देखण लाग्या। आखर मोल भाव मैं तीन रुपिया तै हुया जद माधुआं रो फोटो लरीजो। अर्थ रो परभाव अठै तक पूगसी कदै सोच्यो भी नी हो।

चंदन वाड़ी सू शेषनाग १२ कि. मी दूर है पण औ रास्तो अमर नाथ जातरा रो सै सूं दुर्गम आडी चढाई आळो है। बीच रास्ते मे पिस्सू घाटी नाम रो ऊचो पाड आवै जको १२३०० फिट सूं भी बेसी ऊंचाई आळो है। पिस्सू परबत रै बारे मैं पौराणिक ग्रथा मैं एक कथा आवै। प्राचीन काल मैं अठै वायुरे समान रूप आळो एक राक्षस रहतो अर बो देवतावां नै कष्ट पूंचावतो। देवता भेळा हू'र सदाशिव कनै गया। बां कैयो कै मैं इण नै अक्षय बरदान दियो है, थैं विष्णु री शरण जावो। देवता विष्णु कनै पूग'र वां री विनती कीनी। विष्णुजी शेषनाग नै याद कियो। अर उपस्थित हुणे पर बांने आज्ञा दी कै थे थारे सहस मुखा सूं इण वायु रूप राक्षस रो पान कर जावो। एक पल मैं ई शेषनाग दैत्य रो

भक्षण कर लियो अर देवतावां री रक्षा हुई । पिस्सू घाटी ही उण राक्स रो ठाम हो अर शेषनाग ही उण रे भक्षण री जाग्यां है । पिस्सू टाप इण घाटी री सैं यू ऊंची चोटी है । इण री चढ़ाई रै बाद जोजपाल नाम रो सुन्दर चारागाह आवै । अठै री दूकानां मैं खाणे-पीणे री सामग्री मिलै। जातरा री कठिन चढ़ाई रै बाद अठै सुस्ताणे वास्ते बैठ्या । अठै बड़ा आछा बागूगोसा और सेव मिलै जका सस्वादिस्ट और पौष्टिक हूणे सूं थकावट मिटा'र ताजगी देवै । कठिन श्रम रै बाद मुकाम कानी आगे बढ़णे अर प्रकृति रै सुन्दरतम रूप रा दर्शन करणे सूं आनन्द अर तिरप्ति हुवै। १ बज्यां ताई शेषनाग पूगग्या ।

शेषनाग मैं हरे रंग री बौत चोखी एक बड़ी कुदरती झील समुद्र तळ सू १२ हजार फिट माथै बण्योडी है । पर्वत माथै इसी ठौड़, तम्बू लगायो जठै सूं इण रो निजारो बिना रुकावट रै देख्यो जा सकै । इण झील मैं पाणी रा सरप भी रैवे । कैवा है कै जिण जातर्‌या नै झील रै सरप रूपी शेषनाग रा दर्शन हुवै बां नै अनन्त पुन्य लाभ हुवै । तम्बू माय विश्राम तांई लेट्या ही हा कै एक साथी जोर सू हाका करण लाग्यो 'बो शेषनाग जा है शेषनाग जा है' म्हे सगळा बारै भाग्या । देख्यो पाणी री सतह माथै एक लम्बी लीक बणातो एक सरप दूर तक जा रयो हो । साधारण घटना हूंते हुवै भी सस्कार वश, कैवा रै मुजीब, सुगन दीखणे सूं घणे हरख रो अनुभव हुयो । शेषनाग झील रै माथै उत्तराद मे खासे ऊंचे डूंगरां री पांच चोट्यां है । उण री कुदरती बनावट इसी है कै वै शेषनाग रै पाच फणां दांई दीखै । इण परवत श्रंखलावां री छाया झील रै निरमळ जळ मे पड़तो बौत फूटरी दीखै अर झील री सुन्दरता नै घणी मात्रा मैं बढा देवै। हिम शिखरां रै बीच घिरयोडी अर केई जाग्या हिम सूं मडित आ झील ही लीदर नदी रो उद्‌गम है । इण रै हिम शीतळ जळ मैं सिनान कर्‌यो । एक'र तो लाग्यो कै माथो अर हाथ पग सै सूना हुग्या पण सिनान रै पछै चढ़ाई री सगळी थकावट दूर होगी ।

शेषनाग पर्वत माथै केई जाग्यां बर्फ जम्योडी ही । जकै री ढ़ळवां सतह पर बौत सम्भळ'र चालणो पड़ेनी तो तिसळ'र झील मैं जा पडणे रो डर रैवे। केई बार अठै तिसळने अर जातर्यां रै डूब जाणे री घटनावां सुणने मे आवै । वातावरण अठै इत्तो शांत अर स्वच्छ अर पहाड़ां रो दृश्य इत्तो मोहक है कै मन अर आंख्या देखतां ही रैवे पण धापै नी । चार बज्यां सिंझ्या रै बाद तो अठै बादळ प्राय: नित ही छायोडा रैवे। छ: बज्यां करीब हल्की बूंदा-बादी भी होई, पण बरसात्यां ओढ'र साथ्यां सागे घूमता रैया। राति मैं भी थोडी विरखा हुई । तम्बू मैं पाणी न आ जावै, इण बात री सुरक्षा खातर लो रा खूंटा सूं तम्बू रै चारुं मेर एक छोटी सी खाई भी बणा दी । फेर भी नमी अर सील रै कारण ओढण बिछावण रा सै कपडा भीगग्या अर ठंड रो भी अनुभव हुयो । लगातार जातरा अर ठंड रै सागे केई दिनां रैणे कारण सरदी सैणे री की अभ्यस्तता बढण लागगी । साथ्यां रै गीत, भजन आद गाणे अर हास परिहास रे वातावरण रै कारण शून्य सूं १३° नीचे तापमान हूणे पर भी सै कोई प्रसन्नता अर उत्साह मूं भर्या इण अपूरव सुन्दर ठाम रो लूठो आणन्द लेता रैया ।

अठै सूं जातरा रो तीसरो चरण सरू हुवै । शेषनाग सू पंचतरणी री दूरी १३ कि. मी. है । थोडी दूर जाणे रै बाद ही महागुनस पहाड री ४ कि. मी. री दोरी चढाई आवै । महागुनस परबत अमरनाथ मारग री सै सूं ऊंची चोटी है। इण री ऊंचाई १४३०० फुट है । आ पहाडी बद्री केदार आद सूं भी बेसी ऊंची है । प्राणवायु री कमी रै कारण चढाई करतां पग-पग माथै सास फूलै । दिल लोहार री धूंकणी दाई चाळण लागै । पण अनूठा सुहावणा निजारा, स्वयभू रे दर्शन री तीव्र इच्छा अर साथ्यां रो सागो आगे बढण री प्रेरणा देवै । इण मारग मैं जाग्या जाग्या दवायां अर चिकित्सा सहायता री व्यवस्था है । बीच में एक ठाम वानजन आवै । मूळ मैं इण रो नाम वायुजन हो । अठै हवा बौत तेज गति सूं बैवे ।

६ कि मी. रै बाद उतार भी सरू हू जावै । पगां नै बौत राहत मिलै। पथरीली भूम माथै लगातार चलणे सू पगथली अर आंगळ्यां अमल आवै। अनेक उतार-चढ़ाव पार करता भैरव परबत रे सारै १२ हजार फुट री ऊंचाई माथै पंचतरणी यानी अमर गंगा री ५ धारावां अठै बौत मंद मधर चाल सूं बैती दीखे । कैवे कै एक बार सदाशिव ताडव न्रत में मस्त हा। न्रत करतां बा रा जटा-जूट ढीला होयग्या जिण सूं गंगा रो प्रवाह पांच धारावां में वै निसरयो 'जकां ने पाप नासणी पचतरणी कैवे।

दोपारे २ बज्या अठै पूगग्या हा। म्हे केई साथी भारी ठण्ड रै बावजूद भी अठै सिनान करयो । कोई आध-पूण घटे ताईं हिम जल में अठ खेल्या करता रैया । अबोध बाळका सो निरमल आनन्द रो आस्वाद मिल्यो । नदी रे सारै ही सपाट जमीं माथै तम्बू लगा'र बोळै समय ताईं नदी रो बहाव अर निसर्ग री अद्‌भुत सुन्दरता रा दर्शन लाभ करता रैया। सिर्झा रै भोजन बाद ठंड बौत बढ़गी ही । तम्बू में बैठ'र एक साथी सूं भजन सुण रैया हा । भजन रो कार्यक्रम कोई ३/४ घटा चालतो रैयो। बीच-बीच में सै मिल'र कोरस रै रूप में अतरे नै उथळावतां भी जाता। वातावरण अर समा इसो बंध्यो कै आसे पासे रै तम्बूआं आळा जातरी भी भेळा हूग्या । बां भी आपणे प्रदेशा रा भजन सुणाया । अत्रै में एक अमरीका रा पत्नी-पति जातरी भी अठै पूगग्या । वै खासी ताळ ताईं भजन रा कैसट भरता रैया अर विभोर हू'र आध्यात्मिक भाव सू संगीत अर जातरा रो आनन्द लेता रैया । रात रै ११ बज्यां पछै भोर री जातरा बेगी सरू करण ताईं सोया, नहीं तो आखी रात ही जागरण में निकळ जातो ।

पूनम री भोरा न भोर उठ'र तैयार हू'र सामान घोड़ा माथै पूठो जातरा खातर सदवा दियो । अब्दुल सम्मद नै जोजपाल में इंतजार करण रो कैयो, क्योंकै अमरनाथ में कोई ठैरण री व्यवस्था नी है । पंचतरणी

सूं अमरनाथ ५ कि मी. दूर है। ओ रास्तो बौत दोरो, संकड़ो अर ढळवों है, पण मन मोवणो भी बौत है। प्रायः सारो रस्तो बर्फ सू ढक्योड़ा पहाड़ां रै बीच चाले। इण में भी दुर्गम चढाई है। करीब साढो तीन मील चालणे पछै अमर गंगा रै निरमल तेज प्रवाह रा नजदीक सू दर्शन हुवै। आगे थोडी दूर माथै मोड़ मुड़ता ई दूर खासी ऊंचाई माथै अमरनाथ गुफा रा दर्शन हुवै। उत्साहित हू'र यात्री अमरनाथ बाबा रो जयकारो अर 'ओ नमो शिवाय' रो घोष ऊंचे कण्ठां सू करण लागे। पवित्र गुफा रै नीचे बैती पावन अमर गंगा में सिनान कर जातरी ऊपर दर्शन तांई जावै। यूं घणखरा जातरी अठै सरधा भाव सू ई जावै पण आज काल अठै चोरी जारी री छुटपुट वारदातां भी हूण लागगी। बीकानेर से एक दूजे जातरी दल रै एक सदस्य री घड़ी अर कपड़ा सिनान रै बाद नही मिल्या। कोई बानै उठा लेग्यो। सुण'र दिल में विषाद हुयो। लाग्यो कै प्रकृति री निर्भरता जठै मानखे नै गुण सम्पन्नता देवे, ठीक ईं रे विपरीत मानव माथै विश्वास विपन्नता दारिद्र अर ओछेपण नैं भी प्रस्तुत करे। प्रकृति मानखे री वृति अर स्वभाव नै जठै उदात्त बणा'र शांति अर सुख रो वातावरण बणावै बठै ई मानव रै स्वार्थी आचरण सू मानव मै दुःख अर अशांति रो अनुभव हुवै। पण आ तो पेशेवर अपराध्या री बात है, नही तो इण क्षेत्र रो नैसर्गिक वातावरण तो विकृति नै भी सस्कृति में बदलने री छिमता राखे। ईं कारण ई तो हिमालय रे पर्वतीय क्षेत्र रा निवास्यां में अबोधता, सरलता सहजता अर ताजगी देखणे मे आवै।

अमरनाथ गुफा समुद्र तळ सूं १२७२९ फुट ऊआई माथै कुदरती रूप सूं बण्योड़ी है। गुफा करीब ६० फुट लम्बी, ३० फुट चौडी अर भूमि सूं २० गुट ऊंची है। इण पर चढण तांई पगोथियां रो दुतरफा मारग बणा दियो है। आसे-पासे अर बीच मे लोहे रा रेलिंग लगायोडा है। अंतिम सीढी एक बड़े चबूतरे तांई है। मेळे रे समय अठै भारी मात्रा मे भीड़ हू जावै। कश्मीर सरकार री पुलिस व्यावस्था भीड नियंत्रण अर मारग व्यवस्था तांई हुवै पण कोई स्वयसेवी संस्था रा सहयोगी बंधु अठै नी पूगे।

जदी पूग सकता तो दर्शनां में सुविधा हु जांतो। नहीं तो भीड़ म्हांके में दर्शनां में तावळतोड़ जल्दबाजी अर धक्कमधक्का चालता रैवे। गुफा री छात सूं जाग्यां जाग्यां पाणी री बूंदां टपकती रैवे, पण एक खास स्थान माथै हिम रो शिवलिंग स्वतः बणै। औ शिवलिंग १/२ फुट सूं ६ फुट तांई रो हुवै। नैडे दो और लिंग बणै जकां नै पार्वती पीठ अर गणेश पीठ नाम सूं बतळावै। अचरज री बात है कि गुफा रै बारै मीलां तांई कैंसूनी जाग्यां कच्ची बरफ ही दीसै पण अमरनाथ रो स्वंयभू मूर्त स्वरूप पक्की बरफ रो बण्योड़ो हुवै। कैवत मैं तो आवै कै ओ लिंग अमावस नै समाप्त हू जावै अर ऐकम सूं फेर निर्मित हूण लागै। पण बठै रा लोगां अर पुजारयां सूं बात पूछणै सूं आ सचाई सामै आई कै औ हिम लिंग कदै भी पूर्णतः लुप्त नीं हुवै। हां अळवत सरदी कम हुणै पर आकार छोटो भलांई रैवे। कश्मीर रा बाशिंदा ईं नै पूर्ण लुप्त कदै नी देख्यो।

एकांत, शांत जाग्यां माथै पैलमपैल कुण ऋषि मुनि अठै पूंग'र दोरी वियावन पहाड़्यां रै बीच इन विलक्षण प्राकृतिक अजूबे सूं युक्त स्वयंभू नै सोध्यो हो, सदाशिव ही जाणे। पण आ बात सदेह सूं परयां है कै प्रक्रिति रो विराट मिंदर हिमाळय सत्य, सुन्दर अर शिव रो अनेक अरथां अर स्तरां माथै उद्घोष करतो परतख दीखै है। अठै रा आभै स्पर्श करता डूंगरा री असीम ऊंचायां, धवळ हिम नद्यां रो उजळो प्रवाह, सुन्दर घाट्यां रो आकर्षक निजारो, फूलां अर विरखां री मोवणी विविधता अर अबोध पशु पक्षियां रो स्वतन्त्र विचरणो मानव रै मन में गैरे अरथां में आध्यात्म बोध अर असीम शांति रा पवित्र भाव उत्पन्न करणे मे समर्थ है। औ ई कारण है कै प्राचीन ऋषि मुनियां सूं लेरे आधुनिक शैलाणी तांई इण रो नाम मात्र सुण'र ई आल्हादित अर उत्साहित हो जावै है। हिमाळय रै अतुल सौंदर्य आळै अनूठा धामां मैं प्रमुख अमरनाथ रा दर्शनां सूं घणी तृप्ति अर सतोस रो अनुभव हुयो।

इण गुफा री एक विशेषता है कै अठै सदियां सू कबूतरां रो एक जोड़ो हमेशा देखणे में आवै। कबूतर गरम स्थानां रो पक्षी है। भीषम ठंड वाळै ठाम अर सून्य सूं नीचे तापमान मैं कबूतरां री मोजूदगी विलक्षण अचरज री बात है। धार्मिक विश्वास औ है कै एक बार महादेव सिभ्या समय नृत्य कर रैया हा। बा रा गण आपसी ईर्षा रै कारण 'कुरु कुरु' शब्दा रो उच्चारण करण लाग्या। शिव बाने कैयो कै थे दीर्घकाल तांई औ ही रटता रैसो। उण दिन सूं ऐ गण कबूतर होग्या। पण शिव भक्त हुणे सूं इणा गण रूपी कबूतरां नैं पावन मानीजै अर आ रा दर्शन पाप-कलेश हरण आळा गिणीजै। सौभाग्य री बात आ हुई कै इण मां सूं एक कबूतर नैं म्हे सै साथी गुफा मैं उडतो अर विचरण करतो देख्यो। कथा प्रतीकात्मक भी हुए तो आ बात तो साफ है कै ऊंचे गुफा आळा भगवद् स्वरूप पात्रा के साथ रैणे वाळा सामान्य पात्र भी सम्पर्क भाव रै कारण आदर जोग अर पूज्य बण जावै है।

सुबह १० बज्या तांई दर्शन आद कर पूठा फिर्‌या। सिंझा ताई ठेठ पहलगांव पूंचग्या। मार्ग मैं जोजपाल में घोडेवालो भी मिलग्यो हो। पहलगांव सूं ३–४ कि. मी पैला सूं ई सरधालु भगत अर सेवाभावी संस्थावा अमरनाथ रे जातर्‌यां रो सम्मान करता, वा रा चरण स्पर्श करता, बाने माळावां पराता, चाय नास्तो अर भोजन कराता जाग्यां जाग्या खड्या मिल्या। जातर्‌यां रो औ सम्मान मूळ मैं स्वयम् सदाशिव री सरधा रो ही प्रतीक है। जका व्यक्ति इण कष्ट साधना आळी जातरा मैं नी जा सकै, जातर्‌यां री सेवा कर ही आपने कृतार्थ मान लेवै। जातरी भी इत्ता थक्योड़ा हुवै कै इणा रै आतिथ्य सूं थकावट अर भूख दोन्यू सू निवारण पावै अर निस्वार्थ विनीत सेवा सूं परभावित हुवै। वास्तव मैं सम्पूर्ण जातरा इत्ती रोचक, साहसिक अर प्रेरक है कै इणनै कदेई भूल भी सकां।

□

शांति अर प्रेम रो नगर शिमलो

इण दिनां मैं हिमाचल री राजधानी अर अंग्रेजां रै वखत संपूर्ण भारत री गरम्यां री राजधानी शिमलो शिवालिक री पाड्यां रै उत्तर मैं हिमाळय रो सोवणो, आछो ऊंचे डूंगरां अर सघन हरियावळ आळो मन मोवणो ठाम है। यूं तो सगळो हिमाचल सदाबहार बरफ सूं मंढ्योड़ी पाड्यां, हरया-भरया घणा आरणा, सोवणी झीलां, ऊंच ई सूं पड़तां चांदी छिटकावतां ऊजळा झरणां अर गैरा आडा पाड़ी घाटा रै कारणै सैलान्यां रै ळूठै आक्रसण रो कारण है। पण इण मैं भी आपरी प्राकृतिक शोभा अर सैर री सगळी आधुनिक सुविधावां रा आछा होटल, सै तरियां सामान री बड़ी दुकानां, क्लब, खेल कूद अर स्केटिंग रा रिंज, सैर करण अर देखण री जाग्यां आद रै कारण शिमले ने पर्यटकां रो सपनो ही कैवे। हिमाळय री गोदी मे इण रे उत्तरी पश्चिम भाग मैं थित इण फूटरे पर्वतीय नगर री सैर रै कार्यक्रम सूं मन मैं घणी प्रसन्नता हुई।

२३ मई १९८१ नैं बीकानेर सूं सिंझ्या रवाना हु'र भटिंडा अम्बाला हुंतां ता. २४ नैं चंडीगढ़ पुग्या। चंडीगढ़ रो स्टेशन सैर सूं ६ कि. मी. दूर है। यूथ हास्टल मे पैला सू जाग्यां रो आरक्षण हो। सिंझ्या ६ बज्यां बठै पूग ग्या हा। सामान आद रै राख्यां पछै सिनान, भोजन कर्यो

अर दूजै दिन घूमण-फिरण रो आयोजन राख्यो ।

चंडीगढ दिल्ली सूं कोई २१८ कि. मी. दूर शिवालिक पाड़ां री ढळाण माथै बस्योड़ो, स्थापत्य री दीठ सूं, अति आधुनिक नगर है । भारत रे बंटवारे पछै लाहौर रै पाकिस्तान मैं चले जाणे सूं पंजाब री राजधानी जोगो कोई नगर नी रैयो । आखर इण नुंई जाग्यां नैं चुण'र अठै नुवैं सिरे सूं आछो नगर बसावण री बात तै हुई । अम्बाला जिले री खरड तहसील मैं पचकुला गांव रै नेडे पाडां री पगथळी मैं हरी भरी भूम मैं नगर बसावण री सैं सहुलियतां मौजूद ही । अमरीका रै अलवर्ट मेयर री देख-रेख मे इण री योजना बणी । दुनियां रै मशहूर स्थापत्यकार ला कारबुजिये सन् १९५२ मैं नगर निर्माण रो कार्य सरू कर्‌यो । १ हजार एकड जमीन नैं चार भागां मैं बांट'र भवन बणावणा प्रारम्भ हुया । इण क्षेत्र मैं चंडी रो एक पुराणो अर मानीतो मन्दिर हुणै कारण नगर रो नाम चंडीगढ़ पड्‌यो ।

आगले दिन सब सूं पैलां सचिवालय देखण रो कार्यक्रम बणायो । सचिवालय नगर रै उत्तरी भाग मैं है । बस रो मारग ईं तरां रो है कै केवल दो बसावट सैंक्टरां मैं बंट्योड़ो है, हर सैंक्टर अपणे आप मैं जरुरत री दीठ सूं पूरो है । सड़कां अर गळ्‌या सैंक्टर रै नाम सूं ई जाणीजै, बां रो कोई अलगदो नाम नी हुवै । सैंक्टर रै मांयलां हिस्सां मैं घर है, बारला हिस्सा मैं सड़कां । बणज ब्योपार १७ नं. सैंक्टर मैं हुवै । ओ सैंक्टर कलकता रै चौरंगी अर बम्बई रै कालबादेवी दांई है । सगळै सैंक्टरां मैं हर्‌या बगीचा री व्यवस्था है । कोई मकान दो कमरा सूं कम नहीं है । हवा, बिजली पाणी रो चोखो इंतजाम है ही । बणगत री दीठ सूं सैं इमारतां नूवीं-नूवीं आकार प्रकार री सुंदर डिजाइनां आळी है । एक सैंक्टर रा भवन डिजाइन मैं दूजै सैंक्टर सूं अळगदा है । शिक्षा अर मनोरजन रो इंतजाम भी सैं सैंक्टरां मैं पूरी तरा सूं मौजूद है ।

विधान सभा भवन सैक्टर न १ मैं है। आ शहर रै उत्तराद पासै बारले कालै बण्योडी अति आधुनिक आ सुन्दर इमारत है। सामले पासै सगळै भवन मैं आडे कांच री हजारां बिडक्यां इण री शोभा नै और बढ देवै। भवन पीळै अर गहरे भूरे रंग रै मेळ सूं सांतरो लागै। इण भवन मैं एक हिस्से मे पंजाब सरकार दा दफ्तर है तो दूजे कानी हरियाणा रा राजकीय दफ्तर लागै। आधुनिक साज सज्जा मैं इण री टक्कर रो स्यात् ही कोई दूजो सचिवालय आज देश मैं हुसी। उच्च न्यायालय की सुन्दर इमारत भी इण सूं थोडी ई दूर इण सैक्टर मैं ई है। सुखना नाम रो खासी बडी अर फूटरी झील भी अठैई है। इण झील मार्थ सिंझ्यां रै बखत भ्रमणार्थियां री खासी भीड़ रैवे। एक पासी बड़ो बगीचो है जठै गरमी रै दिनां में तो मेळो सो मण्ड्यो रैवे। झील मे नाव चलाणै री व्यवस्था भी है। कदै कदै नावां री दौड़ आद रा आयोजन भी अठै हुवै।

चंडीगढ़ में 'गुलाब बाग' नाम रो एक अनूठो बगीचो है, जठै खाली गुलाब रै फूलां रा ई पौधा है। गुलाबां री सैकड़ जात्यां रा रंग-बिरंगा फूल अठै खिल्या रैवे। गुलाबी, लाल, पीला, सफेद अर बैंगणी गुलाब तो कई दूजी जाग्या भी देखण मैं आवै पण अठै काळा गुलाब भी लाग्योड़ा है। देख-रेख रो प्रबंध चोखो हूणे सूं औ बगीचो खुशबू अर रंगां सूं सदा महकतो रैवे। चंडीगढ आवणियां जातरूयां नै अठै जरुर पूगणो चाहिजै।

चंडीगढ़ मैं गुलाब बाग रै कनै ई 'आर्ट गैलरी' नाम रो बड़ो आछो संग्रहालय है, जकै में देश रै परसिध मूर्तिकारां अर चित्रकारां री सांतरी कला क्रितियां प्रदर्शित है। अठै री वास्तु कला री रचनावां मैं मिट्टी, काठ, धातु, लो अर कांच सूं बणी नायाब चीजां शामिल है। चित्रां में रामकुमार, मकबूल फिदा हुसैन, अमृता शेरगिल, नंदलाल बोस, अवनिंद्र ठाकुरजिस्सा अंतर्राष्ट्रिय ख्यात रे चित्रकारां री रचनावां रो अमोल संग्रह

है। इण प्राणवान चित्रां रा रंग, आकृत्यां, भाव आद वेजोड़ है। केई चित्रां रा शीर्षक इत्ता आकर्षक है कै बै एके सागै अनेक भाव व्यंजना करता सा लागै, इण कारण अत्यन्त सार्थक कैया जा सकै। दिल्ली मैं इंडिया गेट रै कनै परसिध आर्ट गैलरी है चंडीगढ रो औ सग्रहालय भी उण री जोड रो ई कैयो जा सकै, कम नी है। सिंझ्या पड़ जाणे सूं पाछा आ'र यूथ हास्टल मैं विसराम कर्यो।

आगले दिन २६ ता० नै चडीगढ़ रो बस स्टेशन देखण नै गया। इण बस स्टेशन माथै रेलगाडी रै बड़े-बड़े जंक्शना रै दांई अपार भीड़ रैवे। रोज चार पांच सौ बसां अठै आती जांती हूसी। करीब २० प्लेटफार्म अलग-अलग दिसावां मैं बसां जावण आवण तांई अठै बण्योड़ा है। जातर्‌यां री सुविधा अर मारग दरसन ताईं जाग्यां-जाग्यां लाउडस्पीकरां सूं सूचनावां रो बराबर प्रसारण हूतो रैवे। स्टेशन री इमारत दो मंजली है। सै प्लेटफारमां कनै पाणी री व्यवस्था, चाय पान रा स्टाल, पुस्तकां अर अखबारां रा स्टाल अर फल, मेवां री दूकानां है। भीड रै बावजूद कोई असुविधा अर धक्कमपेल अठै नी देखां। इत्तो बड़ो, चोखो अर सुविधा आळो बस स्टेशन पैल्यां कोई और नी देख्यो हो। इण नैं देखणो म्हारे खातर एक नूवो अनुभव हो। मन बड़ो प्रसन्न हुयो।

बस अड्डे नै देख्यां पछै नेकीराम गार्डन देखणने गया। औ बगीचो अर संग्रहालय भी आपरे तरीके रो भव्य अर अनूठो देश भर मैं एक न्यारे ही ठाम है। एकले आदमी री साधना अर दूर दृष्टि सूं कित्तो बड़ो, विलक्षण अर उपयोगी काम सम्भव हू सकै, इण नैं देख्यां ई पतो लागै। बेकार अर फालतू समझी जाणे आळी बोतलां, उणा रा ढक्कन, चीणी मिट्टी री ठीकर्‌यां, लो अर कांच रा मांग्या टूट्या टुकड़ा नै जोड़ जोड़'र पशु पक्षी वाहन आद रा अनूठा वास्तु प्रकार कल्पना रै अनूठे जोग सूं मनोरंजन अर शिक्षा रा चोखा आधार बणग्या है। टाबर तो अठै आ'र

कौशल्या अर भज्जर नद्यां रै संगम माथै औ गांव बसोड़ो है। लोक मानता है कै आपरै बनवास काल मैं पाण्डव अठै ठहरया हा, जिण वजह सूं इण रो नाम पंचपुर पड्यो। बाद मैं बिगड़'र पिंजौर बजण लागग्यो। सन १२५४ मैं दिल्ली रै मुसलमान बादशाह नासिरुद्दीन मुहम्मद अठै हमलो बोल्यो अर प्राचीन भवनां नैं भांग तोड दिया। बाद मैं औरंगजेब रै रिस्ते मैं एक भाई फियाद खा इण री कुदरती सोभा देख'र अठै बाग बणावणो सरु कर्यो। १६७५ ई० मैं सिरमौर रै हिन्दू राचा रो इण खेतर माथै कब्जो होग्यो। १७६४ ई० मै पटियाला रियासत इण माथै आपरो अधिकार कर लियो। आज कल औ हरियाणा प्रांत रो भाग है। प्राकृतिक सोभा अर मानव निर्मित सज्या सवर्या बागां रै कारण पिंजौर अत्यन्त दर्शनीय अर आकर्सक है। सारे भारत रा सैलाणी अठै ढूकै। चड़ीगढ़ अर शिमले रै बीच हूणे कारण टूरिस्टा रो मेळो अठै मण्ड्यो रैवे। रात दस बज्यां तांई इण ठाम री रोशन्यां अर बां रे उजाळै मैं मुळकता झरणा रै निजारे रो आनन्द लेतां दस बज्या बाद पाछा बस सूं होस्टल पूग्या।

२७ तारीख रै दिन यात्रा रो दूजो चरण सरू हुयो। भोर मैं ५ बज्यां ही तैयार हो'र पूणी सात रै नैड़े कालका रेलवे स्टेषन आग्या। अठै सूं ८ बज्यां री गाडी सूं शिमलो जाणो हो। कालका उत्तरी रेल्वे रो इस्टेशन है। दिल्ली सूं कालका बड़ी लाइन सूं जुड़योड़ो है। पण आगे री यात्रा संकड़े रेल मार्ग, जकै नैं नैरो गेज कैवे, सूं करणी पड़ै। गाड़ी रा डिब्बा अर सीटा छोटी हुवै। एक डिब्बे मे २०–२५ सूं बेसी आदम्यां री री जागा नी हुवै। कालको सूं शिमले री दूरी ९० कि. मी. है, पण ऊंची पाड़ी चढ़ाई रै कारण इणमे करीब ६ घण्टा लाग जावै। मारग ऊंचे पाड़ां गैरी घाट्यां अर पाड़ी गुफावां सूं निसरणे री वजह सूं प्राकृतिक दृश्यां रा इत्ता आछा पल-छण बदळता चित्र आंख्या सामैं मांडै कै यात्री हरख रा हबोळा लेण लागैं। इण मारग मैं ११० रै करीब सुरंगा है। जद इणा मैं सूं गाड़ी बावै तो गुफा टाबरा अर मोटियारां री सीट्यां अर

किलकार्‌यां सूं गूंजण लागै। गुफा मांकर निसरनी बेळा गाड़ी में ताः जागाणी पड़ै, नी तो भंधारे मैं हाथ नैं हाथ नी सूझै। चढ़ाई माथै गाड़ी री गति कठैई-कठैई १०-१५ कि मी. प्रति घण्टा ताई कम रैवे। केई मोटियार तो चालती गड़ी मैं चढण उतरण री क्रिड़ा रो भरपूरआनन्द लेवै। पाडी मोडां पर रेल री लाइनां आमे सामे दीखे। केई जाग्यां दो तीन रेल लाइना चूडी उतार पट्या मैं निजर आवैं। करबी रै घण्टा री रेल यात्रा रै बाद सोलन नाम रो कस्बो आवैं। सोलन कालका शिमला मारग रै अधबीच में है। ऊंचाई माथै थित अर घणो बनस्पति हुणे कारण आ जाग्यां स्वास्थवर्धक है केई सैलाणी अठै भी रुकै। आगे कण्डाघाट, सोगी आद हूंता तारादेवी स्टेशन पूग्या। तारादेवी शिमला सूं ११ कि मी. दूर है। अठै स्टेशन सूं १ फलगि दूर आगूणे पासै छोटी पाडी माथै भारत स्काउट्स रो हिमाचल अर हरियाणा राज्यां रे प्रशिक्षण केन्द्र रा मुडार प्रभारी सरदार श्री करतार सिंह म्हाने लेवण नैं स्टेशन पूग्या हा। केन्द्र रा अधिकारी श्री आर. पी शर्मा रै आदेश सूं म्हारे वास्ते तीन तम्बू लगा राख्या हा। दो में आवास री व्यवस्था करी एक तम्बू स्नानादि खातर राख्यो। पाडां री सघन हरियावळ मैं ठैरण रो घणो आनन्द रैयो।

आगले दिन २८ तारीख नैं भोर मैं वेगा उठ'र, जल्दी त्यार हु'र ७ बज्यां दिनुगे सड़क मारग सूं पैदल शिमले ताई रवाना हुया। स्काउट केन्द्र रै उत्तर पिछम सूं सड़क आंटी टेढ़ी अर ऊंची नीची केई घूम खाती चालै। ओ संपूळो रस्तो इण खेतर रो चोखो कुदरती आरण है। एके कानी ऊंचा डूंगर दूजै कानी ढळवां आडा घाट। एक इंच जमीन भी हरयावळ सूं खाली नी दीसै। पाडी ढालां माथै फर, देवदार, सदाबहार अर बलूत रा पत्तां सूं लद्या अर फूल मैं झूमता बिरखा री वोळायत है। मारग में कठैई कठैई ऊंची जाग्या खपरैल री पाडी छात आळा मोटा छोटा सोवणा एकल दूकल मकान आपणी छाण्यां ताई बस्योड़ा है। इण

बितंर में गाय अर बकर्‌यां रा एवड़ भी चराई खातर निसर्‌तां मारग मैं मिलै। ठंडे वखत अर खुशनुमा सोवणे निजारे रै कारण करीब ढाई-तीन घण्टा मैं शिमला रै नेड़े पूगग्या। नगर सूं खासी पैलां ई टीन अर लकडी री छात आळी इमारतां धीरे-धीरे सरु हूण लागगी। अठै री घणखरी इमारता रो रंग लाल हुवै। १० वज्यां सिसल होटल रै आगे सूं निकळता शिमले री माल रोड माथै पूग्या। माल रोड अठै रो सैं सूं चोखा आधुनिक शैली रो फूटरो अर आकरसक बजार है। थोडो सुस्ताणे अर थाक मिटाणे वास्ते सहर रे मुख्य बजार मे एक आछै होटल वालजीज' मे चाय पीवण पूग्या। एक कप चाय अर एक एक पेस्टरी आदमी दीठ ली ही। भुजिया, बिस्कुट आपणा साथै हा। पर्ण चुकारे रै टैम जद ५५/- रुपिया दिया तो मैंगाई री अहसास हुयो।

घूमता हुया स्कैंडल पाइट पूगा। अठै चोडो तिरायो है। एक सड़क माल कानी, दूजी गाधी मैदान अर लकड़ बाजार कानी अर तीसरी बस्ती कानी जावै। अठै रो चौक गपशप रो केन्द्र है। सैलाण्यां री भीड़ अठै चारू पौर मडती दीसै। नगर रा लोग भी सैर तांई अठै पूगैं। अठै सूं गांधी मैदान करीब १ फर्लांग हूसी। अठै री ऊची पहाड़ी सूं आस पास रै घाटा, इमारतां अर प्राक्रतिक दश्यां रो लूंठो निजारो दीसे। मुनसपल्टी री तरफ सूं पाड रे सिरे पर लो रा रेलिंग लगायोड़ा है अर आराम अर हवाखोरी तांई लकडी री बैंचां बिछायोड़ी है। ठंडी पून हरदम अठै बैती रैवे। मई रो महिनो हूणे उपरांत भी गरमी नी मालूम हुई। अठै री कुदरती सीतळ अर स्वास्थवर्धक हवा रो मुकाबलो कूलर का एअर कंडीसनर री हवा भी कर सकै क्या? गांधी मैदान मैं ई शिमले री बडी राजनैतिक सभावां रो आयोजन हुवै। अठै राष्ट्र पिता गांधी री मूरती ऊंचे चबूतरे माथै आदम कद बरंपयोड़ी हैं। इण जाग्यां मोळांई मैं एक छंप्योड़ी बारादरी भी बणायोडी है जिण री सिमेन्ट सूं बणी बैंचा माथै लोग बिसराम करता अर हथाई करता रैवे।

ाड़ाई री तूफानी पृष्ट भूमि मैं हुई ही। अंग्रेज अर गुरखां रै बीच १८१६ री लड़ाई मैं इण रो पतो लाग्यो हो। श्यामला देवी रो ठाम हूणे सूं उण ैरनां रो स्यामला नाम सूं ई जाणीजतो। कंवे के पैसम पैल तो अंग्रेज अधिकारी अठै आ'र तम्बुआ मैं ठंर्या करता। १८२२ मैं मेजर कैंडी नाम रे ौजी अफसर आपरो ठावो आवास अठै बणवायो। बाद मैं भारत रै वाइस राय रै ठेरण रा भवन अर दफ्तर भी बण्या। वाइसराय साल मैं ६ महिना अठै रैंवतो। गरम्यां में केन्द्र सरकार रा दफ्तर भी राजधानी दांईं अठै लागता। १९०४ में कालका शिमला रेल मारग बण्वा पछै आवाजावी री घणी सुविधा हूगी। आज तो तर-तर बढ़ती सुविधावां उपलब्ध हूणे री वजह सूं पाडी सैरगाहां मैं इण रो शीर्ष स्थान हूयग्यो है।

यू तो मई मैं भी शिमले रो मौसम ठंडो अर खुशगवार हो, पण बताइजै कै इण रो रंग मौसम मुजीब बदळ्तो रैवे। हेमंत अठै री सैं सूं चोखी मौसम गिणीजैं। जद हरियाबळ अर बरफ दोम्यू रा मोवणा द्रस्यां नै देख्यो जा सकै। बसंत मैं सुरंगा पुष्पां री फुलवाडी रो निजारो भी धाट नी हूवै। बसंत री हवा मैं अठै घणी ताजगी अर सोरम रैवे। दिन ठीका-ठीक गरम अर ऊजळा तो रात्यां शांत, सीतळ अर सुखद लागै। बसंत रै दिनां मैं तो आपै लागण आळा कुदरती जंगळी फूलां री बढ़वार भी देखण जोग हूवै। मानसून मैं बादळबाई रा छिन पळ बदळता रूप दीसै। अठै जद पाणी पड़ै तो मूसलाधार। प्रकृति रौ रूद्र रूप बीज री कड़कड़ाट मैं परगट हुवै। कलाकारां अर कवियां नैं इण सू किसी प्रेरणा मिलै कोई सवेदना रो घणी भावुक व्यक्ति ही बता सकै। विरखा पछै तो आ नगरी अर इण रै आसे-पासे री सैमूळी भूम जाणै हर्यो ओढणो ओढ'र लाजवंती नार री सी मुळण बांटती बिखेरती लागै।

दोपार बाद शिमले रै बिख्यात मिंदर जाकू रा दर्शन तांईं गया। जाकू मैं हनुमानजी रो मिंदर है। औ मिंदर २४५५ फिट री ऊंचाई माथै

है। इण री चढ़ाई माल सूं सरू हुवै। चढ़ाई २ कि. मी. हुसी, ग
घणी खड़ी अर दोरी है। म्हारी भो मैं भी पूण घण्टो चढ़ण मैं लाग ग्यो
अर घणी हांफणी सूं सांस फूलण लागी। बीच मैं केई जाग्यां सुस्तावण
खातर म्हाने बैठणो पड़्यो। पण ऊपर पूगां पछै पूरो शिमलो नगर अर
खासी दूर ताई रा फूटरा कुदरती निजारां ने देख'र शांति अर आणंद
मिळ्यो। हनुमानजी रा दर्शन कर्‌या। मूर्ति साधारण पण जूणी हैं। इणरै
पछै पूठा उतर'र माल माथै आया। अठै बस पकड़'र तारादेवी ६ बज्यां
तक पूगग्या। दिन भर री थकान ही। भोजन उपरांत बैगा ही सोग्या।

२६ मई नै शिमला रै नेड़े-कनै रै देखण जोग ठामा रो कार्यक्रम
राख्यो। तड़कै बैगा तैयार हुया। ८ बज्यां तांई नाश्ते बाद सूं निमट'र
समर हिल तांई बस सूं रवाना हुआ। समर हिल तारादेवी अर शिमले रै
बीच रेल स्टेशन भी है। शिमले सूं आ जाग्यां करीब अधबीच में है।
औ ठाम ऊंचाई माथै है। समुद्र तळ सूं १९८३ मी. ऊंचो हुणे कारण खासी
ठंडक अठै रैवे। वनस्पती तो चारूं मेर दरियाव दाई हबोळा लेती दीसै।
पवन रो वेग वेसो हुणे सूं विरख री टाण्यां लूम्बा सरीसा हींडा खांती
दीसै। ८.३० बज्यां ही अठै पूग ग्या हा। आसे-पासे री पाड़्या मैं सैर
करता अर कुदरती फुलवाड़ी रो आणंद खासी देर तक लेता रैया। १०
बज्यां स्टेशन रै पूरब कानी आंटो-टेढी पाड़ी पगडांडी रै मारग सूं
'चिडविक प्रपात' रै नाम सूं मशहूर इण क्षेत्र रै बेमिसाल फूटरे झरने नै
देखण नै बईर हुया।

आगे रो करीब ४/५ किलो मीटर रो आखो रस्तो झाड़-झखाड़
मां'कर नीसरे अर चूड़ी उतार नीचे ई नीचे जांतो रैवे। उतराई मैं
तिसळने रो डर तो रैवे पण जोर पंजा माथै राख'र करीब-करीब दौड़ती
चाल सूं बैहणो पड़ै। आध-पूण घण्टा मैं ई ठेठ नीचे पूगग्या। झरनो ६७
मीटर ऊंचे सूं पड़ै। एकदम धौळो निरमळ जळ दूधिया झागा री रंगत मैं

बदळ जावै। बारम्बर मिटता बणता भाग इण सुंरगी ऐकांत अर शांत ज्जाग्यां मैं जीवन री गतिशीलता नै दरसांवती लागै। बारली प्रकृति री अणेक रुपता अर आत्मिक सत्ता री गैराई दोन्यू रो अठै परतख अनुभव हुवै। इसा ठामां मैं पूग'र केई ताण तो जीवन जगत रे अभाव-अभियोगां नै आदमी कतांई भूल जावै। सरलता अर निश्छळता रो सहज अससास मन मायँ नै परभावित करै। डेढ़-दो घंटा इण सुरंगे शांत क्षेत्र रा दर्शन लाभ कर दो बज्यां पूठा समर हिल पूगग्या। बठै सूं शिमला पूंच'र बस सूं बरफ रै खेला खातर आखे संसार मैं परसिध कुफरी तांई रवाना हुया।

शिमला सूं कुफरी १६ कि. मी. दूर है। आधे घंटे मैं ई कुफरी पूंचग्या। कुफरी ऊँची पाडी जाग्यां है। समुद्र तळ सूं २५०१ मी. ऊपर। अठै केई किलो मीटर तांई सपाट मैदान है। विरख भी शिमले रै बूजे ठामां नाव सूं कम है। हर साल दिसम्बर रै लारले दिनां मैं अठै बरफ पड़ण लाग जावै। जकै री वजह सूं जनवरी का फरवरी मैं शीतकाल रै 'स्कींग' 'स्लैजिंग' आद खेलां रो अन्तराष्ट्रीय आयोजन अठै हुवै। देस-विदेस रा नामी खिलाड़ी अठै ढूकै। उण दिनां तो आ जाग्यां ओळखाण मैं ई नी आवै, इसो अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप अर भाई चारे रो माहौळ अठै बणै। पण म्हे तो मई रै दिनां अठै पूग्या हा जद कै औ ठाम सूनो अर उजाड़ सो लागे हो। मन मैं आ तसल्ली कर'र ई संतोप कर्‌यो कै कम सूं कम देखण तांई तो जाग्यां अछूती नी छोडी। सिझा ६.३० बज्यां तांई पाछा डेरे पूगग्या। ३० सित. नै दिनुगै ८ री गाड़ी सूं बीकानेर तांई पूठा रवाना हुया। इत्ता बरसा पछै ओजूं तांई भी लाखूं लोगां रै स्थायी आवास आळे इण नगर री प्राकृतिक सुंदरता, साफ-सफाई, दर्शनीय ठामां रा निजारा अर आधुनिक सुविधावां यादां रै परदै मायँ है ज्यूं रै ज्यूं मण्ड्योड़ी दीसती रंवे।

●

मुगतधाम हरद्वार अर पाडां री राणी मंसूरी

भारत री संस्क्रति मैं गंगा अर इण रे पावन तट माथै उत्तर मैं बस्योड़ो हरद्वार रो घणो महत्व है। पुराणा री कथा रै मुजीब समुन्दर मंथणे सूं जको इमरत मिल्यो बीने राकसां सूं बचावण खातर इमरत कुम्भ ले'र इंदर रो बेटो जयंत दोड़्यो। बीच-बीच मैं विसांई खाण तांई जिण च्यार ठामां मैं कुम्भ नैं राख्यो, हरद्वार उणा मैं एक पवित्र धाम है। इमरत री थोड़ी छांटां अठै छळक जाणे सूं औ ठाम प्रथ्वी मैं पूजनीय होग्यो। इण वास्ते ई हर १२ साल बाद अठै कुम्भ रो पावन मेळो भरीजै। मृतक संस्कारां खातर भी इण नै पवित्र मानीजै। परिवार रै केई व्यक्ति री मौत पछै उण रो तरपण, पिंडदान अर अस्थ प्रवाह भी अठै ई करीजै। पर्यटकां खातर भी हरद्वार मनोरम अर देखण जोग जाग्या है। शिवालिक री सुंदर पाड़्यां रा पग धोवती गंगा अठै पैली बार समतळ भूम माथै ऊतरै। भारत रै विशाल भाग मैं वैवती अर रिधि-सिद्धि, धन-धान्य सूं देश नै सम्पन्न बणाती गंगा बंगाल मैं जा'र असीम समुन्दर मैं मिल जावै। इसै पावन तीरथ रै दर्शनां री साध घणे दिनां सूं मन मैं ही। सन् १६८० रै मई माह री ८ तारीख नै च्यार साथ्यां सागै इण धाम री जातरा रो कार्यक्रम बणायो।

सिंझ्यां ७ बज्यां री गाड़ी सूं बीकानेर सूं दिल्ली रवाना हुया।

भोर में ७ बज्यां दिल्ली पूगग्या । अन्तर्राष्ट्रीय बस अड्डे सूं हरद्वार री ८ बजी आळी बस पकड़ी । मेरठ, मुजफ्फर नगर, रुड़की रै रस्ते २.३० बज्यां हरद्वार पूगग्या । दिल्ली सूं हरद्वार री केई रेल गाड्यां भी चाले, पण ग्रां में समय बेसी लागै । रिक्शो पकड़'र बीकानेर री धर्मशाळा पूग्या । अठे रा व्यवस्थापक रामदेवजी पेलां रा जाणकार हा । जांता ई सड़क ऊपरलै कमरे री व्यवस्था होयगी । सामान मेल'र दोपहर रो भोजन कनै ई ढाबे में कर्‌यो । पूठा आ'र थोड़ी ताळ विसराम कर चार बज्यां गंगा मैया रा दरशन करण सांई हर री पैड़ी कानी रवाना हुया ।

धर्मशाळ सूं हर री पैड़ी कोई आधा फर्लांग हुसी । स्टेशन सूं उत्तर दिशा में जको सड़क जावे उण माथै ही १ कि मी. दूर उत्तर में धर्मशाळ है । आ ई सड़क आगे पैड़ी माथै पूगै । संमूळे मारग रै दोन्यू पासी बजार दूकांना है । खाणै-पीणै री दुकानां, ढाबा, परसाद अर मणिहारी आद री दूकांना ई बेसी है । साधुआ अर भिखमगा री तादाद घणी है । जातरी अठै सूं गंगाजळ ले जावैं, इण वास्ते खाली डिब्बा, पीपा, बोतलां बेचण आळी दूकांना भी है । हर री पैडी मोड़ मुड़ता ई सामै दीखै । पैडी रो निजारो मणमोवणो है । नदी रै सारै पछमाद दिशा में मकराणे सूं बण्योड़ी विशाल चौकी है । इण चौकी माथै भजन कीर्तन हूंता रैवे । चौकी सूं नीचे उतर'र गगा नदी ताई जाण आळा पगोथिया है । मूल नदी री एक शाखा छोटी नहर दाई खासे वेग सूं इण रै आगे बैवे । इन नहर रै बीच में ई गंगाजी रो प्राचीन मिंदर पाणी रै माय ही बण्योड़ो है जठै दर्शनार्थी चौकी माथले पुळ सूं दर्शन खातर हर बखत जांता रैवे । 'गंगा मैया री जय' रै निनाद सूं समूळो वातावरण सदा गूंजतो रैवे । मिंदर रै कनै बीच रै बडे पगोथिये माथै पण्डां रा लकड़ी रा तखत अर उण माथै तावड़े सूं बचण आळा मोळ छाता लाग्योड़ा है । जातरी सिनान करतो बेळा आपरो सामान, कपड़ा आद अठै मेलै अर सिनान दरसन रै बाद पण्डा नै दिखणा देवै ।

हर री पैड़ी रै एके कानी महिलावां रै सिनान करणै वास्ते जनाना घाट बण्योड़ो है। इण घाटां रो एक सिरो 'नहर सूं' अर दूजो गंगा री मुख्य धारा सूं जुड़्यो है। इण घाटां माथै ई 'विड़ला टावर' है। गंगा मिंदर रै दक्षिण मैं नहर रै मोड़ माथै 'अस्थि घाट' है जठै भारत रै दूर-दूर सूं सरधालु आंपरे पुरखां रा अस्थ ला'र बैवावै। गंगाजी नैं देशवासी प्राचीन काल सूं ई मुगत दायिनी मानै। परम्परा सूं विश्वास अर आस्था है कै अठै अस्थ प्रवाहित करणै सूं दिवगत आत्मा नै जलम मरण सूं छुटकारो मिलै।

हर री पैड़ी सूं गंगा रै उछाळ खाते प्रवाह नैं देखते रैणै सूं अंतस ने अपूर्व शांति अर हरख रो अनुभव हुवै। दक्षिण कानी थोड़ी दूर जा'र गंगा माथैं एक चौड़ो वड़ो पुळ है, जके सूं गंगा रै दूजे किनारे पुग्यो जा सकै। पुळ माथै खासी ताळ खड़ा हु'र नदी रै दोन्यू किनारां माथै सरधालुआं रै सिनान ध्यान रा निजारां देखता रैया। पुळ माथैं अर नदी रै लारले पाड़ माथैं बांदरा भी खासी तादाद मैं उछळ कूद करता दीसै हा। पुळ सूं नीचे आ'र म्हे हर री पैड़ी माथै सिनान करण नै पूग्या। पाणी मैं पग घालता ई जळ री शीतलता रै कारण सगळै शरीर मैं एकर कम्पकंपी हूण लागी। धीमैं-धीमैं शरीर ठंडक बरदास्त करण लाग्यो। फेर तो कोई घण्टे भर तांई सिनान रो आणद लियो। सिझ्या पड़ण आळी ही। आरती तांई बठै रुकग्या।

आरती रै बखत हर री पैड़ी माथैं देश रै सगळां हिस्सां सूं पूगण आळै मानखे रा दर्शन हुवै। छोटा-बड़ा, भागवान अर गरीब सरीखे सरधा भाव सूं गंगा मैया री जयकारो लगातां, सिनान करता अर घाट रै मिंदरां रा दर्शन कर जीवन री सार्थकता रो अनुभव करता सा लागै। कोई आध घंटे रे उपरांत बड़ा-बड़ा दीपदानां मैं जोत जगावंतां कोई पचासूं पुजारी अर पंडा घाट माथै दीसण लाग्या। घाट रे मिंदरां मैं घंटा

ध्वनि अर शंख नाद सूं सैंमूळो स्थान निनादित हूण लाग्यो। पंडितां रै ऊंचे सुर मैं सुर मिला'र सगळा भगत जन आरती गावण लाग्या। चारूं मेर रा घाट सरधालुआं सूं ठसाठस ऊपरातळी भरग्या। हजारूं री संख्या मे लोग-लुगायां पुज्यां रै दोनां मैं दीप प्रज्वलित कर पावन गंगा में प्रवाहित करण लाग्या। धूप दीप री सुवास अर उजास सूं दीपावली रो सो मिजारो चारूं मेर दीसण लाग्यो। सैंमूळो वातावरण एक अनूठै आध्यात्म भाव सूं भरग्यो अर धार्मिक चेतना रै आनन्द मैं लोग झूमता सा दीस्या। वास्तव मे हरद्वार मैं गंगा तट माथै आरती रो द्रस्य एक जीवतो-जागतो परतख अनुभव है, उण नैं लेखनी सूं लिख कर बतावणो सम्भव नी है। साढ़ी आठ बज्या तांई आरती पछ्यां घाट री भीड़ छंटण लागी। म्हैं भी बाजार मैं भोजन कर'र घूमता घामता साढ़ी नौ बज्या धर्मशाळ पूगग्या। प्रसन्नचित्र वातावरण में बोलता बतळावतां रात्रि विसराम कियो।

६ मई नैं दिनुगे गंगा सिनान कर, नास्ते आद रै बाद मनसादेवी खातर ८ बज्या रवाना हुया। गंगा रै पछमाद एक छोटे डूंगर माथै मनसा देवी रो प्राचीन मिंदर है। नरसिंह धर्मशाळा रै सामे पगडंडी रै मारग सूं कोई १ ३० मील पाड री चौखी चढाई है। पण केई साल हुया अबै ऊपर जावण खातर बिजली री ट्राली 'रोप वे' बणग्यो है। चार रु. सवारी रो आवण जाण रो टिकट है। कोई तीन-चार मिन्टां मे ई ट्राली ऊपर पूग जावै। ट्राली सूं हरद्वार सै'र, गंगाजी अर सामै गंगा पार पाड़ी माथै बणोड़ै चंडी देवी रो द्रस्य बडो मोवणो लागै। अधर मे झूलती ट्राली मैं बैठणों रूंगटा खड़ा कर देवै। एके पासी नीचे बस्ती रो सोवणो बिस्तार अर दूजै पासे असीम आभै मैं आपरी ऊंचाई अर कठोरता री घोषणा करतो डूंगर। नगर रे पूरब मै बळ खांवती नदी चादी रै गोटे सरीसी दीसे। जाणे जंगळ रै हरियावळ री ओढ़णी मै गोटे जड़्या परिधान पैर'र

आ नगरी आपरे स्वामी महादेव री अभ्यर्थना खातर सज संवर'र खड़ी है।

मनसा देवी रो मिंदर छोटो पण प्राचीन है। मानता आ है कै अठै देवी रा दर्शन करणे सूं भगतां री मनोकामनावां पूरी हुवै। आध घंटा ऊपर ठैर्या। ऊपर बौत तेज हवा वैवे। इत्ती ऊंचाई पर भी पीणे रै पाणी री आछी व्यवस्था है। मिंदर रै बारै बैठ'र विसाई खाण तांई सीमेंट री चौकूया बणायोडी है। जका जातरी पैदल मारग सूं पूगै वै अठै बैठ'र सुस्तावै अर ठंडी निरमल हवा खावै उपरांत मळै तरो ताजा हू जावै। आधुनिक साधनां री ट्राली सूं जातरा सोरी तो हूयगी पण परिश्रम कर चढ़ाई पूरी करणे रो जको आनन्द आवै उण रो आस्वाद तो दूजो ही हुवै। पाछा ट्राली सूं ९ बज्यां तांई नीचे आयग्या। भीम गोडा, सप्तरिशी आश्रम आद देखणने रवाना हुया।

हर री पैडी सूं उत्तर मैं नदी रै सारै-सारै सड़क मारग चालै। कोई १ फलांग माथै ई पछमाद दिशा मैं भीम गोडे रो छोटो सो पक्को सरोवर है। इण मैं सदा पाणी रैवे। कैवा आ है कै आपरे अग्यात वास रै दिनां पाण्डव अठै सूं निसर्या हा। उणा ने तिस लागी। महाबली भीम आपरी गदा रै प्रहार सूं अठै खाडो कर दियो। उण रै पाणी सूं पांचू भाई आपरी तिस मिटाई। जद सूं ई उण जाग्यां नै पवित्र मानै अर उण ठौर पक्को सरोवर बणा दियो है।

भीम गोडा सूं कोई तीन मील दूर उत्तर मैं सड़क मारग सूं सप्तरिसी आसराम है। बीच मैं छोटा—मोटा मिंदर धर्मशाळावां आद है। रास्तो हर्यो भर्यो है। सप्तरिसी आसरम मैं भारद्वाज, वशिष्ट, कश्यप, अत्री, कौशिक आद प्राचीन रिसियां री भव्य मूरत्यां अर दुर्गा रो आछो मिंदर है। दुर्गा रै मिंदर मैं प्रतिमा सिंह वाहिनी है। मिंदर प्रतिमा रै

दोन्यू मेर कांच लागयोड़ा है। इण कारण एक प्रतिमा ही अनेक रूपां में भासित हुवे अर आकर्षक लागे। आसरम रै लारे गंगा अनेक धारावां में वेवे। कैवे के प्राचीन रिसियां रा पग धोवण नै गंगा भी सात धारावां में वंटगी है। इण धारावां नै सप्त सरोवर रो नाम दियो है। अठे पाणी रो वेग अर गैराई हरद्वार सूं कम है इण कारण न्हावण में बौत आनन्द आवै। नदी आपरे मूळ प्राकृतिक रूप में भाटा अर शिला खण्डां रै बीच प्रवाहित हुवै। अठै पक्का घाट नी हैं। पाणी इत्तो निरमळ अर शीतळ कै पूछो मत। तळ रा कांकर पत्थर ऊपर सूं साफ दीसै। अठै खासी ताळ नहाणें अर जल क्रीड़ा रो आनन्द लियो।

१ बज्यां रै नेड़ै परमारथ आसरम कानी चाल्या। ओ सप्त रिषी आसरम रै नेड़ै ई है। ओ आसरम देवी सम्पद मण्डल, जको कै परमारथ निकेतन बजै, उण री एक शाखा है। आसरम रै माय घना शीतळ छाया आळा बडा–वडा बिरख है। हरियाबळ अर नदी तट रै कारण पून में ठंडक अर नमी रेवै। अठै भी दुर्गाजी अर दूजा देवी देवतावां री बौत सुंदर मूर्त्यां है, जकां नै देखते जी नी धापै। दो बज्यां मोटर में बैठ'र पाछा हर री पैडी रै तिराहे माथै पूंच्या। बाजार में भोजन कर्‌यो। तीन बज्या तांई पूठा धर्मशाळा पूग्या अर विसराम कर्‌यो।

सिंझा ६ बज्यां फेर नीचले बाजार रै रास्ते हर री पैड़ी खातर चाल्या। हरद्वार रै इण बाजार में सदाई खासी भीड़–भाड़ रेवै। दखणाद सिरे फळ अर आचार–मुरब्बां री केई दूकानां है। अचार री इत्ती बड़ी दूकानां तो बड़े–बड़े सैरां में भी देखणे में नी आवै। एक साथी बतायो कै अठै बांस रो भी अचार मिले। दूजी दूकानां में चटायां, बास री टोकर्‌यां, गलोचा, रामनामी चादरां, माळावां, सिंदूर अर प्रसाद आद री बिक्री बेसी हुवै। ढाबा, मिठाई अर दूध दही री दूकानां भी खासी है। कपड़े, मणिआरी अर परचून री भी चोखी दूकानां है। बाजार रै आखिरी सिरे

ऊपर एक गली गंगा रै पुळ माथै निकळै । अठै सूं ई हर री पैड़ी सारूं पूगण खातर चौड़ो पक्को मारग जावै । नदी रै किनारे लकड़ी री चौक्यां माथै चाट अर कुल्फी री कोई पचासूं दूकानां सिंझ्यां पड़्यां मंडै । इण माथै खासी भीड़ रात तांई रैवे । इण दूकानां रै सामै शहीद भगतसिंह री एक मूरती स्मारक रूप मैं बणायोड़ी है । पावन तीरथ अर देशभक्ति रो संगम मन मैं पवित्र भाव उपजावै । सिंझ्या वेळा अठै कीर्तन अर हर जस गावती मण्डल्यां बैठी तन्मय हू'र भक्ति रो आनन्द लेंवती दीसै ।

हर री पैड़ी माथै अर पुळ रै पार बिड़ला टावर कनै गंगा रै दोन्यू किनारां माथै हजारूं लोगां री भीड़ सिंझ्या ने भेळी हूं जावै । सैंकड़ूं लोग घाटा माथै बैठ'र गंगा री निरमळ धारा रै प्रवाह नै देखता रैवे । केई लोग गमछे का थेले में आम बांध'र ठंडा हूण तांई गंगा रै किनारे बणायोड़ी सांकळा आळै खम्मा सूं बांध'र पाणी मैं टेर देवै अर घण्टे आधो घण्टे बाद, फ्रीज सूं ई बेसी ठंडा आमा ने खाणे रो आनन्द लेवे । अनेक सम्प्रदावां रा साधू, संत अर दान-दक्षणा मांगण आळा लोग भी दान-पात्र अर रसीद री किताबां लिया घूमता रैवे । भिगमंगा अपाहज अर अभ्यागत भी बोत घूमै । लोग सरधा सारू वांनै रुपया पइसा देवै । पण लाचार अर दरिद्र लोगां री इत्ती बड़ी संख्या अर उण रो ठावो निदान आजाद देश रै समाज सामै चुणौती दांई दीसै ।

साढ़ी सात बज्यां पछै दीपमाळका रो दृश्य बोत लुभावणो लागै महिलावां, पुरुष, बाल, वृद्ध सैं कोई दीप जगा'र जल मैं प्रवाहित करता अर 'गंगा मैया की जय' रो जयकारो लगांता दीसै । दूजै पासे गंगा मिंदर अर बीजा अनेक मिंदरां सूं घंटा धुनी रै साथै हाथां में दीप दान लियां अनेक पुजारी अर ब्रह्मण ऊंचे सुरां मैं आरती गावण लागै । हजारूं भक्त जन भी वांरै सागै शामिल हुवै । सारो वातावरण भारतीय संस्क्रिति री जननी मां गंगा री आरती अर अरदास सूं एकमेक हू जावै । सैंकड़ूं पंड्यां री

ध्वनि ऊंकूड़े क्षेत्र में दूर-दूर तक गूंजण लागै। आरती पछै भी कई देर ताईं आ गूंज कानां में सुनीजती रैवे। आरती रै उपरांत भीड़ धीरे-धीरे घटण लागी। म्हे लोग तो एक घटे ताईं और घाट माथै रया। गंगा किनारे बैठ्या पानी में झिलमिलावती रोसनी देखता रैया। रात्रि रै दस बज्यां भी सिनान करण आळा भक्तां री कमी नी ही। आस्था रै अटूट अर अनूठे सूत सूं धरम प्राण लोग इण देश में किंयां आज ताईं बंध्या है, हरद्वार जिसा तीरथां सूं ई इण बात रो परतख ग्यान हुवै। इच्छा न हुणे पर भी धरमशाल बंद हुणे रै डर सूं पूठा घूम्या।

१० मई ने दिनुगे ८ बज्यां तांगा में बैठ'र कनखल खातर रवाना हुया। स्टेशन सूं कोई तीन मील री दूरी माथै अठै दक्षेश्वर महादेव रो जूणो अर मानीतो मिंदर अर सती कुण्ड है। कोई २० मिन्टा में ई अठे पूगग्या। आ जाग्यां हरद्वार सूं शांत है। दर्शणार्थी तो आता-जाता रैवे, पण भीड़ भडाको उत्तो कोनी। अठै प्राचीन काल में सती रे पिता दक्ष प्रजापति महायज्ञ करायो, जिण में शंकर भगवान ने न्यूतो नई दियो। सती रै सामै उण रै पति नै दक्ष अपमान रा सबद बोल्या जिण सूं दुःखी हो'र सती हवन कुण्ड में भसम हुगी। शास्त्रां रै मुजीब गंगाद्वार, कुशावर्त, बिल्व तीरथ, नील परवत अर कनखल ए पांच ठाम हरद्वार रा पंचतीरथ बजे। कनखल रै कुण्ड में सिनान करणे सूं इंसान पवित्र हू जावै अर मुगत पावै।

इण जाग्या सूं थोड़ी ई दूर भारत रा राष्ट्रभक्त सपूत स्वामी श्रद्धानंद जी द्वारा थरप्योड़ो, सारे संसार में मशहूर, गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय है। इण रो स्थापना रो उद्देश्य भारत रे प्राचीन ग्यान विज्ञान अर संस्कृति री दाय ने सुरक्षित राखणो अर उणा रो विकास करणो हो। कोई समय अठै रो स्नातक हुणो गरब गौरव री बात ही। विश्व विद्यालय रो आहतो खासां बड़ो है। अठै आयुर्वेद शिक्षा री

व्यवस्था है। आयुर्वेद रो विशाल संग्रहालय देखण जोग है। अठै रै आयुर्वेद फार्मेसी में तरह तरह रा रसायन, अर्क, भस्मां, गुग्गल आद बणै अर आखे देश में ई नईं विदेशां में भी बिकै। मन में प्रेरणा हुवै के औखध विज्ञान में स्वावलम्बी भारत आपरे क्षेत्र में प्रयोग परीक्षण नैं क्यूं नी आगै बढावै अर क्यूं खतरनाक असर पैदा करण आळी आयुर्विज्ञान ने अपणावण री आंधी दौड़ में देखा-देखी सामल हुवै। अठै रो वेद मिंदर अर पुस्तक संग्राहलय भी सरावण जोगा है। इण ठामां रा दर्शन कर ११ बज्यां तांई पूठा धर्मशाळा आग्या। भोजन विश्राम रै उपरांत १२ बज्यां री बस पकड़'र देहरादून ताई रवाना हुया।

करीब साढ़ी चार बज्यां देहरादून पूग'र बाजार में जैन धर्मशाळा में रुक्या। धर्मशाळा साफ सुथरी अर नुवी बण्योड़ी है। आगले दिन सहस्तर धारा, जटाशंकर महादेव अर वन शोध प्रतिष्ठान आद देखण रो कार्यक्रम हो। उण दिन तो शहर अर बाजार आद देखण में ई बितायो। देहरादून बोत हरयावळ सूं भर्‌यो सैर है। चासूं मेर हरया ऊंचा डूंगर तो है ही सैर में भी लीची, आम, जामुण अर पपीते रा पेड़ घर-घर में लाग्योड़ा दीखे। अठै री आबहवा आछी है, इण कारण उत्तर भारत रा भागी अर समर्थ लोग सेवा निवरत हू'र अठै ई बस जावै। अठै 'दून स्कूल' अर ब्राउन स्कूल जिस्सी नामी शिक्षण संस्थावां है। अंग्रेजी माध्यम री बोसूं छोटी—बडी चोखी स्कूलां अठै है पण हिन्दी माध्यम री संस्थावां इत्ती आछी नी है। दिमागी गुलामी अर कोताई नैं छोड़'र ओ देश आपरी निजी ओळखावण कद बणासी ओ विचार पीड़ा पूंचावै। देहरादून भीड़-भाड़ आळी बस्ती है। मंसूरी अर चकराता रो मारग हूणे सूं अठै पश्चिमी तरज रा अनेक चोखा होटल है। देशाटन अठै रो परमुख उद्योग हूणे सूं दूजी जागवां सूं मुंहगाई भी घणी है। जका आम्बा उण दिनां बीकानेर में ४ रु. किलो मिलता वै अठै घणो उपज हूणे रै उपरांत भी ६ रु. किलो

मिल्या। मिठाई, नमकीन अर भोजन री थाली रा दाम तो दूणे सूं भी बेसी हा।

११ तारीख नैं दिनुगै ७ बज्यां जटाशंकर महादेव रे प्राचीन मिंदर गया। धर्मशाळा सूं मिंदर कोई २-३ किलो मीटर री दूरी माथै है। टैम्पो चालता रैवे। मिंदर री जाग्या बौत हरी-भरी है। मूल मिंदर सड़क सूं कई ढाळ उतर'र गुफा दांई स्थान माथै बण्योड़ो है। शिवलिंग पर जलरी सोवणी है। मिंदर रैं ऊपर वट रो प्राचीन विरख है, उण री जटावां सूं पाणी झरतो रैवे। सरधालु पेड़ री जटावां नैं शिव री जटा कैवे। मिंदर खासो जूणो है अर इण री मानता भी खासी है।

पाछा आवतां वन अनुसंधान शाला तांई चाल्या। श्री. एन. जी. रै केंद्रिय कार्यलाय सूं थोडी ई दूर चकराता मारग माथै ओ भवन बण्योड़ो है। छोटी ईटां में सफेद चूने री टीप सूं बणी इत्ती कलात्मक इमारत और कठई देखणे में नी आवै। इमारत री भव्यता अर सुद्रढता परभावित करै। ई नै देख'र लागै कै आज काल सिमेंट रो जावक अणूतो इस्तेमाल हू रयो है। आज री उपभोक्ता सस्क्रिति फिजूल खर्ची रो दूसरो नाम बणती जा रे ई है। पण कुण समझण आलो है ? इण अनुसंधान शाला रो घेरो केई एकड़ मे है। डीगे पेड़ा री सैंकड़ूं किस्मा रैं बीच शाला री इमारत आपरे नाम नैं सांचो बतावती लागै। शाला मैं दो बड़ा-बड़ा सग्रहालय है। एक में बनस्पत्यां, बीजां आद रैं विकास री आधुनिक तकनीक सम्बन्धी जाणकारी मिलै। दूजे में बनस्पत्या मैं लागण आळा रोग, क्रिमी, कीट अर वांरे निदान सू जुड़्यी बांतां माथै परकास पड़े। इण संग्रहालय सूं बणावणियां री दीठ, लगनशीलता, व्यवस्था अर रुचि सूं बौत कुछ सीख्यो जा सके। संग्रहालय देखण में २ घण्टा सूं भी बेसी समय लाग्यो तो भी उणनें खाली उपर-उपर सूं ई देख सक्या। ११ बज्यां तक पाछा धर्मशाळा पूगग्या, भोजन बिश्राम पछे १ बज्यां बस सूं सहस्तर धारा वांई रवाना हुया।

सहस्तर धारा देहरादून सूं कोई ११ किलो मीटर दूर है। म्हों प्राणे सूं कोई १०–१५ दिन पैलां पठै घोली बिरखा हू चुकी ही। इण कारण मारग में रास्ते रे दोन्यू कानी जंगली फूलां री सुरंगी पांत बिछ्योड़ी ही। राजस्थान रा निवासी हूणे री वजह सूं ओ दृस्य अपूरब अनूठो लाग्यो। मन ताजगी अर हुळास सूं भरग्यो। सहस्तधारा रै नेड़ चुर-चुर माटी प्राळा पाड है जठां सूं चूनो बणै। २ कि. मी. ढाळ उतर'र अद धुर स्थान पूग्या तो देखता ई रैग्या। पाड़ां सूं बैह'र सैकड़ू छोटा-छोटा झरणा माटी सूं रमत करता नीचे वैवे। औ धरमा गंधक रै प्राकृतिक जल धारा है। कैवे के अठै सिनान करणे सूं चरम रोग दूर हुवै। सैकड़ू लोग-लुगाई टाबर–बूढ़ा इण झरणां में सिनान कर रैया हा। म्हें भी सिनान रा कपड़ साथै लाया हा। घंटे डेढ़ घंटे सिनान रो लूंठो आणंद लियो। इण प्रसंग नै जीवन में कदै नी भूल सकां। ५ बज्यां पूठा देहरादून घा पूग्या।

१२ तारीख री भोर में ६ बज्यां बस सूं मसूरी टुरग्या। देहरादून सूं मंसूरी री दूरी ३५ कि. मी. है। पण मारग में सड़क घेर खावती चाले। आडा तिरछा घुमाव हूणे सूं, केई यात्री नै चक्कर आण लागे, केयां नै उल्ट्यां भी हूण लागे। पाडी यात्रावां मे हल्के पेट यात्रा करणी चाईजे। थोडी चाय का दूध साथे एकाध फल लेणो चोखो रैवे। तळी–भुनी चीजां अर भरपेट भारी नाश्ते सूं भी यात्रा कष्टदायी रैवे। ३५ कि. मी. रे रास्ते में घंटे भर सूं ऊपर समय लाग जावै। चढ़ाई रो मारग हर्‌यो भर्‌यो है। दूर दराज तांई ऊंची पहाड्यां अर हरीयावळ दीखै। बसां आध–आध घंटा सूं चालती ई रैवे। किराये री जीपां अर टैक्स्यां भी खासी तादाद में चाले। जाणकार लोगां बतायो के दस पंद्रह साल पैलां मंसूरी रै मारग री हरयाळी और भी देखण लायक ही। अब तो पेड़ां री धपाधूंध कटाई कारण पैलां आळी बात कोनी। ज्यूं–ज्यूं ऊपर जावता गया हवा में ठंडक रो अहसास बढ़तो रैयो। ऊपर पूग्यां पछै तो गर्मी रै मौसम में भी नवम्बर महिने जिस्सो हल्को ठंड लागणे लागी। मंसूरी समुद्र रै तट सूं छःहजार

फूट सूं थोड़ी बेसी ऊंचाई माथै है। उत्तर भारत रे सबसूं नजदीक, सुविधा [रण] अर लोकप्रिय पाडी जगावां में है। देहरादून देश रे दूजा भागां सूं [स]ड़क अर रेल सूं जुड़्यो है अर हरद्वार अर रिसीकेश सूं नैड़ो पड़ै, इण [का]रण साल भर मुसाफिरां अर सैलाण्या रो मेळो सो अठै मड्यो रैवे। [दे]हरादून सूं तो भोर में जा'र तिभ्रा तांई आछी सुविधा सूं पूठो आयो जा [स]कै, इण वजह सूं भी सैर भर गोठ करण आळा दून बासी लोग भी [ह]रोज अठै आंता-जाता रैवे।

मंसूरी रैं बस स्टैंड पूगतां ई छोटे बड़े होटलां रा एजेन्ट मुस्सा-[फि]रां रैं आड़ा झूम जावैं। दस बीस जणां ऐके साथै आपरे होटल रा कार्ड [प]कड़ा'र उणा री सुविधावां रा गुणगाण करण लागै। अमूझ्योड़े जातरीं नै [सो]चणे री सांस नी लेणे देवै। कई देर तक दैनगी किराये री खोलथाम [क]रण में लागगी। सामान्य अर मध्यम दरजे रा होटल आळा ऊंचा मोल भाव [क]रै अर कमती दामां में भी कमरा किराये देवणतांई त्यार हू जावै। हां, [ब]ड़ा आधुनिक सज्जा आळा होटलां री बात और है, बैठे तो आगूच [आ]रक्षण री व्यवस्था करणी पड़े। म्हे आठ जणा हां। ५०रुपया दैनगी में 'हिलटोन' होटल मैं ठहर्‌या। स्टैंड सूं कोई फर्लांग एक दूरी माथै स्कैटिंग [र]िज रैं कनैं ई औ होटल है। गर्मी री रुत होणे मांकर म्हे तो समझ्या हा कै होटलां में भीड़-भाड़ घणी हूसी। पण बठै तो छीड़ ई दीसी। शायद इण वजह सूं ई थोड़े सस्ते में जायां देवण ने बै त्यार भी हूग्या।

सिनान आद रै पछै त्यार हू'र होटल मैं नास्तो कर्‌यो। ठंडे मौसम रैं कारण चाय सूं ताजगी रो अनुभव हुयो। चाय री केतली अठै ऊनी तिकोजी सूं ढक'र देवे, जिकै सूं बैगी ठंडी नी हुवै। दस बजग्या हा। घूमण फिरण नै बारै निसर्‌या। कुलरी बाजार पूग्या। बाजार में खासी चैल-पैल ही। रैडी मेड कपड़े री दूकानां, खाणे-पीणे रा होटल, ढाबा, लकड़ी रे कलात्मक सामान, सजावट री जिसा री दूकानां री बोळायत है। दुकानां मैं अंग्रेजी रो बोल-बालो है। कुलरी बाजार सूं एक

सड़क ऊंट रै कूब दाई ऊंची-नीची लाइब्रेरी कानी जावै। इण सड़क रै आकार मजूब 'कैमल्स बैक रोड' कवै। इण सड़क माथै एकै कानी बो-वड़ी दुकानां अर दूजे कानी पटड़ी माथै हाट लागै। गढ़वाली अर दूजा पाड़ी लोग ऊनी स्वैटर, टी शर्ट, विंड चीटर, जरकिन अर डौंवरी री रा विरंगी जिंसा वेचता रैवे। टाबरां रा रमतिया अर टाफी, चाकलेट अर आइसक्रीम रा गाडा भी खड़्या रैवे। इण सड़क माथै बच्चां री घुड़सवारी खातर टट्टू भी किरायै मिलै। बाळक अर किसोर उमर रा लोग रं बिरगा गाभा पैर्‌यां, किलकरयां भरता घुड़सवारी रो आणंद लेवता दीसै। कैमल बैक रोड सूं ढळते सूरज रो निजारो आछो दीसै।

कैमल्स बैक रोड अर लाइब्रेरी रोड रै मधरस्ते में बिजली सूं चलण आळी 'रोप वे' ट्राली रो स्टेशन है। अठै सूं सैलाणी पाड रै दूजे पा नीची घाट्या मै आकाश मारग सूं पार करता ट्राली सूं सामै दूजी पा गनहिल पूग सकै। पतो लाग्यो कै थोड़ा साल पैलां ई इण बिजली मार रो निरमाण हुयो है। बीकानेर वासी साथ्यां वास्ते ट्राली मजूबे सूं न नी ही। ट्राली में बैठ'र जाणै रो अनुभव रोमांचकारी हो। ट्राली री व कैविन मैं बैठ्यां अधर मे झूलता, धीमी रफ्तार सूं दो सो फुट सूं बैर नीची घाटी रा निजारा देखता अर आकाशमैं बादळां सूं घिर्‌योड़ी पाड़ नै निरखता, एक सिरे सूं खिसक'र दूजै कानी बढ़ता म्हे सैंग उत्साह अ रोमांच सूं भरग्या हा। टाबरां दांई कौतुक अर निरमल आनन्द रो इस अनुभव कठै मिलै?

गनहिल माथै खासी ठंडक ही। अठै सूं घाटी रो निजारो म मोवणो लागै। सैंग घाटी सुरगे चट्टानी बगीचे दांई दीसै। गनहिल सूं गमोत्री बंदर पूंछ अर श्रीकांत आद पाड्यां दीसै। अंग्रेजी राज मैं रोज दिन मैं ठीक १२ बज्यां अठै सूं एक तोप दागीजती। इण कारण ही पाड़ी रो नाम 'गनहिल' पड्यो। गनहिल माथै एक बड़ी दूरबीन भी लगायोड़ी है।

जेण सूं मंसूरी रै नेडे आगै रो द्रश्य भी सोवणो लागै। गनहिल माथै फोटोग्राफरां री बीत दूकानां है। म्हे लोग भी यादगार रूप में एक ग्रुप फोटो अठै खिचवायो। जुवां ब्यावतोडा जोडा रोमांस रै अन्दाज में फोटो खिचावता जाग्यां-जाग्यां निजर ग्रावै। गनहिल सूं उतर'र भोजन कर्यां पछै मुनिसिपल बाग रो कार्यक्रम बनायो।

लाइब्रेरी चौक सूं म्युनिसिपल बाग कोई ४ कि. मी. दूर हुसी। अठै जावण तांई एक मारग पक्की सड़क आळो है, दूजो पगडंडी से कच्चो रस्तो है। दल रै दो साथ्यां मैं होड हुई कै, कच्चे मारग सूं बगीचे मैं पैला पूगीजै का पक्के मारग सूं। दोन्यू नै दौड लगा'र अठै पूगणो हो। कच्चे मारग ग्राळो साथी सोचै हो कै उण रो रस्तो की छोटो हूणे रै कारण वो ई पैलां पूगसी। सडक सूं जाण ग्राळै साथी नैं थोडी दूर दौड लगाया पछै आ बात समझ मे ग्रागी कै उण रो मारग घुमाव दार ग्रर लम्बो है। सामैं सूं एक हाथरिक्शे ग्राळो ग्रावै हो। वीनै ३ रुपया मे ठैरा'र रिक्शो कर लियो। उणनै दौडावतों पैला जा'र बागीचे रै फाटक माथै जा बैठ्यो। कच्चे रस्ते ग्राळो थोडी देर मे पूग्यो। म्है बठै पूगां तो सड़क आळै साथी रै पैलां पूंगण री बात माथै अचरज कर्यो। खासी देर साथी आळ सागै मजाक करणै रै उपरांत बिण असली बात बताई तो म्हा सब रै हंसता-हंसता पेट मैं बळ पडण लागा। बगीचो हर्यो भर्यो है। चारू मेर पाड्यां सूं घिर्योडो ग्रर ऊंचा डीगा पहाडी रूखां सूं भर्यो ग्रो बगीयो चोखो पिकनिक थळ है। ग्रठै सदा घुमक्कडां री चैल-पैल रैवे। लाइब्रेरी बाजार मैं बस स्टैंड सूं थोडी दूर माथे लक्ष्मी नायाण मिंदर ग्रर धरमशाल है। लंढौर बाजार मैं आर्य सम्माज मिंदर, जैन धरमशाल, सनातन धरम मिंदर, मुसाफिर खानो ग्रर गुरुद्वारो है। इणां सब मे यातर्यां री ठैरण री सहुलियत सूं व्यवस्था हू जावै। सिझ्या ५ वज्यां तांई बाग रै खुशगवार मौसम रा मजा लूटता रैया। ग्रंधेरे सूं पैला ई ठिकाणे तांई पूठा रवाना हूण सूं पैलां भोजन कर्यो।

सिझां रिज माथै लकड़ी रै फर्श माळै स्केटिंग रिज पूग्या। ५
बड़े हाल में बीच रो घेर स्केटिंग रै सिलाड़ियां वास्ते चारूमेर लगां
रा फेन्सिग लगा'र थोड़ी-थोड़ी जाग्यां खेल देखणियां वास्ते बणायोड़ी है।
एक कूणे में लकड़ी रो छोटो कैबिन बण्योड़ो है। जकै में वंध्यां अर दुरन
धर्‌योड़ी है। खेलण आला अठै कांवटर सूं किरायो देर स्केटिंग रा पहिया
मळा जता सरीद अर बैठ'र उणा नै बांधे। नूवा सिलाड़ियां सातर सेन
सिखावण आळो कोच हुवै। नूवा लोग सीखण रै बगत सुन्तुलन न रहण
ळणे कारण दोरां साळकीजै। जद माथै अर गोडां नै मसळता ऊभा हुं
दर्शक हंसता-हसता लोट-पोट हुवै। पण चोखा जाणकर खिलाड़ियां रै
स्केटिंग करता देखण में घणो मजो आवै। पहियां माथै तेज दौड़ता किशो
किसोरियां हवा मे लहराता का तिरता सा लागै। कई तो भांत-भांत रा
कमात्मक करतब भी दिखावै। ज्यूं सरकस रो खेल छोटा-बडा सब रै
आकर्षण रो माध्यम हुवै, इण भांत ई औ खेल भी सगं बड़े चाव और
कोतुक सूं देखे। पैसड़ी बार देखण आळा साथ्यां नैं तो घणो मजो आयो।
अठै रै वातावरण में खुलोपण, जीवट अर मौज मस्ती रो आलम है।
लड़का-लड़की आपस में उन्मुक्त अर सहज रूप सूं मिले-जुले, क्रीड़ा होल
खेल में सागे हिस्सो लेवै। पोशाक अर बोल चाल में अंग्रेजी रो घणो
परभाव है। सम्पन्न घरां रा टाबर ही अठै घणा आवै। वै कद पश्चिमी
जीवन शैली अर अंग्रेजी री मानसिक गुलामी सूं अळगा हुसी, औ विचा
भी वार-वार टीस पहुंचावै। रात दस बज्यां पाछा आ'र ठिकाणे
पकड़्यो।

१३ तारीख नैं दिनूगे बैगो त्यार हू'र रिक्शे सूं काठ गोदाम टीं
नाम री जाग्यां तांई रवाना हुया। औ ठाम मंसूरी सूं ५ कि. मी. दूर है
मारग मोवणो है। दूर-दूर तांई घाट अर पाड़ां रो विस्तार है। मंसूरी रै
सबसूं ऊंची जाग्या लाल टीबो भी अठै सूं नैड़ो ई है। काठ गोदाम टीबं
भी सासो ऊंचो है। अठै सूं हिमालय खेतर री मरफ सूं ढकूयोडी ऊंचं

वंत धोट्यां भोर रै सूरज री किरणां मैं चकमकाती सोनलिया आभा बेखरांती दीसै। ऊगते सूरज अर ढ़ळते सूरज रो निजारो कन्याकुमारी, कोणार्क अर आबू परबत आद कैई ठामां मैं घणो मोवणो लागै। पण तावड़े री चमक सूं बरफ री भिळमिळ आभा रो ओ द्रश्य भी अनूठो अर अपूरव देसे, जको सदा याद रैवे। घूम घाम'र ११ वज्यां तांई पूठा आया। भोजन कर बिसांई करी।

दोपारे पछै माल रोड घूमण तांई निसर्या। शिमला दाई अठै री मालरोड भी बड़ी रौनक आळी जाग्यां है। खासो बड़ो बाजार है। हर तरह रे बढ़िया अर फैंसी सामान री बोळायत है। अंग्रेजी तर्ज रा बड़ा होटल, देसी ढाबा, सजावट अर श्रृंगार रो सामान, कपड़े अग मणिग्रारी री दुकानां, आर्ट अर क्राफ्ट री जिंसा, ऊनी वस्त्र सैं कुछ ऊंचे दांमा में अठै बेके। कुत्तां नै साथै ले'र घूमणियां लोग तो दूजा सैरा मैं भी मिल जावै पण मिन्यां रै गले में पट्टो पैरायां घूमती फैशनेबल लड़क्यां नै अठै ई देखयो। भेडिये जिस्सा बड़ा कद्दावर ग्रे हांउड अर बुलडाग कुत्ता दीसै, जकां नै देख'र ई दहशत पैदा हुवै। दूकानां रा नाम, सूचना पट्ट आद अंग्रेजी मैं ई है। खरीद बिक्री रो माध्यम भी विदेशी भाषा ही है। डंड हुणे सूं चाय काफी री चोखी दूकानां खासी तादाद में है। माल रै होटलां मायं प्राय: भीड़ रैवे। बेकरी री चीजां ब्रैड, केक, पेस्टरी, नान, बिस्कुट आद रो चाय साथै प्रचलन बेसी है। अण्डा, आमलेट अर आमिष भोजन भी खूब मिलै। अठै फैशन रो घणो परभाव है। दूजां सैरां मे जीन्स, टी शर्ट आद रो लड़कयां में जको प्रचार आज दीखे वो उण समय भी बठै खूब देखण नै मिल्यो। जीवन शैली मैं उपभोग री परधानता है। गांधी रे निर्धन देश में एक वर्ग रो विलास अर ऐश्वर्य कानी इत्तो झुकाव इण मुल्क नै कठै ले जासी ओ विचार भी मन नै उत्तेजित करै।

१४ तारीख नै कैम्पटी फाल नाम रे मसहूर झरणे नै देखण रो

आयोजन हो। सुबह ७ बज्यां लोकल बस में बैठ'र मंसूरी सूं १२ कि. मी. ई कैम्पटी फाल पूग्या। चीड़ अर दवेदार रा घणा हर्‌या छायादर बिरख में राजे है। तावडो मुसकिल सूं ई जमीन तक पूगै। ठंडी पवन रा हबोळा मांई बस आध घटे सूं पैला ई अठै नावड जावै। कैम्पटी चकराता रोड माथै ऊंचै पाडां सूं घिर्‌योड़ी आकरषक जाग्यां है। ६०–७० फुट ऊंचाई सूं झरतै री केई धारावां चांदी बरणै पाणी रा ऊजला मोती बिखेरती सोवणी लागै। धरती माथै ऊंचे सूं पड़ता निरझर धोळा झागां रा बुळबळा बणावता अर मिटावतां जीवन री निरतरता अर भौतिक जगत री छणिकता रो उदघोष करता लागै। अठै सिनान करण मैं घणो आणंद आवै। प्रपात रो जळ ठंडो पण ताजगी अर स्वास्थ प्रदान करण आळो है। दिसुगे मू सिझा ताई अठै सैलाणिआ रो मेळो मह्योडो रैवे। प्राय: उत्तर भात रै सै प्रांता रा लोग छोटे बड़े टोळा मैं सिनान, जल क्रीडा अर दौड़ता अठखेल्यां करता, दीखै। टाबर बूढा सै कोई कुदरत रै प्रकृत सम्परक सूं सहज अर 'सरल ब्योहार करता अबोघ आचरण आळा सा बण जावै। नागरिक जीवन रै छल कपट सूं दूर निरमल आणंद सूं मन आत्मा नै तिरप्ति मिलै। वागंनर नाम रै एक वैज्ञानिक बैहते झरणै रै पाणी नै 'जीवत जळ' कैयो है। आम जाग्यां रै नद, तलाब अर कुए रै पाणी मैं तरावट अर ताजगी री आ बात नी है जकी अठै इण वैज्ञानिक रैं कथन री सत्यता सिद्ध करती लागै। अठै सूं अळगो हूणै नै जी नी करै। कोई दो घंटा अठै सिनानादि मैं लागा। अठई कैफे में चाय नाश्तो कर ११ बज्यां फेर मसूरी आग्या।

सिझा री समय माल माथै घूमण अर क्राफट री चीजा अर ऊनी होजरी माद रै सामान खरीदणे में लगायो। अठै जिसां रा भाव तो कमर तोड़ है, पण यातरा बाद घर रै नाना मोटां नै की छोटे–मोटे तोहफे री उडीक रैवे ई है। आगले दिन तो देस बावड़णो ही हो इण खातर देर रात ताई घूमता फिरता रैया। आछै खुशनुमा मौसम अर प्राकृतिक सुंदरता री आ थळी वाकई पाडा री राणी कहलाणे री सांची अधिकारणी है, ओ अनुभव सदा हूतो रैवे।

उगते सूरज री सोनल घाटी

रोवर स्काउटिंग रै एक साहसिक शिविर रो आयोजन १९८२ रे मई रे महिने कांठमांडू में हुयो हो। बठै सूं पाछा आवती बेलां 'उगते सूरज री सोनल घाटी रै नाम सूं जाणीजण आले दार्जिलिंग अर देश री आखरी सीमा माथै बस्योडे अनूठी संस्क्रिति अर घणे हरयावल आळे सिक्किम राज्य री राजधानी गंगटोक ने देखण रो कार्यक्रम बणायो। काठमंडू सूं बस मैं बैठ'र सीधा सिलीगुडी आया। ३ जून नैं बस सूं सिंझा ५ बज्यां रवाना हू'र आगले दिन भोर मे ६ बज्यां तेरह घंटा री लगातार यातरा रे बाद सिलीगुडी पूगा। चाय नाश्ते रे उपरांत ८ बज्यां भळे आगे दार्जिलिंग खातर रवाना हुया। चाय रा ढलवा मखमली बागान, मरास अर बांस रा झुरमुट, अणगिणत पुसपा री मुळकती सोवणी किस्मां, हिमालय री सै सूं ऊंची चोट्या रा निजरा, आंटा खांती छोटी रम्मतिये सरीसी रेलगाड़ी री सैर; बौद्ध मठां री अळायदी संस्क्रिति, जंगली जिनवारां रो खुल्लो बिचरण; सोवणी झीलां माथै उगते सूरज री झिलमिल याद जे एके साथे कठई देखण नै मिल सकै तो वा सुंरगी पर्यटक नगरी है दार्जिलिंग।

सिलीगुड़ी सूं थोड़ो आगै ही चढाई सरू हू जावै। पाड़ो मारग मैं

सड़क बांयटा खाती सी लागै। सड़क रै दोन्यू कानी खाथी हरियाली है। ज्यूं-ज्यूं ऊंचाई बढ़ै, एकै पासै पा'ड़ अर दूजै पासै घाट्यां सरू हू जावै। घाट री दिसा में चाय रा पट्टीदार खेत घोत मोवणा लागै। खेत में चाय रै पत्तां तोड़ती लुगायां माथै माथै रेशमी रुमाल ओढ्यां, गले में चांदी रा गंगा पैर्यां अर मगर माथै तरकस दाई ऊंडी छबड़ी बांध्यां दोळ बणा'र काम करती दीसै। केई छोटा टाबरां नै भी कपड़े री झोळी में पीठ माथै बांध्यां राखै। काम करती वेळा हळके सुर में लोक गीत री धुन भी बांरे मुंडे सूं सुणीजै। श्रम अर संगीत जठै जुड़ जावै वा मेहनत भी आनन्द री जाण पड़ै। ईं कारण ही स्यात अठै री मेंहनतकश लुगायां रै चै'रे माथै मीठी मुळक अर स्वास्थ्य री लाली चमकती रैवै। ११ बज्यां नेड़ै कारसांग रे कस्बे पूग्या। काठमांडू में राजस्थान रा एक मित्र कारसांग रे एक दुकानदार रै नाम एक दस्ती लिख'र दीनी ही वां बतायो हो कै चूरु रै एक दूजा सज्जन रो सिपाई झोरा (सिलीगुड़ी सूं थोड़ो ही आगे) में चाय बागान है अर दार्जिलिंग में रैस्ट हाउस है। चाय बागान वाळै इणी परिवार री कारसांग में दुकान ही। दस्ती देतां ही बां दार्जिलिंग रै रैस्ट हाउस में रैगे वाळै व्यवस्थापक रै नाम एक चिट्ठी लिख'र म्हारे ठैरण री निशुल्क व्यवस्था रो आदेश कर दियो।

रास्ते रा अनूठा दृश्य देखता कोई ८ घंटा छेड़ै तीजे पौर रै उपरांत ४ बज्यां दार्जिलिंग रै रेल्वे स्टेशन वाळे स्टाप माथै उतर्या। मुख्य बस स्टैंड थोड़ो और आगे है। म्हारे आवास री जाग्यां रेल्वे रै सारै पा'डी पगडन्डी सूं कोई एक फर्लांग दखण में चढाई चढ़'र ऊपर ही। म्हे लोग सोलह जणा हा, साथै समान भी खासो हो, अठै ताईं पूगण में घंटे साण लागग्यो। पण कागज दिखातां ही एक बड़ी आलेशान कोठी में एक बड़ो कमरो जिकै रै साथै एक छोटो कमरो अर संयुक्त बाथरुम हो, म्हाने मिलग्यो। बड़े कमरे आगे लकड़ी रो सोवणो बरामदो बण्योडो हो। कोठी रे आगे खासो बड़ो खाली मैदान हो।

मा कोठो बोत बड़ो है, उपरै दूजा कमरां में भी और लोग रवदोड हा। गो दाम्नो कै कदै आ कोठो कूच बिहार रै दीवान रो हो, उणै नै बाद मैं धाव बागान रै मालकां खरीद लीनो हो। सैलान्या रै आदम रो भीजन में इसी जाग्यां पांच-आठ सौ रपिया रोज नाखे मिलणो भी मुस्किल हुवै।

उण दिन तो थकयोड़ा हा। दैसी चाय बणा'र पी। भोजन बणाने री 'किट' साथै ही। विश्राम कर'र भोजन बणायो। व्यवस्थापकजी सूं अठै रा देखण जोग ठामां री चरचा कर कार्यक्रम बणाता रैवे। हैं सूं भाग्य री बात आ ही कै कोठी रै ठीक सामै उत्तर पूरब दीसा मैं कंचनजंघा पा'ड री चोट्यां साफ दीसै आ बात वां म्हाने बताई। उण वेला तो बादळवाई ही। पण पांच दिनां रै प्रवास मैं कदैई तो बादळ खुलसी, औ भरासो हो। हुयो भी इयां ही। भोजन उपरांत गपसप करता ई सोग्या। मैं रात नै कोई डेढ़ बज्यां लघुशंका सारु उठ्यो। बारै नेकळ्यां ही हरख सूं गदगद हुग्यो। कंचनजंघा रा पांच चोट्यां चांदनी रात रै खुल्ले आभे मैं दरसता अर गरब सूं आपरो माथो उठायां खड़ी आपरी बुलंदी री घोषणा करती सी लागी। मैं सब साथ्यां नै उठायो। फेर तो कंचनजंघा रै नाम सूं हड़बड़ाता सा वे उठ्या, पण द्रस्य देख'र विभोर हुग्या। डेढ़-दो घंटा चांदणी मैं चमकती बरफ सूं ढक्योड़ी मनूरम गोरी परबत माळा नैं निरखता अर आनन्द लेता रैया। जिकै निजारे नै देस नैं विदेशां सूं हर रोज सैंकड़ूं सैलाणी आवै प्रकिति री किरपा सूं जीवता थाण ही उण रो दरसन कर उत्साह अर उमाव रो अनूठो अनुभव कर्यो। कमरे में आ'र तीन-चार घंटा मळै नींद ली।

दिनुगे सैंग तरोताजा हा। त्यार हु'र चाय नास्तो लियो। १० बज्यां आवास सूं निसर्या। पंद्रह मिन्टा में ई दार्जिलिंग रेल्वे स्टेशन रै कड़े घार धीम मिंदर में पूग्या। मिंदर १९३० में बण्यो हूणे कारण जूनो ई है। मिंदर कलात्मक है। इण री स्थापत्य शैली नेपाल रै

मिंदर जिसो है। उत्तराखंड अर हिमालय में भगवान शिव रा उपासना थल ही वेसी है। गंगा नैं शिखा में थामणे री सगली कैलसपति अर परबत वासी शिव में ही तू सकै। इण करण सम्पूरण हिमालय क्षेत्र में शिव रा पावन धाम जाग्यां-जाग्यां मिलै।

रेल्वे स्टेशन रे लारले सड़क मोड़ सूं पूरब में कोई २ कि. मी. दूर दोरजो नाम सूं बजे जिकै बौद्ध मठ नैं देखण ने गया। इण पाड़ी रो नाम 'ओवजरवेटरी हिल' है। डेढ़सो बरस पैलां इण मठ रै कनै २० २५ घरां री वस्ती ही। घणकरा बौद्ध सरधालु अठै रैतां। इण खेतर मावै सिक्किम रे राजा रो अधिकार हो। ई. १८३५ में अंग्रेजां इण रै राजा सूं मोल ले लियो अर अठै आपरे सिपायां खातर टी. बी. सनेटरीयल बणवायो। धीरे-धीरे बंगाल अर असम रा लोग अठै बस गया। अंग्रेजां भी ईनै पर्यटन केंद्र दांई विकसित करयो। दोरजी मठ रै कारण ई इण रो औ नामकरण हुयो। मठ खासो पुराणे है। मठ में बड़ा बडा घटा है, जिकां नैं पूजा रे समय लकड़ी रे डंडे सूं बजा नैं। मठ में माथो मुंडाया कत्थई कपड़ाधारी नाना मोटा बालक बौद्ध धरम पुस्तकां रो सस्वर वाचन करता मिल्या।

अठै सूं घूम बौद्ध मिंदर देखण नैं गया। घूम बौद्धां रो तीरथ मानीजै। सड़क अर रेल मारग केई जाग्यां सारे-सारे चालै। घूम रेल मार्ग लाइन चार रै अंक दांई काटो बणा'र मुड़ै। स्यात इण वजह सूं ई ठाम रो औ नाम पड़्यो है। औ मिंदर घणो मानीतो है। भगवान बुद्ध री बड़ी प्रतिमा रै सामै आठ पौर घी रो दीप बळतो रैवे। अठै बौद्ध धरम री सैकड़ूं हस्तलिखित प्रतियां रो भी कीमती सग्रह है। लामां साधुवां अर बौद्ध लोगां रा चपटा मूंडा, छोटी आंख्यां, पीलोपण लियां गोरो रंग, पतली नीची झुकवोडी मूछां नै देख मंगोल जात रो ध्यान आ जावै। अठै जातरी आंवता ही रैवे। ढाई बज्यां पूठा रैस्ट हाउस आया। भोजन बणाने खाणे में ४ बजग्या। सिंझा बादलबाई हुगी ही, ठंड भी

बढ़गी। बाजार में आया। मारवाड़ी अर हरयाणवी लोगां री बोळायत है। कपड़े, मणिआरी अर परचून रो काम इणां लोगां रे हाथ में ही है। मौसम नै देखतां केई साथी बरसात्यां खरीदी अर केई छाता लिया। एक हरियाणवी दुकानदार रै कनै कैनवास री बरसात्यां ही। फैशन मुजीब में पुराणी गिणीजण लागी ही इण कारण बौत सस्ती हाथ आगी। सात बज्यां ही इत्ती ठंड हूगी कै पूठा फिरूया। थकयोड़ा हूणे सूं जल्दी ही सोग्या अर सात बजी पैल्यां कोई मुसक्यो ई कोनी।

आगले दिन भोर मैं उठ्या तो बूंदा-बांदी हो री ही। मौसम ठंडो तो हो पण सोवणो लागे हो। सोच्यो कै तैयार हू'र चाय नाश्तो आद करतां शायद घूमण फिरण जिसो मौसम हू जावै। पण आकाश साफ हूणे री बजाय बादलां रै मण्डाण सूं घिरग्यो। छांटां तेज हूगी। नाळा चालण लागग्या। पा'ड मैं बिरखा रो निजारो भी समतळ भूम सूं निराळो हुवै। परवत रा शिखर, ऊंचा पेड, ढलवां घाट सै क्यूं मूसळाधार पाणी मे एकरस हू जावै। ढलवां मारग तिसळण कारण बंद हू जावै। सै लोग घरां टापरां मैं दुबक जावै। जद बिरखा नी बद हुई तो दो साथ्यां नै बरसाती अर छाता दे'र बाजार सूं आम्बा, बेसन, घी, मसाला, आद लेवण ने भेज्यो। आयां पछै आमरस अर बेसन री पूड्यां बणाई। दिन भर बणावण-खाण मैं गोठ रो सो आनन्द लियो। पण बिरखा नी थमीं सो नी थमी। सिञ्झ्या रो को समय गाणे-बजाणे अर खुद री रच्योड़ी कवितावां आद सुणनै-सुणाणे में बितायो। पकौड्यां रो दौर भी बीच में चालतो रैयो। रात रा भी मेह पड़तो रैयो। कैम्प फायर रा कई कार्यक्रम तैयार हा ही। मनोरंजन तो हुयो, पण एक दिन सैर सपाटे तांई नी निकळ सक्या इण रो मलाल भी हो।

कुदरत री बात आगले दिन भी बूंदा-बांदी हो री ही। अब तो सै एकमतै सूं छांट-छिड़के मैं ही छाता बरसात्यां ले'र निकळने री तै

करी । ८.३० वज्यां बारे आया । लाल बाजार नेड़े ही है, पूग'र मंटाळो माळे सूं घुमावण री बात करी । अठे बीस एक देखण जोग जागावां है, जकां में ३/४ म्हे देख-चुक्या हा । म्हे लोग दिन भर रा चार सौं हजार सैमूळे रूप सूं देवणने त्यार हुया । वै छ सो सूं सरू कर पांच सो माथे एकग्या । बात वणी कोनी । निश्चय अर आछो साथ । फेर भी कमी हीं । उण दिन सुबह ९ वज्यां सूं सिझ्या रा ६३.० वज्यां ताई ६.३० घंटा लगातार चोखी बिरखां में घूमता रैया पण जिसो साहस, अनूठे आनन्द और मौज मस्ती रो अनुभव इण दिन हुयो बिसो अनुभव म्हारे घुमक्कड़ जीवन में भी कम ही रैयो है ।

सै सूं पैलां लायड वनस्पति उद्यान देखण ने गया । दार्जिलिंग मायं वनस्पति री दीठ सूं प्रक्रिति री घणी किरपा है । टीक, चीड़, देवदार, सफेदे, बुरांस आद रा अणगिणत बिरखां री अठै आछो मोकळो संग्रह है । चिनार, विलखण, बांस रा भी पेड़ है । पण हिमालय परबत रै पौधां, पुष्पों रो अठै आछो, मोकळो संग्रह है । दार्जिलिंग पुसप प्रेमियां रो सुरग ही जाणो । अठै ४००० सूं वेसी फूलदार पौधा अर ३०० किस्म री फर्न का पौधा है । सैकड़ूं दूजा पुसप हीन पौधां रा नमूना भी भांत-भांत रै गमलां मैं सजायोड़ा है । गमलां अर पौधां रै वास्ते जालीदार भींत अर लकड़ी री छात, आळा, सैड वणायोड़ा है । तावड़े अर छियां रो ध्यान राख'र पौधां नै रोप्या अर राख्या है । पौधशाळ रो रख रखाव घणो आछो अर सुरुचि पूरण है । इसी बढ़िया नर्सरी कमती जाग्यां ही देखण मैं आवै ।

नेड़े ही पद्मजा नायडू जीव जंतुशाला है । इणा में हिमालय खेतर रा प्राणी तो है ही साइबेरिया रा चीता, अठै रा काळा हिरण अर भालू आद भी है । सेर, बारहसींगा, जंगली भेड़ियां भी है । अनेक भांत रा दुरलभ पक्षी भी इण चिड़ियाघर मैं मिलै । हिमालय-रा ब्लू वर्ड, लम्बी

टांग आळा फेलकनेट, मिनवेट, शाही कबूतर आद रै कारण इण रो महत्व घणोःबध जावै। बरसती विरख मैं जंतु पिंजरा में दुबक्योड़ा पड्या हा, इंपठीनै दरसक गण भी कम हा। पण म्हारी टोळी मैं घणो उत्साह हो।

अठै सूं थोडी दूर पछमी जवाहर मारग माथै हिमालय परबतारोहण री जगत बिख्यात संस्थान है। प्रसिद्ध परबतारोही तेनसिंग नोरके इण रा संस्थापक सदस्यां मांसूं एक हा। आ संस्थान आपरी तरां री एक निराळी संस्था है, जिणमें कठिन अर दुरगम पा'डां माथै चढ़ण रो प्रशिक्षण दियो जावै। संस्थान री थरपना १६५४ में हुई। अठै सूं भी कंचनजंगा रो द्रश्य आछो दीसै, पण आज बिरखा री वजह सूं चारूं मेर धुंधळको सो छायो हो। कई कमरां मैं परबतारोहण रै काम आवण आळा उपकरण प्रदर्शनी तांई सजायोड़ा राख्या है। हिमालय रे एवरेष्ट, नंदादेवी आद सफल अभियानां रा प्रामाणिक चित्र भी अठै लगायोड़ा है, जका साहस री प्रेरणा देवै। अबै तो केई अभियानां मैं हिम्मती महिलावां भी परबतारोहण रा अनूठा करतब दिखाणे मैं कामयाबी हासल करी है। कु. बिछेंद्रीपाल अर नंदिनी बहन रो नाम उल्लेख जोग है। इण कड़ी में बीकानेर रा साथी मगन बिस्सा रो नाम भी सराबण जोगं है। बिस्सा एवरेस्ट चढ़ाई अभियान मैं २८ हजार फुट री ऊचाई तांई पूंचग्या हा। पण मौसम री खराबी कारण दल नायक री आग्या रो पालन कर पूठा फुरं'र कड़े अनुशासन रो परिचय भी दियो। १ बज्यां दोपार भोजन तांई संस्थान भी बंद होग्यो अर म्हे भी लाल चौक मैं आं'र एक होटल मैं भोजन करयो।

तीजे पोर चौक सूं थोड़ी दूर नेचूरल हिस्ट्री मजायघर देखण नै गया। बिरखा ओजूं भी पैलां दांई ही पड़ री ही। बरसात्यां अर छातां रै बावजूद भी जूता, मोजा अर पैंट रा पांऊंचा चोखौ तरां भीजग्या हा पण अब तो ओखळी मैं सिर आळी बात ही। भीजण रो डर ही मांग

इण अजायघर री थापणा ई. १९१५ में हुई। इण में मछल्यां, पक्षी, रेंगण आळा जीव अर दूजा स्तनपायी जीवां रो संग्रह है। इण जीवां रे संरक्षण अर वंश बढ़ाणे रा उपाय भी अठै करीजै। आकार में छोटो हूणे पर भी अजबघर आकर्षक अर मनोरंजन करणे आळो है।

२.३० बज्यां तिब्बती हस्तशिल्प केंद्र नैं देखणने चाल्या। मारग रे पछम में ऊंची नीची पा'डी सड़क अर घनी वनस्पति सूं गुजरता ४ बज्यां तिब्बती केन्द्र पूग्या। रास्ते में ऊंची पा'डी सूं विश्व रो सब सूं ऊंचो लेवांग रेसकार्स भी दीसै। अठै टैम-टैम पर घुड़दौड़ां रो आयोजन हुवै। तिब्बती हस्तकला केन्द्र ई. १९५९ मे बण्यो हो। तिब्बत मैं चीन रै अत्याचार सूं तंग आ'र जका शरणार्थी भारत में केई जागा पूग्या, बां में सैंकडूं दार्जेलिंग में भी आ'र बसग्या। सरकार रै सहयोग सूं तिब्बती लोग लुगायां अनेक लघु उद्योगां में अठै काम करे। ऊनी, कालीन, खाल आद रा करधा अर लूम रा केई कारखाना अठै चालै, जकां मायं लोग लुगायां काम करती रैवे। ऊनी वस्त्र, रंग बिरंगा बढ़िया गलीचा, जाकेट कोट, जर्किन, दस्ताना, लकड़ी रा रमतिया, मेज, कुर्सी आद फर्नीचर अठै बणे। ऐ चीजां बौत सोवणी अर कलात्मक हुवै।

आगले दिन भोर में ५ बज्यां उठ'र बस स्टैंड सूं मैटाडोर करी अर टाइगर हिल देखणे नैं रवाना हुया। टाइगर हिल दार्जिलिंग सूं ११ कि. मी. दूर है। अठै ऊंचाई भी बेसी है। दार्जिलिंग समुद्र तळ सूं २१३४ मीटर है पण टाइगर हिल २५५५ मीटर ऊंची है। अठै सूं सूर्योदय रा दरसन बौत आछा दीसै। म्हे ५.३० बज्यां अठै पूगग्या हा। सैंकडूं दूजा लोग भी भेळा हू चुक्या हा अर भळै आवंता जा रैया हा। वाच टावर सूं सामै दूर तांई आभो राते रंग सूं रंग्योड़ो लाग्यो। सूरज रो एक कूणो धरती मांय सूं निकळतो दीस्यो कै लोगां री हळचळ अर उत्सुकता तेज हुगी। 'बो दीस्यो' री ध्वनि रे सागे हरख सूं बड़ा बूढ़ा भी टावरां दाई

किलकण लाग्या। एक उजळी सोनलियां आभा आकाश में बिखरण लागी। सूरज रै ऊंचे चढ़णे साथै प्रकाश बढ़ण लाग्यो। दो–तीन मिन्टा मैं ई पूरो सूरज निकळग्यो। सूरज रो आखरी छेड़ो धप देखणो एकर ही जद ऊपर आयो तो दरसकां नै घणो आनन्द आयो। आंते बखत पैदल आया। साढ़ी नौ बज्यां पाछा पूग्या। भोजन बणाने खाणे अर विश्राम रे बाद दोपार एक बज्यां रोप वे रो कार्यक्रम हो।

दार्जिलिंग रेल स्टेशन सूं ८ कि. मी. दूर दखण–पूरब में रंगीत नदी माथै 'रंगीत घाटी रज्जूमारग' है। रास्तो गैरो हरियावल आळो है। बिरख अता छायादार है, कै सूरज री किरणां नीठ धरती ताई पूगै। थोड़ी घणी बस्ती भी ठेठ तांई है। रज्जूमारग गाथै सडक रै पछमाद सिरे एक कैबिन बण्यो है, इण मैं बिजली री ट्राली खड़ी रंवे। सड़क माथै 'सैंग्रीला' रो एक बडो बोर्ड भी लागोड़ो है। पतो जाग्यो कै 'सैंग्रीला' सिक्किम में बणण आळी कीमती शराब है। विदेशी अर दूजा सैलाणिया रै आकरषण तांई प्रचार कर'र सिक्कम राज्य इण सूं चोखी आबकारी आय कमावै। रोप वे री ट्राली मैं छः आदमी एक साथ बैठ सकै। ६ रु. प्रति सवारी आणे–जाणे रो टिकट है। ट्राली मैं बैठ'र खासी नीचे रंगीत नदी रो द्रश्य देखणो रुंगटा खडा करण आळो अनुभव है। उमाव री उत्तेजना सूं मन हबूळा खाण लागै। घाटी रे दूजे पासे सिंगला बाजार है। रज्जूमारग इण बाजार ने दार्जलिंग सूं जोड़े। बाजार छोटो ही है पण खाणे पीणे आद री सैं चीजां मिलै। चाय नास्ते री खासी दूकानां अर होटल अठै है। आ जाग्यां पिकनिक अर गोठ री सुन्दर आदर्श थली है। मछली रे शिकार करता लोगां नै खासी ताळ तक देखता रैया। मछली पकड़णो धीरज आळो अर समय साध्य काम है। केई बार कांटो खाली ही आवे, जद कठैई कदी–कदास कोई मछली फंसे। शायद इण करण ही ऐरे काम खातर 'झकमारणो' जिसी कैबत रो प्रयोग हुवै। करीब घटे भर अठै रे द्रश्य रा आनन्द ले'र ६ बज्यां तांई पूठा पूग्या। बाजार मैं

जरकिन, होजरी घर साड्यां आद री छोटी मोटी खरीदारी कर रे हाउस आया । फिरती बिरियां एक मैटाडोर आळे सूं आगले भोर ६ बज्यां गंगटोक चालणे री बात १००० रुपियां भाड़े मैं तै कर ली।

भोर मैं छः सूं पैलां ही चौक मैं पूगग्यां । गाडी आळे १०० रुपियां अग्रिम ले'र डीजल भरवायो । सवा छः सिक्किम खातर रवाना हुग्या । दिन निकळग्यो हो । मौसम भी सोवणो हो । दार्जिलिंग सूं गंगटोक री दूरी १२० कि. मी. है । दार्जिलिंग सूं ८ कि. मी. दूर घूम आणो पड़े। घूम सूं एक रस्तो सिलीगुड़ी जावै । दूजो जोर बंगलो, तिस्तापुल हुंर गंगतोक जावै श्रो रस्तो दुनियां रे सं'ष्ट पा'डी रस्ता में एक है । करीब ५० कि.मी. रो मारग रंगन अर तिस्ता नदी रै ठीक सारै बराबर चालतो रैवे। खासी दूर तांई रंगन नदी एकली इण सड़क रै डावे कानी नीचे आडे तिरछे प्रकृत प्रवाह मैं बैहती रैवे । नदी रै मोड़ दांई सड़क भी घूमती चाले । सड़क रै जीवणे पासै धान रा सीढ़ीदार खेत, रंग बिरंगा फूल अर हर्‌या बिरखां रे झुरमुट सूं खेतर नंदन बन री सोभा सूं मण्डो सो लागे। ५८ कि. मी. माथै तिस्ता नदी रो पुल आवै । अठै रंगन अर तिस्ता रो आछो संगम है । साढी नौ बज्यां अठे पूग्या हा । इण जाग्यां ही एक होटल मैं चाय नाश्तो लियो अर नदी रे दृश्य रो अवलोकन करता आगे रवाना हुया । रस्ते मे माली नाम री बस्ती आई । बाद में रंगपू । तिस्ता सूं रंगपू २३ कि. मी. दूर है । रोड़पो खोला (छोटी नदी) माथै अठै एक पुळ है । रंडपू रो बाजार छोटो सो है । पा'डी गांवा सूं खच्चरां माथै लद'र संतरा इण बाजार मैं आवै । आड़तिया घणकरा मारवाड़ी है । म्हे भी अठै संतरा ले'र खाया । रंगपू सूं ११ कि मी. दूर सिंगताम है। सिगताम मैं बस दसेक मिनट रुकी । २८ कि. मी. दूर देवराली रो स्टाप है, जको गंगटोक रै नेड़े ही है । अठै रोड वेज री बसां आद बड़ी गाड़्यां तो रुक जावै, मेटाडोर आद ने लाल चौंक नेड़े सैर रै मुख्य बाजार तांई ले जावण देवे । पाच घंटा मैं ग्यारहरा बज्यां नेड़े म्हे अठै पूगग्या ।

गंगतोक अति हर्यो छोटो अर प्राकृतिक सुंदरता सूं भर्यो म्यारी संस्क्रिति आळो अनूठो सैर है। भारी बिरखा अर घणी वनस्पति रै कारण प्रक्रति विग्यांनी ई नै 'हिमालय रो बगीचो' कैवे। टूरिस्टां री घणी भीड़ अजै ताईं अठै नी है। इण कारण नगर रै विकारां सूं अळगो है। बस्ती भारत रै छोटे बडे कस्बां सरीसी है। थोड़ी देर बाजार में घूमता लोवर रोड कानी निकल्या तो सामै 'बीकानेर मिष्ठान भण्डार' रो बोड देख'र आनंद अर अचरज हुयो। जा'र पतो लगायो तो हनुमानगढ़ निवासी एक अग्रवाल अठै भुजिया रसगुल्ला अर बीजी मिठाई नमकीन री दुकान लगा राखी ही। बीकानेर सूं आया जाण नै घणी मुनवार सूं नास्तो ... मोजन रो समय हूणे कारण खिमा मांग'र उण रै ... बैष्णव ढ़ावे मैं मोजन कर्यो। पतो लाग्यो कै ... भा व्यापार उद्योग मे खासा मारवाड़ी लोग है। आजीविका खातर राजस्थान रा पुरसार्थी अर मेहनती लोग कठै-कठै चल्या जावै अर परिस्रम कारण ही कित्ता सफल हू जावै, औ इण बात रो परतख प्रमाण हो।

सिक्खा ताईं पूठो दार्जलिंग पूगणो हो। समय थोड़ो हूणे सूं बरदी मोजन कर १२ बज्यां तिब्बती शोध सस्थान गया। इण री थापना प्राजादी रै बाद हुई। १ अक्टूबर १९५८ नै भारत रा पैला प्रधान मंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू इण रो उद्घाटन कर्यो। संस्थान विशेष रूप सूं बौद्ध साहित्य रै अध्ययन अर शोध सूं जुड़्यो है। अठै नेपाल, भूटान, थाई ... श अर भारत रै ठांमां सूं छात्र पढ़ण नै आवै। बौद्ध धरम रे हस्तलिखित ... यां रो अठै चोखो संग्रह है। दुरलभ पोथ्यां, पाण्डुलिपियां, जातक कथावां ... आधार ऊपर बणायोड़ा भगवान बुद्ध रा चित्राम, पंखा, मूरत्यां अर ... रव रै समय लोक नृतकां रै लगावण आळा मुखोटा, ड्रगन (अजगर) ... याद रा नमूना अठै मिलै। अठै'री कला माथै बौद्ध धरम अर संस्क्रिति ... विशेष परभाव है।

अठै रा लोग भी का तो आदिवासी पा'ड़ी जात्यां रा लोग है का मंगोलिया री जाति रा। आदि वास्यां मैं लस, गारो जाति रा लोग है। भोटिया अर गुरखा भी चोखी संख्या में है। लोग बौत भोळा, सरल, बा घणो परिश्रम करण आळा है। जीवन स्तर अति सामान्य है। शोध संस्थान मैं प्राचीन वस्त्र, पूजा रा उपकारण अर सामग्री आद रो डो संग्रह है। अनुसधान संस्थान रै ठीक नीचे पोधा, विरखां अर ओंस पौधो रो एक बड़ो अभयारण है। जकै में ओकिड री लगभग ४५० किस्मां अठै मिलै। अँ पौधा सिकिम री निजी वनस्पति ही जाणो। दूरो जगावां मैं अँ नी देखीजे। अठै रोडोड्रेडान, चैरी, शाल, बुधी, चीड़ अखरोट, शीशम, जयपत्र, कटस, कुट्टिमपत्र, देवदार, मैंग्नोलियां आद अनेक किसम रा विशाल पेड़ है।

गगटोक रो लघु उद्योग संस्थान भी देखण जोग है। आ सरकारी संस्थान है, जिण मैं हाथ सूं बण्योड़ी भांत-भात री चीजां राखी है। ऊनी कांबल, शाल, पट्टू, नमदा, गलीचा, होजरी रो सामन, स्कार्फ, बढ़िया अर बारीक तरास सूं बणायोड़ी लकड़ी री कलात्मक जिंसा, मेज, कुर्सी, पाटा, बच्चां रा भूला, सूती रेशमी वस्त्र, डोर्‌यां, लकड़ी रा रमतिया, छड़्‌या बेत री छाबड़्‌यां, टोप आद अनेक किसम री चीजां बणै अठै अर बिकै।

इण रै बाद सिक्किम रै प्रचीन अर परसिध पेमयांगत्से मठ नै देखण नै गया। ओ मठ खासो जूणो है। मठै रो काठ रो काम देखण जोग है। लाख अर रंग सूं मठ री भींतां अर छात माथै धार्मिक कथावां सूं सम्बन्ध राखण आळा सुन्दर चितराम है। रग इत्ता पक्का है कै केई सो साल उपरांत भी मिट्‌या नी है। मठ री बनावट पूरण रूप सूं बोध वस्तु कला रै आधार माथै है। कैवे के इण मठ सूं कंचनजंघा रो- द्रश्य बड़ो मोवणो लागै। सूरज री पैली किरण कचनजंघा माथै पैलां छोटे तारे दांई चमकती लागै, पछै धीरे-धीरे तारो बड़ो हूंतो सो लागे। फेर ऊंचे चढ़णे सूं तावड़ो दीसै।

समय थोडो हूणे सू ३ बज्यां वापस दार्जिलिग खातर रवाना हूग्या । गंगटोक ने अर्थ रे मुजीब 'ऊचे पा'ड' रो नगर देख्यो । आ वास्तव में हिमलय रे पूरब रे में १५२४ मी ऊचे डूंगरा मे कुदरत री सुरगी गोदी मे घूमावदार घाट्या, हरिया बिरखां अर जगली पुस्या री शात नगरी है। अठै री इमारतां रा रहस्यपूर्ण प्रतीक, बौद्ध बणगत रा स्तूप, फिरोजा पत्थरा रा कुण्डल काना में पैर्यां बूढा मिनख, बक्खू (लम्बो चोगो) का पागदा (एप्रेन दांई कमर रो वस्त्र) पैर्या लुगायां अर डरावणीया होकड़ा (मुखौटा) आद एक बिलकुल अळायदी संस्क्रिति रो रूप उजागर करें। पछमी देशा री उपभोक्ता सस्क्रिति री छाया सू अछूती इण पर्यटन नगरी मे जीवन री सैज, सरल प्रक्रत दशा नै देख'र सुख री इसी अनुभूति हुवै, जिके ने बतायो नी जा सकै ।

●

धरम क्षेत्र कुरूक्षेत्र

गीता रो अमर संदेश सुणावण आळी कुरुक्षेत्र री धरती धरम करम री पावन भूम बजे। स्रिष्टि करता रैं गुण, सुभाव अर मरम रो जित्तो सांतरो वखाण इण पोथी मे हुयो है, विसो दूजे धरम ग्रन्थ मैं नी मिलै। श्री वेद व्यास कैयो है कै गीता री शिक्षा रैं मुजोब जीवन वितावणो मानखे रो पैलो कर्तव्य है। कौरवां–पाण्डवां रो महायुद्ध कुरुक्षेत्र मैं हुयो ही हो, उण रो चितराम करण आळो 'महाभारत' धरम, अरथ अर मोक्ष री समपूरण शिक्षा देवण आळो इसो दर्शानिक ग्रन्थ है, जकै ने भारतीय चिंतन रो विश्वकोष कैयो जा सकै। कदै कुरुक्षेत्र नैड़ी सरस्वती नदी बैहती ही। इण रैं तट माथै ऋषि–मुनियां वेद, पुराण, स्म्रिति आद धरम शास्त्रां री रचना करी। अठै ईं मनु स्म्रिति लिखीजी। ईं ताईं पदम पुराण मैं कैयो है कै कुरुक्षेत्र री जातरा अर ब्रह्म सरोवर मैं सिनान करणे सूं ही नहीं इण री जातरा रैं विचार सूं ई राजसूय यज्ञ रो पुन्न मिलै। साथ्यां साथै इण धाम री जातरा रो आयोजन कर्‌यो।

३० सितम्बर १९७७ नैं बीकानेर सूं दिल्ली मेल सूं रवाना हुया। भोर मैं सरायरोहिल्ला स्टेशन उतर'र सब्जी मंडी पूग्या। अठै पंजाब मेल ८ बज्यां आवै। इण मैं बैठ'र २ बज्यां तक कुरुक्षेत्र पूंग्या।

दिल्ली सूं कुरुक्षेत्र करीब १६० कि. मी. है। पंजाब रो मुख्य मारग हूणे सूं इण रेल मारग माथै गाड्यां रो तांतो लाग्यो रैवे। सोनीपत, पाणीपत करनाळ आद इतिहास परसिध नगर इण मारग मैं आवै। सोनीपत जं. दिल्ली सूं ३५ कि मी. हुसी। एक घटे रो जातरा बाद अठै गाड़ी पूग जावै। रस्ते मैं छोटा बड़ा कळ–कारखाना गाड़ी सूं ई दीखता रैवे। मोदी नगर ग्रोद्योगिक बस्ती अर एटलस साईकिल रो कारखानो भी रस्ते मैं दीखै। सोनीपत मैं पावर लूम रा केई केन्द्र है। अठै री दर्‌यां, खेस, चादरा अर टैपैस्टरी रो सामान मजबूत ग्रर किफायती हुवै ग्रर उत्तर भारत रै सैरां मे खूब बिकै।

पाणीपत दिल्ली सूं ७५ कि. मी दूर है। कोई २.३० घंटा में गाडी बठै पूग जावै। महाभारत रै समै पाण्डवां जका पांच गावां री मांग करी सोनीपत ग्रर पाणीपत वां मा सूं ही दो गांव हा। हिन्दुस्तान रै भाग्य रो निरणय करण ग्राली तीन परसिध लडायां, ग्रठै ई लड़ीजी। सुल्तान इब्राहिम लोदी बाबर सूं अठै हार्‌यो, अर मुगल साम्राज्य री नींव पड़ी। दूजे युद्ध में अकबर हेमू ने हरायो। तीजी, ग्रहमद शाह अब्दाली ग्रर मराठां री लड़ाई भी अठै ई हुई। जकै मैं विजयी हू'र ग्रंग्रेजा भारत मैं आपरा पग जमाया। बताई जै कै मुस्लिम काल मैं पाणीपत धु आली अर शाह कलंदर आद सूफी संतां रो केन्द्र हो।

१२० कि. मी. रै नैडे करनाळ ज. है। कैवत रै ग्रनुसार करनाल प्रचीन काल मैं राजा करण रो बसायोडो है। करनाळ हरियाणा री परसिध मंडी भी है। अठै सिखां रो विख्यात मंजी साब गुरुद्वारो है। कैवे कै गुरु नानक देव सूफी सत कलंदर सूं ग्रठैई मिल्या हा। शेरशाह सूरी रै बणवायोडी सड़क माथै हूणै सूं उण रै काल री केई सराया अर कुंग्रा भी अठै देखण नै मिलै। ग्रागे रै रेल मारग माथै तरावडी रो स्टेशन है। जके रो पुराणो नाम ताराइन हो। ताराइन री लड़ाई इतिहास परसिध

है। इण सूं आगे नीलोखेड़ी स्टेशन है। ओ हरियाणा में औद्योगिक प्रशिक्षण रो सै सूं बडो केन्द्र है। नेहरुजी रै समै सूं ई बडा-वड़ा शिक्षण प्रतिष्ठान अठै बणना सरू होग्या हा। या प्रक्रिया ओजू तांई जारी है। नीलोखेड़ी सूं आगे अमीन गांव रो स्टेशन है। ईनै प्राचीन काल मैं अभिमन्यूपुर कैता। अठै एक पुराणो किलो है, जकै में पगलिया मडी बड़ी धुमां ईंटा आज तांई निकळै। अमीन सूं कोई ५ कि. मी. आगे कुरुक्षेत्र रो स्टेशन है।

कुरुक्षेत्र ज. छोटो सो स्टेशन है। पहले न. रै प्लेटफारम रै पछमाद पासे लोहे रै फैन्सिंग सूं बड़ा-वडा बाड़ा दांई आहता बणायोडा है। सूरज ग्रैण रै बखत जद लांखू जातरी अठै ढूकै, उण बेळा रेलगाडी में बैठण तांई अफरतफरी नही मचै, इण वास्ते समय मुजीब आयोडा लोगा नै नम्बर वार इण आहतां मैं भेळा कर देवे अर इस्पेसल रेलगाड्यां में बैठा'र रवाना करै। आ व्यवस्था जे दूजा मेळं मगरिये आळा बडा धामां अर ठामां मैं भी हुवै तो सुविधा हू सकै। कुरुक्षेत्र सूं एक ब्रांच लाइन नरवाणा हूंती जीद, हिसार, सरसा आद सैरां नै अठै सूं जोड़ै।

स्टेशन बारै निकळता ई एक साधारण सी धरमशाल है, अठै ठैरण री व्यवस्था हूगी। धरमशाल रै बारै ई छोटो मोटो बजार है। खाणे-पीणे रा होटल, ढाबा, परचून, मणियारी री जिंसा अर कपड़ै री दुकानां है। तांगां अर लोकल बसां रो स्टैंड भी अठै है। सिनान, भोजन, विश्राम रै उपरांत सिंझा पांच बज्यां पैदल ही धूमण फिरण नै निकळ्या। स्टेशन सूं एक सड़क गीता स्कूल अर रुद्र टाकीज हूंती करीब १.५ कि.मी दूर मार्य गुरुद्वारा छठी पातशाही पूगै। दूजी समानातर सड़क थोडो मोड खा'र नीलम टाकीज हूंती बड़े बस अड्डे पूंचै। गुरुद्वारे सू उतराद कानी एक सड़क मारग इण मैं मिळ जावै अर रेल क्रासिंग नै पार कर थानेसर सैर पूगै। दूजो मारग थोड़ो दक्षणाद मुड'र कुरुक्षेत्र तालाब का ब्रह्म सरोवर पूगै।

साम्प्रदायिक माहौल में जका लोग हिन्दू-सिखां नै फिरकां मैं बांटण री कुचेष्टा मैं लाग्योड़ा है, वांरे खातर इणा दोनां समुदायां री मूल एकता नै समझावण मैं इस्सा ठामां कित्ता मूल्यवान है, आ बात आपै ही समझ मैं आ जावै। सिख धरम गुरुवा रे अलावा सिख कवियां अर साहित्यकारां री भी कुरुक्षेत्र रचना थळी रही है। कवि भाई सतोख सिंह इण संभाग रे कैथल नगर रे राजा उदयसिंह रे आश्रम मे रैया। 'नानक प्रकाश' 'अध्यात्म रामायण' अर 'गुरु प्रताप सूरज' वां री सदा समरनजोग रचनावां है। ए रचनावां सिख सम्प्रदाय रा ही नही हिन्दी रा भी गौरव ग्रंथ है। राष्ट्र री एकता रा इसा स्रोत सराबण अर अनुकरण जोग है गुरुद्वारे रै ग्रथूयां सूं बतळावता जाणकारयां लेता ८ बज्यां नेड़ै पूठा धरमशाला ताईं चाल्यां।

आगले दिन भोर मैं ६ बज्यां सिनान दरसन तांई ब्रह्म सरोवर कानी रवाना हुया। नहाणे-वदलणै रा गाभा सागै लिया। गुरुद्वारे वांतो सागी रास्तो हो। आगे पश्चम दिशा मैं मुड़ण आळी सड़क सूं हैं प्राचीन मिंदर अर ब्रह्म सरोवर रा नुवां बण्यां घाट दीसण लागै। सड़क रै नेड़ै ही स्रवणनाथ मिंदर है, जकै नै पाण्डव मिंदर भी कैवे। मिंदर पांच सात सो बरस पुराणे लागै। सामै गीता भवन अर गौडीय मठ है। गौडीय मठ री चार दीवारी खासी बड़ी है। केई साधु संत अठै डेरो जमायां दीख्या। गीता भवन रो मिंदर भी प्राचीन है। रख रखाव रे अभाव मैं उजाड़ सो पड्यो है।

घाट माथै पूगणे पर चित्त प्रसन्न हू जावै। ब्रह्म सरोवर री विशाल निरमल झील रै चारू मेर लाल पत्थर रै पगोथियां रा ऊंचा इकसार घाट बण्या है। सै गूं ऊपरले चोड़े प्लेटफारम नुमा चबुतरे माथै चारूमेर लम्बी चौड़ी बारादरी बणायोड़ी है। बरामदे दाईं उण बारादरी री छात उपर सूं छायोड़ी हुणे कारण मेळे मे या आडे दिनां गर्म्यां मैं

चितराम पेंट कियोड़ा है । महाभारत री अनेक कथावां अर बीजा इसों रा प्रसंग भी मांड्योड़ा है । हाल मैं दरयां बिछायोड़ी है, माइक रो परबन्ध है । प्राय: भोर सूं सिझा तांई कीरतन, पाठ आद अठै चालता रैवे । एकांत अर शांत हुणे कारण मन नैं आध्यात्मिक शांति मिलै। मिंदर रै बारे प्याऊ अर बाग भी है । जठै जातरी बिसांई ले'र थकावट मिटाता दीसैं ।

दोपहर बाद सनेत तालाब मैं सिनान करणो । गुरुद्वारे सूं पैंली ई सड़क रै डावैं कानी दु:ख भजनेश्वर महादेव रो मिंदर है । मिंदर खामो जूणो है । कली रो काम तावड़े, बिरखा अर समय रे परभाव सूं काळो पड़ग्यो है । जीरण मिंदर नैं मरमत कराणे री जरुरत दीसै । सनेत सरोवर रो प्राचीन नाम कोई सन्निहित सरोवर कैवे । तो कोई संजयहृत कैवे । तालाब ब्रह्म सरोवर झील सूं तो खासो छोटो है । पण अठै रा घाट पुराणा । अर संगमरमर सूं बण्योड़ा है । सामैं पण्डां री भी चौक्यां है । पूंचते ही ठाम, जात आद री पड़ताळ करणिया केई पण्डा थारूं मेर झूमग्या । पछै मारवाड़ क्षेत्र रै पण्डे पुरोषोत्तमदास म्हाने सिनान पूजा, संकल्प, तरपण आद करायो । कुंकुम तिलक लगायो । सब जणा बानै सरधा सारु दिखणा दी है । बिणा म्हानैं नेड़े कनै रे मिंदरा रा भी दरसन कराया । सनेत तलाब री भी घणी मानता है । कुरुक्षेत्र आणे आळा जातरा वास्ते अठै भी सिनान करणो जरुरी मानीजै । नेड़े ही घ्रुव नारायण मिंदर, लिछमी नारायण मिंदर अर काली कमली आळे रा मिंदर है । काली कमली मिंदर आगे बड़ो भारी चोगान है जके मैं साधु सत प्राय: हरमेश ही रैवे पण सनेत अर ब्रह्म सरोवर रै बीचोबीच हुणे अर मिंदरा रै नेड़े हूणे कारण मेळै रै दिनां मे तो औ मैदान अचाखच भरयो रैवे, इसो बताइजो । सिझा सात बज्यां पाछा बसेरे पूग्या । भोजन उपरांत आसे-पासे घूमता रैया अर जल्दी आ'र सोग्या । दिन भर री थकान कारण पड़ता पाण ही नींद रा झोला लेवण लाग्या ।

रूप मैं जाणीजै। इण तालाव मैं सिनान अर मिंदर रा दर्शन कर बस सूं पिहोवा तीरथ गया।

पिहोवा अठै सूं ३० कि. मी. दूर है। पैंतीस चालीस मिंटां मैं बस पूगगी। समपूरण मारग घणी खेती आळो सरसब्ज इलाको है। धान अर ईख रा भूमता खेत तो दीखे ही हा, जाणकारां बतायो कै कपास, चणों, गेहू, सरसों, खोड़ियो अर दालां री खेती भी अठै नीपजै। इतिहास री दीठ सूं पिहोवा बौत पुराणो अर परसिध ठाम है। इण नगर रो प्राचीन नाम 'प्रिथुदक' हो। भारत रै पैले राजा 'प्रिथु' रै नाम सूं इण रो औं नाम पड़्यो। पुराणां अर महाभारत मैं इण रो पुन्न भूम रूप मैं उल्लेख मिलै। मानता आ है कै अठै कोई पापी सरोवर मैं सिनान करै तो पाप मुगत हो'र देवस्थान रो अधिकार बणै। कैवा है कै विश्वामित्र नै, जिका कै जलम सूं क्षत्री हा, अठै तपस्या करणै सूं 'ब्रह्मरिषि' री उपाध मिली ही। अठै रो छोटो सो सरोवर चारूं मेर पक्का घाटां अर मिंदर सूं घिर्‌यो है। क्रिसन, शिव, विष्णु सरस्वती रा केई छोटा बड़ा मिंदर अठै है। अठै रो वातावरण शांत है। जातरां री घणी भीड़ अठै नी रैवे। हरियाणा, पंजाब क्षेत्र रा लोग गयाजी रै तीरथ दांई आपरे पुरखां रा पिण्डदान कराणने अठै ढूकै। पण पण्डा री लूट अठै देखण मैं नी आवै।

आजकाल पिहावो अनाज री चोखी मण्डी है। करीब ४० हजार रै नेड़े बस्ती हुसी। अठै भी सिखां रो चोखो बड़ो गुरुद्वारो बस स्टेड रै सारै ही है। पटियाळा सूं इण री सीमा लागे, ईं कारण अठै सिक्खां अर पंजाबयां री संख्या भी खासी है। सिखां अठै जमीनां भी ले राखी है। भाईचारे सूं दोन्यू सम्प्रदाय मेल-मिलाप अर आपसदारी सूं जीवन बितावै। दोपारी रो भोजन अठैई एक वैष्णव भोजनालय मैं कर्‌यो। नरवाणा कुरूक्षेत्र चंडीगढ़ मुख्य मारग रै दोन्यू पासे औ कस्बो बस्यो है।

रिवसो कर सीधा थाणु तीरथ पूग्या। इण रो पुराणो नाम स्थाणीश्वर सरोवर है। सारे ही भगवान शिव रो प्राचीन शिवालय है। सरोवर अर मिंदर दोन्यू जीरण हालत में है। घाट टूट चुक्या है अर गाद भरणे सूं तळाव जोहड़ दांई हुग्यो है। पाणी सिनान करण जोग नी है। मिंदर में भी नित पूजा उपासना होती नी लागै। पण बतावै कै काती माह में पूरे महीने अठै मेळो भरीजै। वामन पुराण में जिकर आवै कै राजा वेन रो कोढ़ इण सरोवर रै सिनान सूं ही दूर हुयो हो। कैवत आ भी है कि महाभारत री लड़ाई सूं पैलां अर्जुन भी अठै सिनान कर युद्ध री सफलता वास्तै भगवान शंकर री उपासना करी ही।

अठै सूं थोड़ी दूर ही सरस्वती रो पुळ अर मिंदर है। जुणे पुळ अर मिंदर रा अवशेष तो मौजूद है पण नदी तो बौत पैलां सूं ही सुखगी है। हां, नदी रो आगोर आंजू भी दीसै। बरसात में नाळै दांई पाणी भी इण में रैवे। कालिदास रै मेघदूत में इण नदी अर कुरुक्षेत्र रै गुण गान में बौत कुछ लिख्यो है। अठै आम अर जामुन रा केई बाग आज भी है। पाछा कस्बे कानी घूम्या। रस्ते में सिखां रै एक गुरुदारे अर देवी रै पुराणे मिंदर रा दरसन कर्‌या। स्थाणीश्वर मारग रै दखणी नुकै एक सूफी संत शेख चेहली रो मकबरो भी है, जकै नैं भूल सूं लोग आजकाल 'शेखचिल्ली' रो मकबरो कैवण लागग्या है। इण भांत मिंदर, गुरुद्वारे अर मकबरे री मौजूदगी भारत रै सर्व धरम समभाव अर समन्वित संस्क्रिति रो रूप उजागर करती लागै। राम तीरथ मारग री एक गळी सूं थानेसर सैर में दाखिल हुया। आज तो थानेसर ५० हजार री बस्ती रो कस्बो ही है पण देश रे इतिहास में इण रो अनूठो अर महत्व रो स्थान रैयो है। सातवीं सदी में ओ विशाल नगर राजा हर्षवर्धन री राजधानी ही। स्थाणीश्वर एक जनपद हो। राजा हर्ष अर बांरी बैन राजश्री उदार अर त्यागी सुभाव रा संत, साध्वी व्यक्ति दांई हा। हर साल बै आपरे खजाने री लूंठी रकम ब्राह्मणां, गरीबां अर जरुतमंदां में बांट

देता। बाणभट्ट जिसा कवि इण राज्य मैं सरक्षण पायो। 'हर्ष चरित' अर 'कादम्बरी' जिसा अमर ग्रंथा री रचना भूम आई नगरी ही। हर्ष रैं जमाने मैं बणज व्यवसाय, कला, स्थापत्य, साहित्य, शिक्षा अर संस्क्रिति रैं क्षेत्र मैं अठै नया-नया कीरतीमानां री थापना हुई। समुद्रगुप्त पछैं हर्ष ही इसा सम्राट हा जकां भारत नैं एकसूत्र मैं बांधणे री चेष्टा कीती।

महाभारत मैं एक जाग्यां लिख्यो है गंगा रै जळ रैं सेवन सूं मुगती हुवै, कासी री भूम अर जल मैं मोक्ष देणे री खिमता है पण कुरूक्षेत्र रैं तो जल, थल अर पून तीन्यू मैं मानाखे नैं पार लंघाणे री शक्ति है। दिल्ली संग्रहालय रे एक शिलालेख मैं लिख्यो :- 'देशोऽस्ति हरियाणाख्यः पृथिव्या स्वर्गसन्निभ:' अर्थात् धरती माथैं हरियाणो स्वर्ग रो दूजो नाम है। आपरी सांस्क्रितिक धरोवर, पावन तीरथां, धामां, क्रिषि उत्पाद री बोळायत, पशुधन री श्रेष्ठता, हरियावळ, सूरवीरता, कर्मठता अर सम्पन्नता री इण धरती नैं परतख इणी रूप मैं देख'र आज भी आ कैवत सच्ची ठैरती लागै। जद-जद इण जातरा री झांक्यां दिमाग मैं उभरैं मन अर आत्मा मैं आनन्द री लहरां गोता खावण लागै।

●

गोपाल री व्रज भूम

क्रिसन भगवान रै सम्पूरण जीवन सूं जुड़योड़ी व्रज भूमी री आखे भारत में घणी मानता है। ग्वाळिये दाई गायां चरावण सूं लगा'र गीता रै कर्मयोग रो गभीर संदेश देणे आळै योगीराज क्रिसन रै जीवन अर गुणां रे विकास रो घणो श्रेय इण क्षेत्र नै ई रैयो है। व्रज भूमी भारत री ओरण संस्क्रिति रो जीतो जागतो प्रतीक है। कुदरत, इंसान अर बीजा प्राणियां रे एकै सागै आनन्द सूं सहजीवन बिताणे री आस्था अठै प्रगट हुई है। सत कवियां जमुना रे तट, वट बिरख, गोकुल री कुंज गळ्यां, बांसुरी वादन, कोयल री कूक, चंदा री चांदणी आद रै रूप में इण सैमूळै खेतर री प्राक्रतिक सोभा रो ई बखाण करयो है। क्रिसन रो सिणगार वैजयंती री माळा अर मोर पंखा रे मुगट सूं हुवै, वां री प्रिय वाद्य बासरी है, उणां री सोभा ने घण-दामण का नील कमल सूं उपमा दरीजै। गोधन, गोचारण अर बन-बिहार क्रिसन री मन भांवती क्रीडा है। गोकुल रो हरख, गोप्यां रा ओळमा, जसोदा री ममता अर कोड़, माखन चोरी, जमुना तट रा रास एकै कानी व्रज रे जन जीवन रै तौर तरीकां रो खुल्लो चित्राम है, तो दूजे कानी प्रकिति सूं मानखे रे अटूट रिश्ते, समता री भावना, अनीति सूं लड़ने री क्रिसन री खिमता, धरम री पालना, कामनावां नै त्याग'र करम करणै री भावना आद में भारतीय

जीवन री दीठ अर मानखे रे आदर्शां री आंक करीजी है। इण सब कारणां सूं ईं खेतर सूं सै भारत वासियां रो गैरो लगाव हूणो सोभाविक है।

१४ नवम्बर १९७९ मैं राजस्थान लोक समिति री कार्यकारिणी समिति री एक बैठक भरतपुर मैं हुई। बीकानेर सूं चालती वखत हो साथ्यां समेत आगे मथुरा ब्रिंदावन जावण रो भी कार्यक्रम बणा लियो। मीटिंग दो दिन चाली। १६ तारीख नैं भोर मैं भरतपुर पक्षी–बिहार देखण नै गया। मीटिंग सूं ही डा. मोहनसिंह मेहता अर केसरीमलजी बोरड़िया भी साथै चाल्या। डा. मेहता राजस्थान विश्वविद्यालय रा कुलपति रैया हा। बां रा कोई शिष्य उण दिनां पक्षी ओरण रा प्रभारी हा। बां नै पैला सूचना दे दी हो। अठे पूगतां ही बां सब रो घणो सम्मान कर्यो अर नांव निकळवा'र झील मैं दूर तांई पक्षी देखावण नैं म्हरे सागै चाल्या। एक चोखी बड़ी दूरबीन भी बां साथै ले ली।

भरतपुर रै केवलादेवधाना राष्ट्रीय पक्षी ओरण री झील कुल २९ मील लम्बी है। झील मैं सैंकडूं छोटा-बड़ा रूंख है। झील रै किनारे बड़ो बगीचो बणायोड़ो है। जद रूस देश रै साइबेरिया आद क्षेत्रां मैं घणी टंड पड़ण लागै तो बठै सूं सैंकडूं किस्म रां पंछी हजारूं री संख्या मैं उड'र रमती ठंड री जाग्यां आ जावै। इयां तो बै दिल्ली, अलवर, गजनेर आद अनेक जाग्यां पूगै। पण भरतपुर री झील, अठै रो तापमान अर तलाव मैं मछल्यां आद री मौजूदगी री सुविधा रै कारण जित्ती तादाद मैं पक्षी, अठै आवै उत्तो संख्या मैं और कठेई नीं पूगै। अनेक देसां सूं करीब २० हजार पंछी आये साल अठै ढूकै। जिणा मैं ब्लैक आइसिस, साइबेरिया रा सारस, ओपन बिल, साइबेरिया रा क्रेन, पेंटेड स्टार्क, कारमेरट ग्रेरन, पोंड आद मुख्य है। तळाव में हरमेस घास अर पाणी रैणै सूं अनेक भांत रा जीव जंतु अर नानी मछल्यां उत्पन्न हुवै अर पक्षां नै आछो भोजन मिलतो रैवे।

अधिकारी महोदय आ बात भी बताई कै जको पंछी ईं साल अठै रूस मायं बैठे वो पाछले साल मळै पण सागी रूस मायं आ'र आतो बसेरो करै। पखियां री पैछाण वास्ते वांरे गळे में एक पट्टो पा'र उण मायं नम्बर लिख देवे। जकै सूं वां री सिनाखत हू सकै। दूरबीन सूं देखण सूं पक्षी बड़ा अर नेड़े दीसै। जठै ताईं निजर मावै वठै तांई दूर तक पखी ही पखी दीसै। अठै इण पखियां रै प्रजनन, सुभाव, बोली, उड़ने आद सम्बन्धी बातां री बारीकी सूं अध्ययन भी कियो जावै। जद मार्च महीने मैं गरमी पड़नी सरू हुवै पै पांखो पूठा आपरे देश चल्या जावै। औ सिलसिलो अटूट क्रम सूं चालतो रैवे।

पखियां री इण विलक्षण यातरा सूं केई बातां मन मस्तक मैं मैं आवै। इंसान नै यूं तो सै सूं श्रेष्ठ मानीजै पण अकळ नैं छोड़ दूजी केई कुदरती खिमतावां मैं पखी इंसानां सूं भी आगै दीसै। औ तो परतख ही है कै पखी ऊंचे अनन्त आभै मैं आजादी सूं उड सकै। पण बिना कैई मारग दरसावणे आळे भोमिये रे सहयोग रै पै पखी हजारां मील री अनथक जातरा किंया पूरी कर लेवे? दिशा अर ठांम री किसी अनूठी जाणकारी आंनै हुवै? अजूबे री बात है कै पै पखी झुंड बणा'र भेळा हू'र आवै। सहयोग अर सहजीवन मानखो आं सूं सीख सकै। भरतपुर पखी बिहार मैं निरखणो एक नुवो अनुभव हो। आना में म्हे करीब ३ घण्टा घूम्या।

ग्यारह बज्यां नेड़ै बस सूं डीग रवाना हुया। डीग रो रस्तो हर्‌यो-भर्‌यो है। मारग मैं सड़क रै दोन्यू कानी बिरखा री पांत साथै चाले। अठै री बोली मैं राजस्थानी अर ब्रज दोन्यां रो मिश्रण है, ब्रज रो परभाव बेसी है। ३७ कि. मी. री आ दूरी पूण घण्टे में पूरी कर ली। भरतपुर, दिल्ली मुख्य मारग मार्थं बसोड़ी आ नगरी कदै भरतपुर रै जाट राजावां री राजधानी ही। सतरवीं सदी मैं जाट राजा बदलसिंह

ई. १७२२ में इण री निरमाण सरू करायो। पछै उण रै उत्तराधिकारी परसिध राजा सूरजमल इण में खपसूरत बांगा, महलां, तलावां ग्राद रै कला पूरण योग सूं ई री सुदरता में चार चांद लगाया। डीग सैर री सड़कां सीधी ग्रर चौपड़ काटती है। जयपुर ग्रर डीग प्रायः एकै समय बण्योड़ा है। दोन्यां री बणगत ग्रर समकोण सडकां मरीसी लागै।

डीग रा जल महल अचरज मैं नाखण अळी शिल्प कल्पना ग्रर कारीगरी रा नायाब नमूना है। आं नै बण्यां ढ़ाई सौ बरस बीत्यां पछै ओजूं भी ग्रै भवन नुंवा सा लागै। बणगत अर फूटरापे मैं ग्रै लाल किले ग्रर आमेर रे महलां सूं टक्कर लेवै। बतावै कै हजारां मजदूरां इकलग आठ बरसां री महनत ग्रर साधना सूं इणां रो निरमाण करयो हो। भवनां रै सामैं पाणी रा बडा–बड़ा तळाव अर पग पग छेड़े फवारां री व्यवस्था हुणे रे कारण ग्रां नैं जल महल रै नाम सूं बतलावै।

महलां रो धोरी मौड़ो सिंघ पोळ बजै। इण पोळ माथै गोपाल ग्रर गऊ माता री मूरतां है, जिण सूं जाट राजावां री वैष्णव भगती ग्रर गौ भगती रो पत्तो लागै। पोळ मांय बड़तां ही दोन्यूं मेर हर्‌या भर्‌या विशाल मोवणा बगीचा है। बागां मैं अनेक भांत री वनसपती पेड़ पौधा, झाड़, बेलां, बयार्‌यां, सुरंगे पुसपां री पांत, सतरंगो जल छोड़तां फवारां री सैकडूं धारां इण नै साधारण बाग री ठौड़ नंदनघन सो रूप देवतो लागै।

इण फंवारा मैं जल पूगावण री बड़ी ग्राछी वैज्ञानिक व्यवस्था है। जल यंत्रां रै निरमाण मैं मध्य काल मैं देश री कला खासी उन्नत ही, ग्रै महल इण बात रा परतख प्रमाण है। किसन महल अर सूजर महल रै बीच पैले तल्ले माथै ३५ फुट री ऊंचाई माथै एक बड़ो हौद बण्योड़ो है। हौद री लम्बाई १४० फुट चौड़ाई ११० फुट ग्रर गैराई सांढी छः फुट है। इण सूं पाणी री सात सो नळक्यां जुड्योड़ी है। नीचे बड़ा–बड़ा कुआं

है। कुआं मांय सूं पुराणे समय में बळ्यां सूं पाणी खींच'र आं होदां भरता। मबै बिजली री मोटर सूं औ काम हुवै। थोड़ा दिनां पैलां ई बारा पाल री एक किताब 'अठारवी सदी में भारत में विज्ञान मर टेक्नोलोजी' नाम सूं प्रकाशित हुई है, जकी घणी चर्चा रो विषय भी बणी है। इण पुस्तक में मध्यकाल मे देश रे वैज्ञानिक खोजां री प्रामाणिक श्रेष्ठता रो कथन हुयो है। इण कड़ी में आं जल यंत्रा नै भी गिणयां जा सकै। होदं री नलकबां हटा'र वांनै अनेक सूखे रंगा री पोटल्यां नाख'र पाणी नै रंगीन बणाणे री व्यवस्था है।

फवारां रै एक कानी केशव महल है। कवे इण महल री दुछत नै पोली राख'र उण में गोळ भाटा राख्योड़ा हा। पाणी रै प्रवाह सूं बे भाटा आपस में टक्कर खाता अर तेज बिरखा अर बादळां रै गरजणे री आवाज करता। बाद में एक अंग्रेज अधिकारो इण तकनीक री खुश जाणण खातर छात नै एक कानी सूं मगवा'र जाणकारी लेणी चावी। जकै कारण इण में खराबी आगी, अर पछै सुधार नी सकी। फवारा री घणी आछी व्यवस्था तो निसात, शालीमार, पिर्जोर आद मुगल बगीचां में भी है। पण केशव महल जिसी आ विशेषता कोई दूजी जाग्यां नी है। स्थापत्य री दीठ सूं इणा नै अजूबो ही कैयो जा सकै है।

डीग में केई सुंदर महल है। बां में गोपाल महल, किसन महल, सावण भादो महल खास आकर्षक अर मसहूर है। बिचोवळे बागां रै ऊपर गोपल महल है। औ महल पूरब कानी एक मंजलो, उत्तर-दखण में दुमंजलो अर पछमाद पासे चौमंजलो है। मांय बड़तां ही बड़ो दरबार हाल आवै। सितंतर फुट लम्बो अर चोपन फुट चोड़ो औ हाल दिल्ली अर आगरा रै दीवाने आम दाई लागै। इण री छात, खम्मा अर भींता माथै खुदाई रो चोखो काम है। महरावां माथै वेल बूंटा अर जाली झरोखा रो बोत महीम अर सोवणो काम है। जाळयां लारै स्यात राण्यां रै बैठण रो परबंध हुंवो। महरावां में बालकोन्या बणयोडी है, मै भी बैठण नै काम

झांकी। इण महल रै मांय देसी रेसोवडो अर सोवण आळो महल भी सायै ही है।

गोपाल महल नै उतराद दिखणाद दो दूजा महल है, जकां नै सावण-भादौं कंवे। दूर सूं देखण में म्रै नाव दांई दीसै। सामैं तालाब है ही। असली नौका रो भरम हुवै। गोपाल महल रै सामैं मकरांणे री बड़ी चौकी मायं मकराणे रो ई एक सुंदर हींडो है। कंवे औ हींडो मूल में शाहजंह री चांवती बेगम मुमताज रो हो। ई. १७६८ में जाट राजा जवाहर मल इंनै दिल्ली री लड़ाई में लूट'र अठै लायो।

गोपाल महल रै कनै सूरज महल है, जको मकराने सूं बण्यो है। इण मायं रंगीन बेल बूंटां रो आछो काम है। सूरज महल रै लारै दुमंजलो हरदेव महल है। इणां री छात छतरी री तरां है। झरोखां मायं खुदाई री तरास अर उभार रो चोखो कलापूरण काम उकेर्योड़ो है।

बिचोळिये बाग कनै किसन महल है। इण में भी पत्थर मायं खुदाई रो आछो काम है। इण महल री लारली भींत में बेल बूंटां अर जाळी रै काम नै देखणियां देखता ही रह जावै। इण भांत अनेक अनूठा महलां, स्थापत्य री श्रेष्ठ कल्पनां, कर कारीगरी अर रंगीन फवारां री इन्दधनुसी पात कारणै मौ बाग अर म्रै महल सुरग री अणछुई शोभा धरती मायं परतख दिखाणे री खिमता राखै। राजस्थान री धरती कसा री खान है। डीग रा महल ई खान रा बेशकीमती मोवणा मोती है।

डीग सूं मथुरा कोई १५० कि. मी. दूर है। तीन घण्टा में मथुरा पूगग्या। बस अड्डे रे ठीक लारै सिंधी धरमशाल है। वीमे टिक्या। राजस्थान रै भरतपुर अर उत्तर प्रदेश रै मथुरा, आगरा क्षेत्रां नै मिला'र व्रज रो क्षेत्र बणै। ई. पू. छठी सदी सूं ई व्रज एक गणपद हो, जकै री

राजधानी मथुरा ही। इण कारण आ बौत जूणी नगरी है। भगवान क्रिसन री जलम भूम होणे रे कारण वैष्णवां रो बड़ो तीरथ है। प्राचीन इतिहास, राजनीति अर सांस्क्रिति री रंगथली रैणे री वजह सूं आ नगरी सदा मानता अर आकरषण री जाग्यां रैई है। अठै रै मिंदरा रा शिखर, कळश अर धुजावां अभी छूंती निजर आवै। जमुना नदी रै संगमरमर रे सोवणा घाटां माथै सिनान, ध्यान, दान दिखणा रा आयोजन हूंता देवै। मथुरा जमुना रै पच्छमाद किनारे बस्योड़ो है। दिल्ली, मुम्बई मुख्य मारग माथै, जिले रै ठीक बीच मैं। इण रा चार रेल स्टेशन है। मथुरा, मथुरा छावनी, भूतेश्वर अर मसानी। डीग रे अलावा, भरतपुर, हाथरस वन्दावन, गोकुल, महावन, बलदाउ, बरसाना, नंदगांव, गोवरधन आद ई भी मथुरा नगरी सड़क मारग सूं सीधी जुड़योड़ी है।

इतिहासकार क्रिसन जलम री घटना नै १५०० ई. पू. री कूंतै उण बखत सूं आज तांई आ नगरी राजनीति अर संस्क्रिति री संगम बणी रैई है। मौर्यकाल मैं भी इण री प्रसिद्धि अर समृद्धि रा दिनमान घणा ऊंचा हा। शक कुसाण अर गुप्त काल मैं कला, साहित्य अर स्थापत्य आद मैं इण री भळै उन्नति हुई। ई. पू. दूसरी सदी तांई कुसाण राज्य री आ खास नगरी ही। हिन्दू, जैन अर बौद्ध धरम री सैं सूं अनूठी मूरतां पैलम पैल अठैई घड़ीजी। कुसाण काल री पत्थर री कलापूरण खुदाई रा खम्भा जूणे जुग री कला रा चोखा नमूना मानीजे। धार्मिक अर आध्यामिक दीठ सूं तो क्रिसन रै जीवन सूं सम्बन्ध राखण आळे घणकरा धाम तो अठै है ही। इण वजह सूं आज तांई मथुरा उत्तर भारत रै परसिध नगरां मैं गिणीजै।

दूजे दिन दिनुगे मथुरा संग्रहालय देखण नै गया। संग्रहालय ब अड्डे अर धरमशाल सूं २०० कदम माथै डैम्पीअर बाग मैं बण्योड़ो है औ अजायबघर ई. पू ४०० सूं लगा'र १२०० ई. रै बीच खास तौर ई

कुसाण अर गुप्त काल री मूरतां रो सै सूं सुंदर अर अमोल सग्रह है। इण संग्रहालय रो एक बड़ो कक्ष दो भागां में बांट्योड़ो है। सग्रहालय हजार डेढ़ हजार बरसां रै इतिहास, कला, जन जीवन अर संस्क्रिति रो परतख खुलासो करतो दीसे। कुसाण काल रै लोग लुगायां रै आनन्दपूरण जीवन रै अनेक पाखां नै अठै राख्योड़ा खंभा में सुंदर ढग सूं उकेर्योड़ो है। आं परथर खण्डां री खुदाई सूं कुसाण काल री सामाजिक, धारमिक अर आरथिक दशा माथै सांतरो प्रकाश पड़ै। मथुरा रा कारीगरां नाचती, गावती, सिणगार करती अर खेलती महिलावां री अलग-अलग मुद्रावां नै परथरां में जीवतो जागतो कलापूरण आकार दियो है। बुद्ध भगवान री अमय मुद्रा री केई मुरतां भी घणी चाखी है। निरवाण पाणे बाद री एक मूरत में भगवान बुद्ध नै घणै स्वस्थ अर ओजस्वी रूप मे दिखायो है, जकै सूं कलाकार भन्तस री सुंदरता अर बारै री स्थूल सुदरता रो समन्वय दिखायो है। बुद्ध री घुंघराली केश सज्जा री भी एक अनूठी मूरत अठै है। गुप्त काल रा तोरण अर केई श्रेष्ठ कलाक्रितयां में गिणीजण वाळी मूरतां भी इण संग्रहालय में भेळी कर्योड़ी है।

अठै री केई मूरतां खण्डित अर भांगोड़ी भी है। मध्ययुग में मथुरा री सम्पन्नता री ख्यात सूं ई. १०१७ में महमूद गजनवी अर ई. १५०० में सिकदर लोदी इण नै लूट्यो अर मिंदरा नै तोड्यो। ऐ मूरतां धारमिक कट्टरता अर साम्प्रदायिक उन्माद री काणी कैंतो दीसे। छोटो हुंते थकां भी मथुरा रो अजायबघर कला अर प्राचीन मूरतां री दीठ सूं घणो मूल्यवान है। अठै दो घण्टा तांई निरखण देखण पछै द्वारकाधीश रै मिंदर खातर नीसर्या।

डम्पीयर बाग रै उतराद एक सड़क मथुरा रै मुख्य बाजार रै बीचोबीच जावै। जीवणे हाथ सड़क रै नेड़े ही महादेवजी रो एक पुराणो छोटो मिंदर है। जलेरी अर शिवलिंग सुंदर है। कलश सूं दूध मिल्यो

राजधानी मथुरा ही। इण कारण आ बीत जूणी नगरी है। भगवान क्रिसन री जलम भूम होणे रे कारण वैष्णवां रो बड़ो तीरथ है। प्राचीन इतिहास, राजनीति अर सांस्क्रति री रंगथली रैणे री वजह सूं आ नगरी सदा मानता अर आकरषण री जाग्यां रैई है। अठै रै मिंदरा रा सिखर, कळश अर गुम्मटां अभी छूंती निजर आवै। जमुना नदी रै संगमरमर रे सोवणा घाटां माथै सिनान, ध्यान, दान दिखणा रा आयोजन हुंता देवै। मथुरा जमुना रैं पच्छमाद किनारे बस्योडो है। दिल्ली, मुम्बई मुख्य मारग माथै, जिले रैं ठीक बीच मैं। इण रा चार रेल स्टेशन है। मथुरा, मथुरा छावनी, भूतेश्वर अर मसानी। डीग रे अलावा, भरतपुर, हाथरस, वन्दावन, गोकुल, महावन, बलदाऊ, बरसाना, नंदगांव, गोवरधन आद सूं भी मथुरा नगरी सड़क मारग सूं सीधी जुड्योड़ी है।

इतिहासकार क्रिसन जलम री घटना नै १५०० ई. पू. री कूंतै। उण बखत सूं आज तांई आ नगरी राजनीति अर संस्क्रति री संगम बनी रैई है। मौर्यकाल मैं भी इण री प्रसिद्धि अर समृद्धि रा दिनमान घणा ऊंचा हा। शक कुसाण अर गुप्त काल मैं कला, साहित्य अर स्थापत्य आद मैं इण री भळै उन्नति हुई। ई. पू. दूसरी सदी तांई कुसाण राज्य री आ खास नगरी ही। हिन्दू, जैन अर बौद्ध धरम री सैं सूं अनूठी मूरतां पैलम पैल अठैई घड़ीजी। कुसाण काल री पत्थर री कलापूरण खुदाई रा खम्भा जूणे जुग री कला रा चोखा नमूना मानीजै। धारमिक अर आध्यामिक दीठ सूं तो क्रिसन रैं जीवन सूं सम्बन्ध राखण आला घणकरा धाम तो अठै है ही। इण वजह सूं आज तांई मथुरा उत्तर भारत रैं परसिध नगरां मैं गिणीजै।

दूजे दिन दिनुगे मथुरा संग्रहालय देखण नैं गया। संग्रहालय बस अड्डे अर धरमशाल सूं २०० कदम माथै डेम्पीअर बाग मैं बण्योडो है। ओ अजायबघर ई. पू ४०० सूं लगा'र १२०० ई. रैं बीच खास तौर सूं

कुसाण अर गुप्त काल री मूरतां रो सै सूं सुदर अर अमोल संग्रह है। इण संग्रहालय रो एक बड़ो कक्ष दो भागां में बांट्योड़ो है। संग्रहालय हजार डेढ़ हजार बरसां रै इतिहास, कला, जन जीवन अर संस्क्रिति रो परतख खुलासो करती दीसै। कुसाण काल रै लोग लुगायां रै आनन्दपूरण जीवन रै अनेक पाखां नै अठै राख्योड़ा खंभा मैं सुंदर ढंग सूं उकेर्योड़ो है। आं पत्थर खण्डां री खुदाई सूं कुसाण काल री सामाजिक, धारमिक अर आरथिक दशा माथै सांतरो प्रकाश पड़ै। मथुरा रा कारीगरां नाचती, गांवती, सिणगार करती अर खेलती महिलावां री अलग-अलग मुद्रावां नै पत्थरां मैं जींवतो जागतो कलापूरण आकार दियो है। बुद्ध भगवान री अभय मुद्रा री केई मूरतां भी घणी आछी है। निरवाण पाणे बाद री एक मूरत मैं भगवान बुद्ध नै घणे स्वस्थ अर ओजस्वी रूप मे दिखायो है, जकै सूं कलाकार अन्तस रा सुंदरता अर बारै री स्थूल सुदरता रो समन्वय दिखायो है। बुद्ध री घुंघराली केश सज्जा री भी एक अनूठी मूरत अठै है। गुप्त काल रा तोरण अर केई श्रेष्ठ कलाक्रितयां मैं गिणीजण आळी मूरतां भी इण संग्रहालय मैं भेळी कर्योड़ी है।

अठै री केई मूरतां खण्डित अर भांगोड़ी भी है। मध्ययुग मैं मथुरा री सम्पन्नता री ख्यात सूं ई. १०१७ मैं महमूद गजनवी अर ई. १५०० में सिकदर लोदी इण नै लूट्यो अर मिंदरा नै तोड्यो। अै मूरतां धारमिक कट्टरता अर साम्प्रदायिक उन्माद री काणी कैती दीसे। छोटो हूंते थकां भी मथुरा रो अजायबघर कला अर प्राचीन मूरतां री दीठ सूं घणो मूल्यवान है। अठै दो घण्टा तांई निरखण देखण पछै द्वारकाधीश रै मिंदर खातर नीसर्या।

हम्पीअर बाग रै उतराद एक सड़क मथुरा रै मुख्य बाजार रै बीचोबीच जावै। जीवणे हाथ सड़क रै नेड़े ही महादेवजी रो एक पुराणो छोटो मिंदर है। जलेरी अर शिवलिंग सुंदर है। कलश सूं दूध मिल्यो

जल लिंग रो अभिषेक करतो रेवै । कोई १ फरलांग री दूरी मार्थ बाजार में ई द्वारकाधीशजी रो पुराणो बड़ो मानीतो मिंदर है । ई रो निरमाण ग्वालियर रा सेठ गोकुलदास ई. १८१४ में करायो । दूजा वैष्णव मिंदरां दांई इणरी अर्चना पूजा भी केई बार हुवै । मंगला, श्रृंगार, भोग, शयन आद खातर केई बार मिंदर रा पट खुल्ले अर बंद हुवै । मिंदर में पत्थर री ऊंची चोकी है । बीच में पीतल रा छड़ खड़ा कर चोकी रा दो हिस्सा कर दिया है । एक कानी मिनख अर दूजै कानी महिलावां रै दर्शन री व्यवस्था है । परिक्रमा में गणेश, लिछमी, शिव, पारवती आद देवी-देवतावां रा छोटा बड़ा मिंदर है । इण मिंदर री महिमा अर मानता घणी है । साल भर भगतां री भीड़ अठै लागी रेवै । पण जन्माष्टमी अर होली माथै बड़ो मेलो लागै । देश रै समूळा प्रदेशां सूं सरधालू अठै पूगै । इण क्षेत्र री रास-लीला देखण नै लाखूं लोग पूगै अर आनन्द उल्लास री लैर में डूब भगती रस रो स्वाद लेवै ।

दोपारे बाद क्रिसन जलम भूमि रै परसिध मिंदर नै देखण नै गया । एक रस्तो बाजार मारग हू'र दक्षणाद कटरा केशवदेव जावै । दूजो बस स्टैंड सूं दखण पछम मुड़तो जलम भूमी पूगै । जलम भूमी रो मिंदर बस स्टेशन सूं कोई २.५ कि. मी. दूर हूसी । ओ मथुरा नगर रो हिन्दुवां रो सै सूं बड़ो पावन धाम गिणीजै । क्रिसन भगवान रो जलम अठै ई हुयो । मिंदर ऊंची चोकी माथै बणयोड़ो है । मूल मिंदर नै आक्रमण कारयां केई बार तोड़यो अर सरधालू इण रो वार-रै जीरणोधार करांता रैया । पैलां महमूद गजनी अर दुजा शासकां इण रो ध्वंश करयो । पछै १६६६ में ओरंगजेब अठै एक मस्जिद बणवा दी जकी पूरब में अजै तांई खड़ी है । मिंदर रै दखणाद भाग में बडो चोगान है । सामै ऊंचे पगोथियां माथै स्टेज रंगशाला दांई बण्योडी है । धारमिक परवां माथै अठै क्रिसन-लीला आद हुवै । चोगान में हजार लोग बैठ'र आं आयोजनां रो आनन्द उठावै । जीवणे हाथ नै पछम दिशा में एक बरामदे में केई दूकानां

लागै जठै, परसाद मूरतां, चित्र, मेंहदी, कुकुम आद जिन्सा बिकै । इण दूकानां सूं चोकी आगै चाल'र पूर्व कानी केई मिंदर है । महादेव अर विष्णु भगवान रो चोखी मूरतां है । मस्जिद रै सारै नीचे गरभ घर मैं क्रिसन जलम भूमी है । ओ मिंदर छोटे संकड़े स्थान मैं बण्यो है । कैवे कै मस्जिद निरमाण रै बखत ओ स्थान बचग्यो । बाद मैं अठै ओ मिंदर बण्यो इण रै एक पासे पैली मंजिल माथै पूरव दिशा मैं ऊपर एक बड़ो सत्संग हाल है, जकै मैं क्रिसन जलम अर बारे जीवन सूं सम्बन्धित चित्राम है । कनै केई छोटा बड़ा दूजा आकर्षक मिंदरा मैं झांकुयां बणायोडी हैं । आम आदमी अर छोटा टाबर आनै देखण मैं घणी रुचि लेवै । बाद मैं सिझ्या बेळा में जमुनाजी रै तट पूग्या । अठै सती बुर्ज नाम रो लाल पत्थर रो चौकोर बुर्ज है, जकै ने १५७० ई. मैं जयपुर रै राजा बिहारी मल रै बेटे बणवायो । बुर्ज चौमंजलो हैं । इण री ऊचाई ५५ फुट है । घाट माथै सैकड़ूं छोटा-बड़ा मिंदर है । साधु सत, सिनान करणवाळा सरधालु अर अभ्यागता री भीड़ मडी रैवे । हळकी ठंड हूणे पर भी संध्या सिनान अर ध्यान करता भगत सामोळे मैं 'जय श्री क्रिसन' रै घोष सूं दूजा लोगां रो अभिवादन करता रैवे । सैमूळो वातावरण क्रिसन भगती सूं रंग्योड़ो सो लागै ।

आगले दिन वृन्दावन जाणो हो । मोर मैं ६ बज्यां तांगां कर्या । वृन्दावन मथुरा सूं १० कि. मी. है । बसां भी आधं-आधं घण्टा सूं चालती रैवे पण वै मारग मैं सब जागयां नी ठैरे । मथुरा सैर री सीमा खतम हुंते ही वारले पासै नेड़े ही गीता मिंदर आवै । इण मिंदर मैं महाभारत युद्ध अर गीता रै उपदेश सम्बन्धी चित्राम है । भीता माथै गीता रा सलोक भी मांडयोड़ा है । क्रिसन, राधाजी, बलराम आद री सोवणी मूरतां है । मिंदर बणगत मैं दिल्ली रै बिड़ला मिंदर सूं घणो मेळ खातो है । मिंदर मैं खुदाई रो भी चोखो काम है ।

कोई ४ कि. मी. दूर पगला बाबा रो पाच मंजलो विशाल अर

आकर्षक मिंदर है । फतहपुर सीकरी रै पंच महल दांई नीचे रो चौकोर भवन बड़ो है । उण सूं छोटो चौकोर भवन पैली मंजिल रो अर तर-तर छोटी हूंतो दूसरी, तीसरी मंजिलां । हर मंजिल में छोटा बड़ा क्रिसनजी अर दूजा प्राय: सै छोटा बड़ा देवी देवतावां रा मिंदर है । पगला बाबा क्रिसन रा अनन्य भक्त संत हा । इण क्षेत्र मैं वांरी शिष्य परम्परा लम्बी चोड़ी ही । भगता रै चंदे अर दान दिखणा सूं ही इण मिंदर रो निरमाण हुयो हो । बाबा रै जीवंते थकां अठै गरीबां अर बेसहारा लोगां वास्ते लंगर सदा चालतो रैतो । सरधालु लोगां नै बाबा आपरे हाथ सूं परसाद भी देवता, जकै नै लोग अहोभाग्य सूं ग्रहण करता ।

व्रन्दावन रो रस्तो हरियाळो है । जाग्यां-जाग्यां आश्रम अर गोशालावां रस्ते मैं आवै । व्रन्दावन कस्बो नेडै आंता ही अनेक मिंदरां रा शिखर दीसण लागै । व्रन्दावन री बसावट इसी है कै इण रै तीन कानी जमुना वैवे । आजकल जमुना रो पाट घाटां सूं अळगो भी सिरकग्यो है । व्रन्दावन मैं चार हजार सूं बेसी मिंदर बतावै । छोटा मोटा मिंदर तो घर-घर मैं है ।

आज जका मिंदर मौजूद है वै घणकारा मध्यकाल मैं बणरोड़ा है । मुगल बादशावां मैं अकबर अर जाहगीर उदार अर सहिष्णु हा । उण रे जमाने मैं फेर पूठो सांस्क्रितिक अर धारमिक जागरण हुयो । कला, साहित्य अर स्थापत्य आद री रचनावां मळै सरू हुई । चैतन्य महाप्रभु, वल्लभाचार्य महाराज, निम्बार्क स्वामी अर मध्वाचार्य जिसी विभूतियां री प्रेरणा सूं भगती री धारा जोरां सूं उत्तर भारत मैं वैवण लागी । आचार्यां दांई भक्त कवियां अर संतां भी आपरी बाणी सूं हरजस अर वंदना रा अलौकिक पद गावणा चालू किया । सूरदास, नंददास, हितहरिवंश हरिदास आद महाकवियां व्रज क्षेत्र मैं आपरी रचना घली बणाई । इणी काल मैं व्रन्दावन रा गोविंद देव, मदन मोहन, गोपीनाथ अर जुगलकिशोर

पाद भव्य मिंदरां रो निरमाण हुयो। मुगलां रै बाद ई. १७१८ सूं ई. १७६७ तांई मथुरा मायै भरतपुर रै जाट राजावां रो अधिकार रैयो। इण बखत भी मथुरा मैं समृद्धि अर विकास आयो। स्वतंत्रता पछै तो मथुरा री गरिमा ग दिन बाहुड़गया है। जातरूयां अर पर्यटकां री बढ़त रै साथै साथै नित नुवां देवस्थाना री बढ़ोतरी भी हूंती जा रई है।

सबसूं पैलां गोविददेवजी रै परसिध मिंदर नै देखण नै नावड्या। मथुरा रै सैंमूळा मिंदरा मैं गोविददेवजी रो मिंदर सैं सूं अधिक परभावित करण वाळो है। औ दुमंजलो मिंदर भव्य अर विशाल है। युनानी शैलो रै काटे (क्रास) दांई बण्योडो है। इण री ऊंचाई १०० फुट है अर दीवारां १० फुट री मोटी है। निचले तल्ले मायै मुस्लिम स्थापत्य रो परभाव है, पण ऊपरली मंजिल पूरण रूप सूं हिन्दू भवन निरमाण शैली री है। जयपुर रै राजा मानसिंह इण नै १५६० ई. मैं बणवायो। इतिहास कार फरगूसन इणनै उत्तरी भारत मैं बण्या हिन्दू भवनां मैं सैं सूं सुंदर कैयो है। पण आज इण रै रख राखव री खास व्यवस्था नी है। बादरा री घणी संख्या मैं मौजूदगी अर शहद माख्यां रा जाळा रै कारण मलीनता अर चौकट रैवे।

गोविददेव रै मिंदर रै दूजै पासे दखण भारत री द्रविड़ शैली मैं बण्यो रंगनाथजी रो आधुनिक मिंदर है। दखण शैली रै मिंदर मैं च्यारूं दिशावां मे गोपुरम हुवै। गोपुरम मायै सैंकड़ूं देवी-देवतावां री मूरता मांड्योडी हुवै। दखण रै देवतावां में वेणु गोपाल (क्रिसन) सुब्रमानियम (कारतीकेय) अइयप्पा (विष्णु) नटराज (शिव) आद परमुख हुवै। इण मिंदरां मैं अष्ट धात रो एक विशाल खम्भो मिंदर रै आंगण मैं रोपोड़ो रैवे। जकं पर ऊंची लम्बी धुजा पून मैं फैरांती दूर सूं दीखती रैवे। द्रविड़ मिंदरां री बारली भीत खासी ऊंची अर प दाई हुवै। बारली परिक्रमा चौकोर बड़े मारग मैं हुवै। निज

मांय भळै परिक्रमा हुवै। मिंदर री बड़ी परिकमा मैं भी चांरू मेर छोटा वड़ा मिंदर हुवै। मथुरा रो रंगजी रो मिंदर मद्रास रै सेठ राधा किसन अर सेठ गोविंददास रै बणवायोडो है। श्रो विशाल मिंदर सफेद मकराणे सूं बण्यो हूणे कारण घणो सुंदर लागै। अठै रा पुजारी भी दखण भारत रा ही है। वै माथै पर लम्बा आड़ा तिलक काढ़े अर शीश माथै मोटी शिखा राखे। उपास्य रै स्याम बरण सो सांवळ बांरो गात अर अधोभाग मैं पीताम्बर री शोभा रैवे। लीला पुरषोत्तम अर नटवर नागर रो ही नाम रंगनाथ है। अठै बिक्री हेतु सूखो परसाद भी बणे। इण मिंदर रै नेड़े ही लाला बाबू भगत रै नाम सूं एक सोवणो मिंदर है। कैवे कै धरम रै कारज इण भारी सम्पति दान दीनी ही।

काली घाट रै कनै मदनमोहनजी रो मिंदर है। बतावै कै इण रो निरमाण मुल्तान रै रामदास कपूर करायो। इण रो शिखर ५७ फुट ऊंचो है अर आंगण २५ फुट वर्गाकार है। इण मिंदर री मूल मूरती नै ओरंगजेब रै हमले रै समय अठै सूं करोली लेग्या बठै रै मदनमोहन मिंदर बो देव विग्रह आज तांई थपै। इण मिंदर री भी घणी मानता है।

रंगजी रै मिंदर सूं थोडी दूर क्रिसन जी रो एक कांच रो मिंदर है। श्रो मिंदर आजादी पछै बण्योडो है। चित्तोड़ कनै सांवरियाजी रो कांच रो जिसो मिंदर है उण सूं मेल खाणे आळो श्रो है। काच रा छोटा छोटा टुकडां नै भींत अर छात माथै सेनेटरी टाइलां री भांत जोड़ जोड़'र ईं नै बणायो गयो है। दीप बाती री विरियां एक जोत रा सैकडूं अवश कांच रै टुकडा मैं दीसणे सूं द्रस्य बौत सोवणो लागै। कांचां मैं लोग आप रो उणियारो देख'र भी राजी हुवै।

इयां तो बलराम, जुगल किसोर, राधारमण, बांके बिहारी आद अनेक मिंदर आकर्षक अर मानीता है। पण इस्कान सोसइटी द्वारा बणवायोड़ो

विदेशी भक्तां रो राधा क्रिसन रो मिंदर आजकल बौत परसिध है। इण नै 'हिप्पी मिंदर' भी कैवे। अठै रा हिप्पी भगत राधा क्रिसन रै नाम रै छापं री चादर प्रोढे। शिखा-सूत्र रो प्रयोग करै, ब्रज भाषा मैं क्रिसन भगती रा हरजस गावै, विधान सूं पूजा, अर्चना, दीप, नैवेद्य, परसाद आद रो विधान करै। म्हे तांगे सूं वठै गया। भो ठांम थोडो दूर है। संकड़ी गळ्यां माकर हो'र मुख्य सड़क सूं वठै पूग्या। केई भगत धम-चमा, मंजीरा अर ढोलक माथै भजन गांवा हा। सिभ्या रो समय हुग्यो हो। आरती अर दरसन अठै ई कर्‌या। भारती मैं तनमय हू'र झूमता गोरांग लोगां नै देख'र आनन्द अर अचरज हुवै। युरोप भर नई दुनियां रा लोग भौतिक सम्पनाता री बोळायत रै अंजाम सूं दुःखी हो'र धरम भाध्यात्म री भूमी भारत कानी शरण लेवणने आवै तो अठीनै भारत रा लोग भौतिक चकाचौंध सू आकर्षित हू'र नई दुनियां भर युरोप रै देशां री दौड़ लगावै है। पण सत्य री बात भा है कै जिआ वो विरख विशाल भर मजबूत हुवै जकै री जड़ा धरती मैं गैरी रवै। इणी भात वै संस्क्रतियां ई फळै फूळै जकी आपरी धरती अर आपरे भादरशां सूं खुराक लेवै।

ब्रज भूमी रै इणां धामां अर तीरथां मैं ब्रजपति क्रिसन रै लोक रंजक भर लोक रक्षक दोनू रूपां रा दरसन हुवै। कठैई बाल क्रिसन रै रिझावण 'आळी मोवणी चेष्टावां सामै आवै तो कठैई अघासुर, वकासुर, पूतना अर कंस वध, कालिया दमन भर इन्दर रै घमड रै मोचन आळा री सगळी घटनावां भांख्यां मैं घूमण लागै। भै सैंग परसग जीवन जगत रै प्रति भटूट सरधा भाव, आस्था अर आतम विश्वास जागावै। क्रिसन रै जीवन, चरित्र अर शिक्षा रै बिना तो भारतीय जीवन शोभा हीन ही नहीं अधूरो अर बेकार लागै। अठै आ'र संगीत भर संवेदना, सुरता भर भगती रा तीव्र भाव जागै। क्रिसन रै जीवन री मधुरता, कर्मठता भर निस्कामता नै नमन करता म्हे पूठा घरे आया।

अरावली रो सीस अर शिखा

इतिहास, कला, संस्क्रिति अर क्षेत्र री दीठ सूं संमूळै देस में राजस्थान सूं सुरंगो अर विविधतावां आळो दूजो कोई एकल राज्य नी है। अठै महाराणा प्रताप, राणा सांगा, कुम्भा अर बप्पा रावल जिसा रंणबांकुरा सूरवीर हुया है तो पन्ना धाय अर भामाशाह जिसा राष्ट्र खातर सै कुछ बलिदान अर अरपण करण वाळा धीर अर दानी लोग भी अठैई हुया है। रणथम्भौर, चितौड अर कुम्भलगढ़ जिसा विशाल, सुद्रड सैंकडू किला अठै रे आन अर स्वाभिमान री कीरती बखाणे तो देलवाड़ा, रणकपुर, नाकोड़ा, एकलिंग जी रा कलापूरण मिंदर अर आमेर, उदयपुर अर जोधपुर रा महल अठै रे स्थापत्य री श्रेष्ठता थरपता दीसै। कपिल मुन्नी, रामदेव, जांभेश्वर, गोगा, पाबू रै उपदेशां री आध्यात्मिक अनुगूंज पग-पग पाथै अठै सूंणीजै तो गणगौर, तीज, राखी आद त्यौहार परव इण रै सामाजिक जीवन नै रंगीनी, ताजगी अर खुशहाली सूं भर देवै। इण री धरती विशाल मरू भूमी रो खेतर है। जय समद, राय संमद, उदय सागर अर फतह सागर जिसी बडी झीलां, बनास अर चंबल जिसी नंदियां, गंगानगर अर कोटा-बांरा जिसा उपजाऊ खेतर अर अलवर सूं लगा'र आबू तांई पसर्योड़ी अरावळी री अटूट पाड़ी श्रंखलावां भी अठैई

है। इत्ती विविधतावां नै राजस्थान सूं बांधती ए विशेषतावां इण प्रदेश नै एक मानै में छोटे भारत रो सांचो प्रतिनिधि रूप देवै।

राजस्थान में कसमीर अर हिमाचल दांई बरफ सूं ढक्या ऊंचा पाड़ां अर उणा जिसी प्राकृतिक सोभा तो शायद नीं देखण नैं मिलै पण मरु भूमी नाम सूं बजण आळै इण प्रदेश मे आबू सरीखी घनी वनस्पति, झीलां, झरणां, विश्व ख्यात रा मिंदरां अर शांत वातावरण आळै ठामां नै देख'र घणो आनन्द हुवै। १५ अक्टू. १९८१ नैं साथ्यां सागै इण पाडी नगरी रैं भ्रमण रो कार्यक्रम बणायो।

बीकानेर सूं ठेठ अैमदाबाद तांई सीधी एक्समेस गाड़ी जावै है। इण मैं आबू तांई आरक्षण री व्यवस्था होगी ही। नह तो जोधपुर सूं दूजी गाडी बदळ' जाणे मे दिक्कत हुंती। सीधी गाड़ी सूं लम्बी मुसाफिरी आळा यात्री अदळा-बदळी री परेशानी सूं बंच जावै। गाडी सिञ्झ्या ८.३० बज्यां बीकानेर सूं रवाना हुई। देशनोक नागौर, मेड़ता हुंती रेल भोर मैं ५ बज्यां जोधपुर पूगगी। अठै सूं आगै मारवाड़ अर अहमदाबाद रा और डब्बा जुड़ै। ८ बज्यां रेल जोधपुर सूं रवाना हुई। आध घण्टे मैं लूणी जं. आग्यो। अठै छोणे अर दूध री मिठायां सस्ती मिलै, पण चीनी री मातरा जासती ही हुवै। कोई ११.३० बज्यां मारवाड़ जं. पूगग्या। मारवाड़ मैं भी गाडी २ घण्टा ठैरी। स्टेशन रैं भोजनालय मैं दोपहर रो खाणो खायो। मारवाड़ स्टेशन माथै पकोड़ा, रबड़ी अर दहीबड़ा वेचता बेंडर घूमता रैवे। दही अर दूध भी अठै आंम स्टेशनां सूं आछो अर वाजब दामां मैं मिलै। मारवाड़ जं. सूं एक लाइन सीधी उदयपुर कानी, दूजी फुलेरा,पासी अर एक फालना पाली कानी जावै। स्टेशन रा तीन बड़ा
है। माइं भी बौत लम्बो चौड़ो है। स्टेशन माथै गाड्यां

री आमादरफत हूंती ही रैवे। घण्टे सवा घण्टे रा गाड़ी फालना पूगै। फालना सूं ही जगत विख्यात जैन मिंदर रणकपुर रो रस्तो जावै। रणकपुर रै मिंदर में १४४४ खम्भा है, पण मिंदर रै कोई भी स्थान सूं कोई न कोई मूरतो रा दर्शन हुवै। अं खम्भा देव विग्रह दर्शन मैं बाधा न बण सकै। इसी अनूठी कारीगरी भारत रै किणी दूजै मिंदर मैं नी है। आगे रै मारग मैं पाली रो कस्बो है। पाली मैं आजकल कपड़े री कई मीलां है। रंगाई, छपाई अर खादी रै वस्त्र निरमाण रा कई कुटीर उद्योग अठै चालै। सिरोही रोड पछै दूर सूं पहाड़ुआं दीसण लाग जावै। करीब २ बज्यां पछै म्हे आबू रोड पूगग्या।

आबू रोड स्टेशन बारे ही बस अड्डो है। बस रै भाड़े मैं ही टैक्सी आळा भी सवार्‌यां नै आबू पूगा देवैं। बारे निकळतां ही टैक्स्या आळा आड़ा फूमग्या। एक सूं बात तै कर'र बैठ्या अर रवाना हुया। आबू रोड सूं आबू २६ कि. मी. है। ४ कि. मी. बाद ही पाड़ी रो चढ़ाई सरू हू जावै। रास्तो सरप दांई बळ खातो है। पाड़ रै सारै-सारै सड़क कने, दूजे कानी नीचो घाट आंतो जावै। ऊंचे सूं नीचे घाट कानला निजारा सोवणा लागै। १५ कि. मी. पूचणे पछै एक चोड़ी जाग्यां मार्थ चूंगी चोकी आवै। अठै यात्री कर (टोल टैक्स) देणो पणे। हनुमानजी रो एक मिंदर भी अठै है। सड़क अर मिंदर रै चारूंमेर बांदरा रो हजूम मण्ड्यो रैवे। चाय री एकाध दूकान अर नमकीन, मिठाई, सिगरेट, बीड़ी बेचण आळा दो चार गाड़ा अठै खड्या रैवे। आबू सदा सिरोही राज्य रो भाग रैयो। आजादी पछै जद प्रांतां रो निरमाण हो'रयो हो, गुजरात वास्यां इण माथै आपरो दावो पेश कर्‌यो पण आजादी पैलां सिरोही राज रा दीवान अर स्वतंनता सेनानी गोकुल भाई भट्ट राज रै पट्टां रै आधार माथै इण नै सिरोही रो भाग परमाणित कर'र राजस्थान नै इण सुंदर पाड़ रो हक दिरा दियो। ४५ मिटां मैं ही परबत रै बस अड्डे पूगग्यो।

बस अड्डे रे थोड़ी दूर माथै जीवणे हाथ उतराद मैं एक सडक जावै। इण माथै कोई ३०० मीटर री दूरी माथै पूरब कानी पगडडी सूं पुराणे गोल्फ रो बड़ो लम्बो चौडो मैदान आवै। इण मै आज कल राजस्थान राज्य भारत स्काउट्स अर गाइड् रो प्रांतीय प्रशिक्षण केन्द्र चाले। बरसां सूं संस्था सूं जुड्या हूणे कारण अठैई ठैरण री व्यवस्था ही। बच्चा गाड़ी मे सामान ले'र कुली की ताळ बाद अठैं पूगग्यो। आबू मैं आज रै मंहगाई रै जमाने मै भी कुली पांच चार रुपया मैं गाड़ो ले आवै। पहाडी गिरासिया अर भील जाति रा लोग सामान, छोटा बच्चां अर बूढ़ा लोगां तांई छोटे पहिया आळा चौकोर गाड़ा चलावै। गोल्फ मैदान नै अशिक्षा रै कारण ऐ लोग 'गाफ' कैवे। मैदान तीन मेर पाहड्यां सूं घिर्योड़ो, बीच मैं हरी दूब री मुलायम चादर दूर तांई बिछायोड़ी है। किनारे ऊंचा छायादार रूंख, पूरब कानी ऊंची चट्टान पर प्रमारी रो आवास, एक कुणे मैं कुओ। सिरे माथै दो छोटा 'हट' का कमरा, प्रशिक्षण केन्द्र रो कार्यलाय, सारै बड़ो हॉल, कार्यालय रै बाजू मैं स्टोर, बरामदो, सिनान घर अर बड़ो रसोवडो, आगै लम्बो बरामदो। इण इमारतां रै सामै चोखो बाग, बिरख अर पाड़ी चट्टान रो चौकी दांई पड्यो टुकडो। सारो स्थल भव्य प्राकृतिक शोभा अर विराटता रो प्रतीक।

चाय नास्ते रै बाद बिसांई खा'र हाथ मुंह धो'र नक्की तांई घूमण नै निकल्या। अक्टूबर मैं भी दूजा ठामां रै दिसम्बर महिने सरीसी सरदी ही। गरम कपड़ा पैर्या। बस अड्डे सूं थोडो आगे ही पुलिस मैदान है, जको स्टेडियम दांई खेल, मंच अर घुड़दौड़ आद रै काम आवै। थोड़ी दूर सूं ही चढ़ाई सरू हू जावै। एक सड़क तो कस्बे रै मुख्य बाजार कानी जीवणे हाथ मुड़ जावै। दूजी सीधी नक्की माथै पूगे। बीच रै मारग मैं दोनू कानी, होटल, लाज, गैस्ट हाउस अर ढाबां आद रो सिलसिलो सरू हू जावै। पुलीस मैदान कनै मणिआरी, श्रंगार रो सामान

अर रैंडी मेड कपड़ां री हाट अर खोखा भी खड़्या दीसै। चाट पकोड़ी अर आइसक्रीम, सॉफ्टी रा गाडां माथै सैलानी महिलावां री विशेष भीड़ मडी रैवे। नक्की सूं पैला थोडी चढ़ाई चढ़'र जकी सड़क माथै पूगा वठै एक कानी बड़ी फैशनेबल दूकानां में आर्ट पीस अर सजावट आद रो सामान बिकै। दूजै कानी एक भीत री पाळ नैंडे सवारी आळा टट्टू अर घोड़ा ले'र पाड़ी लोग खड़्या रैवे। बाल अर किसोर उमर रा छोरा छोर्‌यां किराये रा घोड़ा ले'र नक्की रै सारली सड़क माथै सवारी अर झील रा निजारा लेता घुड़ सवारी रो शौक पूरो करै।

झील पर पूगण आळी सड़क रै दोनू कानी दूकानां अर होटल है। चांदी रा आभूषण अठै भांत-भांत रै डिजाइनां मैं मिलै। होजरी रो सामान अर सूटर, जरकिन आद भी खासी बीकै। घणकरी दूकानां गुजराती लोगां री है। दूकानां रा नाम भी गुजराती मैं ही लिख्योड़ा है। गुजराती लोग वैसी मात्रा मैं व्यापारिक समाज सूं सम्बन्धित हुवै। इण कारण बां री क्रय खिमता भी ठीक हुवै। अठै रुपिये मैं बारह आना घणो गुजरात्यां माथै ही चाले, बाकी चार आना राजस्थान अर दूजा लोगां माथै।

झील माथै पूरब दिशा मैं एक छोटो पण सोवणो बागीचो है। जाग्यां-जाग्यां विसराम वास्ते पत्थर री चौक्यां बण्योडी है। जीवणे हाथ नक्की झील मैं सैर करवाणे आळी नावां अर मोटर बोटां खडी रैवे। टिकट घर भी बाग मैं बडतां ही बणायोडो है। केई नावां मैं २५/३० लोगां नैं आधे घण्टे तांई सामुहिक रूप सूं नौका बिहार करवणे रा ३ रुपिया प्रति व्यक्ति टिकट है। निजी रूप सूं कोई आगे तांई सैर करणे खातर आपरे वास्ते नांव किराये करणो चावै तो २५ रुपिया प्रति घण्टे रा लागे। झील रै लारै पछम दिशा मैं ऊंची पाड़ी माथै 'टाड राक' है। नाम मुजीब इन रो आकार 'मैंढ़क दांई है। सिझा री वेळा बागीचे

मैं रंगबिरंगी रोशण्यां इण री सुंदरता नैं घोर बढ़ा देवै। दखण कानी झील रैं सारली सड़क माथै भी सफेद मरकरी बल्बां री रोशनी मैं घुड़सवार तफरीह करता दीसै। बागीचै मैं एक छेड़े भांत-भांत री ड्रैस लियां फोटोग्राफर घूमता रैंवे। नुवां ब्यांहतोडा जोड़ा अठै कश्मीर अर राजस्थान रैं बींद-बिंदणी री पैंशाकां पैर'र रोमांटिक अदाज मैं फोटू खिचवा'र आबू री यादगार नैं स्थाई बणांवता दीसैं। रात्री १०-११ बज्यां तक झील माथै खासी रौनक रैंवे। झील रैं सारै बैंचा पर बैठ्या सैलानी खांता-पींवता का नौंका बिहार रा द्रश्य देखता रैंवे। म्हे लोग भी टिकट खरीद'र नौका बिहार रो आणन्द लियो। केवट कन्ने सूं पतवार ले'र चलावण मैं भी रोमांच अर आणन्द हुवै। बाद मैं खासी देर ताई बाग मैं भी बैठ्या रैया। १०.३० बज्यां बाद जद ठंड पणी बढ़गी पाछा गोल्फ आ डूक्या।

आगले दिन भोर में ६ बज्यां रघुनाथ मिंदर रा दरशन ताई पूग्या। मिंदर झील रैं दखण पख मैं बाग रै ठीक सारैई है। एक बड़ी पिरोळ रैं मांय डावैं हाथ बड़ी धरमशाल है। बीच मैं बड़ो आंगण है। सामैं भळै एक छोटी पिरोळ मैं सामैं रघुनाथजी रो मिंदर है। भगवान राम री मोवण मूरती है। निज मिंदर रा किवाड चांदी रा है। मिंदर धोळे मकराणे सूं बण्यो है। फरश अर भींतां भी धोळे मकराणे री है। आरती रा दरसन किया। जोत अर चरणामत ले'र सेवा ताईं आंगण मैं बैठ्या ही हा के एक सूरदास महात्मा रामायण रैं आयोध्या कांड रा दोहे तनमय हू'र गावणा लागा। खासी देर ताई विभोर हू'र म्हे भी दूजा भगतां साथै बैठा सुणता अर झूमता रैंया।

परशिक्षण केन्द्र मैं आ'र चाय नास्ते बाद गोमुख दरशन खातर ८.३० बज्यां रवाना हुग्या। बस स्टैंड सूं नीचे अ [illegible] रान कोई १ फर्लांग चाल्यां पछै एक दूजी सड़क जीवणै

दूर ऊपर जातां ही डावें हाथ कानी रकारटिंग रो दूसरो परशिक्षण केन्द्र आवें। इण रो चोगान भी घणो बडो है। जीवणै ऊंची टेकरी माथै 'गुजरात भवन' बजै जको पर्वतारोहण परशिक्षण केन्द्र री आइपक अर बड़ी इमारत है। अठै गुजरात री नन्दिनी बैन इण केन्द्र री निदेशक है। गोरा बरण, पतळी काया, सरल सबोध मुख मण्डल माथै हरदम मुळक रैवे। वांरा पति भी दफ्तर रै कामां में उण री मदद करै। नन्दनी बैन दार्जलिंग रै पर्वतारोहण परशिक्षण केन्द्र' सूं खुद तेनसिंग नोरकी सूं शिक्षा लेर आया। पछै केई आरोहण अभियानां में वै तेनसिंग रै दल साथै दोरा पांडा पर चढाई भी कीनी ही। वांरे व्यवहार में माता री वत्सलता अर बैन रो नेह छळकतो रैवे। अठै हर साल गुजरात अर राजस्थान ही नहीं महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा आद दूर प्रदेशां तांई सूं भी छात्र-छात्रावां अर युवक-युवतियां आवता ही रैवे। पर्वतारोहण रा आधुनिक उपकरण, भांत-भांत रा छोटा बड़ा रस्सा, पिठ्ठू, जूता, हैमर सैक, खूंट्या, स्पाइक्स देखता अठै आगे टुर्‌या।

अठै सूं दखण दिशा में मोड खातो सड़क कोई १.५० कि. मी. पछै हनुमान मिंदर पूगे। मिंदर सामैं सड़क माथै हैंड पम्प लगायोडो है। जातरी इण रे ठंडे जळ सूं तिस मिटावै। थोडो ताळ दरसन, विसराम सूं थकान भी मिटै। हनुमान मिंदर रे सामैं पुजारीजी एक छोटो पण आछो बगीचो लगा राख्यो है। मिंदर रे सारै ही छोटी गोशाला भी है। आगे रो मारग खेतां मांकर नीसरे। दोनूं मेर ढळवां पाडी खेत अर घणी हरियावळ है। जीवणै हाथ पाणी रो एक स्रोत भी वैवे जके में भील बालक सिनान कर रैया हा। हनुमान मिंदर सूं करीब आधा मील दूर दखणाद थोड़ी चढाई चढ'र एक बडो अर ऊचो पक्को चबूतरो बणायोडो है, जठै सूं सामे घाटां रो दूर-दूर तांई रो आछो निजारो दीसैं।

कोई २ फलांग बाद गोमुख रा पगोथिया सरू हुवै । पाड़ी पत्थरां रै टुकडां नै जोड-जोड'र पगोथिया बणाया गया है । जीवणे हाथ पहाड़ सारै-सारै वैवे, डावे कानी पत्थर चूने री चार फुट ऊंची भीत आड खातर बणायोड़ी है । भीत रै आरै नीचा खड्ड है । हर २०-२५ पगोथिया बाद दासे रो बड़ो पगोथियो है, जकै सूं थोड़ी राहत मिले । सौ दो सौ पगोथिया उतरणे रै बाद पजे री नसां मैं ताण आवण लागै । सभळ'र उतरणो पड़ै । रस्ते मैं दोन्यूं कानी विशाल हर्‌या रूंख है । मारग मैं बंदर भी खासी जाग्यां मिले । उपर चढ़ता मुसाफिर हांफीजता रैवे । ठंड हूणे पर भी उपर आवणियां रै भोबा आवतां दीसै । कुल ७०० नेड़े पगोथिया हूसी । आगे चाल'र बड़ो मैदान सो आवै अठै सूं गोमुख माथै बण्या गुंबद दीसण लागै । थोड़ी दूर चाल'र डावै हाथ चार दिवारी रो दरवाजो आवै । मांय बड़तां ही सामे गोमुख रै स्वामीजी रो आसरम है । स्वामीजी सूं बातचीत कर्‌यां मालूम हुयो कै ओ वशिष्ठ रिषी रो पराचीन स्थान है । अठैरी अगन सूं ही राजपूतां री चार इतिहास परसिध जातयां री उत्पत्ति हुई है । आसरम रै सारै हो मकराणे री गऊ मुख सूं एक भरणे रो पाणी नीचे कुण्ड मैं पड़ै । इण पावन कुण्ड मैं दूजा जातर्‌यां दांई म्हे लोग भी सिनान कर्‌यो । केई देर अठै रैया । १०.३० बज्यां अठै सूं पाछा रवाना हुआ । जांते समय आधा घण्टा सूं भी कम लाग्यो हो पण चढाई मैं करीब घण्टा भर लाग्यो । केई जाग्यां बीच मैं बैठ'र सुस्ताणो भी पड्यो । बारह रे नेड़े ठिकाणै पूंच्या ।

सिंझा सूं पैलां ही ढ़ळते सूरज रो देखण नै 'सन सैट पांइट' बजे जिके ठाम तांई चाल्या । मुख्य बाजार रै चौरावे सूं दखण मैं एक सड़क पांइट तांई जावै । आबू रा अणपढ़ भील इण जाग्यां नै अंग्रेजी रै उच्चारण री खिमता रै अभाव मैं 'सैसंठ पैसठ' कैवे । दोनां सबदां मैं खासी ध्वनि समानता है । औ नुवो उच्चारण सुण'र घणी हंसी आवै ।

बस स्टैंड सूं पांइट ३ कि. मी. नैड़ो हुस्सी । चढ़ाई जठै सूं सरू हुवै ठीक बठै ही बीकानेर में कई बरसां तांई सिटी मजिस्ट्रेट रैयोड़ा पी. सी. सिंघवी साहब आपरी जीब रै कनै बारै ऊभा मिलग्या । मेरे सूं अर सोलंकी जी सूं वैं आछा परिचित हा । रामा-सामा अर बातचीत बाद बां आग्रह पूर्वक आपरे ड्राइवर नै म्हां लोगां ने ऊपर छोड़'र आणे रो कैयो । वां रै उदार शिष्ट व्यवहार सूं हरख हुयो । पांच सात मिंटा में ही ऊपर पूगग्या । पांच बज्यां बाद सूं ही पांइट रे पहाड़ां माथै आ'र लोग बैठण लाग जावै । म्हे भी एक ऊंचो टेकरो माथै जा बैठ्या ।

थोड़ो ताळ में ही आसै पासै रा सै ठाम उत्सुक दरशकां सूं भरग्या । इए ऊंचा पाड़ां रै सामैं केई मीलां तांई घाट है । सूरज जद पछमाद हू'र दूर नीचे आं घाटां में उतरे तो सामैं ठेठ तांई ललाई पसर जावै । लागै धरती रे अनुराग में आकाश रे सोवणो मुखड़े माथै प्रेम रो लाल रंग उमड पड्यो है । इण सास्वत युगल प्रेमी नैं सिंझा री शांत खामोश बेळा में एकला मिलण देण वास्ते सूरज भी धीरे-धीरे क्षितजं कानी सिरकण लाग्यो । पैलां सूरज रो एक अंश लुप्त होतो दीख्यो । दरशकां में हळचळ हूण लागी । बो देखो, बो देखो रा स्वर फूट्या । अरे ! देखो आधो सूरज ढळगो । अब तो चिन सो'क रैग्यो । अर धप्प केई ठोस गोळ लाल दड़ी दाईं सूरज अेकाअेक आकाश सरोवर में डूबग्यो । अठीनै ललाई माथै रात रो हलको सावरो आवरण सिरकण लाग्यो तो उठीनै ऊंधेरो पड़णने सूं पैलां आपणे पड़ाव ढूकणे री भागमभाग सरू होगी । थोड़ी ताळ में ही ठाम जन शून्य होतो लाग्यो । दो चार हजार मिनखां रो औ कौतुक मेळो इण तरां ही रोज अठै मडे अर बिखरै । कुदरत रा नित नुवां अर पगपग बदळता रूपां रो विलक्षण अनुभव पांडा माथै विशेष रूप सूं हुवै ।

१८ अक्टूबर ने दिनुगै ७ बज्यां तैयार हू'र केन्द्र रै दक्खणी

दरवाजे सू मोड खाती पांडो सड़क रै मारग सूं उत्तर पूरव दिशा कानी चालता मुख्य आबू सड़क माथै पूग्या। सैनिक परेड मैदान अर बाजार हुता नक्की पूग्या। झील नै बगल में छोडतां उणरै सारै सारै दक्षण दिशा मैं जोंवती सड़क सूं आगै बढ़्या। थोड़ी दूर माथै ही 'महरिषी दयानन्द गारडन' पड़ै। बगीचो, फुलां, क्यार्‌यां, झाड़ां अर ऊंचा बिरखां सूं सज्यो संवरो रूपाळो है। बीच मैं एक बड़ो फंवारो बठै निरमल जल रा मोती उछाळतो सो दीख रयो हो। पण नेड़े जाणे सूं पतो लग्यो कै पाइप री मेन लाइन मैं बड़ो तीणो हूं जाणै सूं पाणी फव्वारे दांई उछल रयो है।

आगे सड़क पूरब दिशां मैं मुड़े। सामैं सड़क रै दोनू कानी 'प्रजा पिता ब्रह्म कुमारी ईश्वरीय महाविद्यालय रै मुख्यालय रा भवन दीसै। डावैं हाथ कानी तो इण संस्था रो ऊंचे प्लेटफारम माथै कोई २०/२५ सीढ़्यां चढ'र बड़ो विशाल सम्मेलन हाल है। हाल रै आगै भव्य विशाल बरामदो है, जकै मैं देवी-देवतावां रा चितराम है। लारे दो अठाई हजार लोगां रै बैठने री खिमता री कुर्‌स्या लाग्योडी है। बरामदे री लारली भींत सूं जुड़्यो हाल रो विशाल स्टेज है। इण स्टेज पर भी ३०० आदमी आराम सूं बैठ सकै। हाल री खासियत आ है कै इण रै बीच कोई खम्भो नी है। म्हारी जाणकारी मैं तो इसो बड़ो हाल और नी है। सड़क रै जीवणे पासे संस्था रो कार्यालय भवन, प्रदरसनी कक्ष अर साधना-ध्यान कक्ष आद है। प्रदरसन कक्ष मैं धरम आध्यात्म रै सिधांतां रा लेख अर अनेक प्रकार रा चितराम, नक्शा, चार्ट आद है। लेखराज नाम रै भजन कीरतन करने आळे एक उपदेशक २५-३० बरस पैलां इण संस्था री थरपणा कर ही। आज अनेक देशां मैं इण री साखावां है। देश मैं भी सैंकड़ू ज्याग्या इण रा केंद्र है।

कनै डावैं कानी ऊंची पाडी माथै शंकर मठ है। एक फरलांग

घर न भूलण आलो अद्भुत नमूनो है। मिंदर रैं चारूं मेर गढ़ री ऊंची भीता सो परकोटो है। मुख्य दरवाजे री चौकी सारे प्याऊ, जूता खोलण घर कैमरो, पेटी अर दूजा सामान जमा कराणे रो कमरो है। मांय जूट री एक पट्टी दरवाजे सूं मिंदर तांई बिछायोड़ी है, जकै सूं दरसन करण आळा रा तावड़ै कारण पग न बळै। चार दीवारी मैं अनेक मिंदर है। मुख्य दरवाजे रैं कनै डावै बाजू चिंतामणी पार्श्वनाथ रो मिंदर है। कैवे के मूल मिंदर रैं निरमाण रैं बाद बच्योड़ी सामग्री सूं कारीगरां आपरी तरफ सूं इण री रचना करी।

आगै थोड़ी दूर माथै डावै पासै भगवान आदिनाथ रो मूल मिंदर है। गुजरात रैं राजा भीमदेव रैं मंत्री विमलशाह ई. १०३१ में १८५३०००००० रुपयां मैं इण रो निरमाण करवायो। इण रैं हर एक खम्भे अर हर छात में बारै उभार्योड़ी अर मांय तरास्योड़ी खुदाई री कारीगरी रो अत्तो बारीक, भव्य अर बेशकीमती काम है के दरशक हैरत में पड़ जावै। जद दुनियां रैं लोगां नै ज्योमित रो अलप ज्ञान हो, उण बखत फूल, पत्यां, कोणां अर डिजाइनां री अचूक अनूठी अर सुंदर कलाकारी मंत्र मुगध बणावण आळी है। दर्शक इण कला मैं नैनां रैं माध्यम सूं आत्मा मे उतार लेणो चावै। खूबी आ कै छात अर खम्भा रैं डिजाइनां मैं भांत-भांत री कोरणी है। एक डिजाइन कठैई दुसराईजो नी है। हजार बरसां बाद आज भी लागै कै मिंदर अबार ही बण्यो है। संमूळो मिंदर सफेद मकराणे रो है। अती ऊंचाई माथै सैंकडूं मील दूर जोधपुर संभाग सूं बिना साधना रैं बड़ा-बडा कीमती पत्थर पुगाणो अौर घड़ाई रो लूंठो कलापूरण काम करणो समझ सूं बारै री बात है। कारीगरां री पुस्तां इण काम मैं खपगी हूसी। आज तो मूल्य री दीठ सूं इसा मिंदरा रे निरमाण री खिमता अर निरमाण री कुशलता दोन्यू जोयां ही नी लाधै। विदेशा सूं आवणियां सैलाण्यां री आंख्या फाटी रैं जावै। आजादी पैला रैं भारत नैं असभ्य अर

बाद सड़क उत्तर-पच्छम मोड लेवै। मळै थोडी दूर माथै उत्तर मैं मुड़तां ही सामैं अर्बुदा देवी रै मिंदर रा घणा ऊंचा पगोथिया दीसण लागै। पाड रै सारै २५० पगोथिया री खड़ी चढाई हूंफा देवै। ऊंमी चढाई कारण केई लोग ईनै अधर देवी भी कैवे। एक चट्टान रै नीचे माताजी रो मिंदर बणायोडो है। खासो नीचो झुक'र मांय जाणो पडै। पौराणिक मानता रै मुजीब अम्बा माता रो होठ अठै पड़्यो हो, इण कारण ठाम रो ओ नाम बज्यो। मिंदर रा पुजारी इणनै ५५५० वर्ष जूणो कैवे। मूरती सिंघ वाहनी दुरगा जी री है। पाणी री एक बावडी भी अठै है। मिंदर आगै चोकी माथै सूं पाडां अर वनस्पत्यां रा चोखा द्रश्य दीसै। विसराम पछै मिंदर रै पूरब कानली सीढ्यां उतर'र देलवाड़ा मारग माथै आगे बढ़्या।

अरबुदा देवी सूं देलवाडा जैन मिंदर कोई ३ कि. मी. हूसी। अरबुदा मिंदर सूं थोड़ी दूर सामैं ही बीकानेर हाउस है। अंग्रेजी राज मैं ब्रिटिश रैजीमैंट अठै रैतो। इण कारण राजस्थान रै सैं रजवाड़ा री कोठ्या राज कारज अर समपरक खातर अठै बणाईजी। आगै रे रस्ते मैं सडक अर पाड रै बीच बरसाती नाळो आवै। इण नाळै रे बीज मैं 'सत सरोवर' आसरम है। सोमगिरि जी महाराज अठै आध्यात्म साधना अर उपदेश करता रैवे। स्वामीजी आछा विद्वान अर स्वाध्यायी व्यक्ति है। बा रा दरसन-मिलन सूं घणी शांति मिलै। इण जाग्यां सड़क खासी ऊंचाई माथै वैवे। कोई पूण घण्टे मैं म्हे देलवाडा मिंदर पूगग्या।

आपणे देश मैं अनेक ठामां माथै जैन धरम रा अत्यन्त कलापूरण मिंदर है। रणकपुर, नाकोड़ा, पालीताणा, पावापुरी, शिखरजी अर जूनागढ़ रा नाम इण दीठ सूं उल्लेख जोग है। पण देळवाडा रो मिंदर भवन निरमाण मैं भारत री कारीगरी री कुशलता रो अपूरव

गंवार बतावण आळां रा पोत उघड़ जावै अर अठै रै कलाकारां री करम निष्ठा, कुसलता अर वैज्ञानिकता रा झंडा आपो आप थरपता जावै ।

आदिनाथ मिंदर रै बारै विमलशाह री हाथीसाळ है । इण मैं पत्थरां रा बड़ा-बड़ा विशाल हाथी है । आकार प्रकार अर अंगां रै अनुपात मैं सुंदरता अर निरदोसता है । पछम भाग मैं की उपर श्री नेमीनाथजी रो मिंदर है । ओ भी कारीगरी री दीठ सूं विलक्षण है । इण रो निरमाण ई. १२३१ मैं बस्तुपाल अर तेजपाल दो भायां १२,५३,००,००० रुपिया खरच कर'र करवायो । आज री वेळा इण राशि रो सही मुद्रा मुल्य आंक सकणो भी कांई सम्भव है ? आपरे ईष्ट रै प्रति एकनिष्ठ समरपण भाव अर अकूत धीरता सूं ई ओ अपूरव अमूल्य निरमाण हू सकै । जीवणे पासे कीं ऊंचाई पर रिखबदेवजी रो मिंदर है । इण मैं १०८ मण पीतल री भगवान री मूरती है । धातु नै ढाळणै खातर कित्ती आंच आळे भट्टे अर कित्ते निरदोष साचे सूं इसी मूरती घड़ीजी इण री कल्पना करणी भी दोरी है । राजस्थान ही नहीं समपूरण भारत रै मिंदरां मैं इण रो सै सूं उच्चो स्थान है । ओ मिंदर समूह राष्ट्र रा गौरव है ।

आगले दिनुगे ७ बज्यां पैदल सड़क मारग सूं अचलगढ़ रवाना हुया । ३ कि. मी. बाद ओरिया गांव आयो । अठै बड़े आकार री बालम ककड़ी ले'र खाई । थोड़ो ताळ रुक'र आगै चाल्या । सड़क पाडी मारग कारण मुड़ती घिरती रैवे । रस्ते मैं खेत खासी जाग्यां मिलै । रहट आळा कुआ औजूं भी अठै चाले । रहठ री माळा लो रे डबळियां री भी है अर माटी रै कुलडियां री भी मिलै । इण गांव मैं करीब सौ घरां री बस्ती है । आबादी मैं घणखरा रजपूत अर गिरासिया ही है । धंधे री दीठ सूं सै खेतीहर, बाळदिया का लकड़हारा है । अठै गेहूं, ज्वार, साठी

(चावळ) अर कावीज री खेती नीपजै। गांव रै सारै सूं एक मारग डावै हाथ कानी गुरु शिखर जावै, दूजो जीवणे हाथ री सड़क सूं अचलगढ़ जावै।

अचलगढ़ तांई रो मारग चढाई आळो कोनी। अचलगढ़ सूं कोई दो कि मी. पैळां नाना मोटा आसरम अर मिंदर आवण लागे। १ कि. मी. बाद तो अचलगढ री पाडी दीसण लागे। अचलगढ़ छोटी सी बस्ती है, पूरब अर दक्खण मैं पाड़ा सूं घिरयोडी। सामै बस स्टैण्ड रो खुलो बडो मैदान। इण मैदान मैं ही खोखां मैं दूकानां अर चाय–पाणी रा होटल है। एक छेड़े एक बडो तालाब अर बी मैं चार पाड़ा री मूरतां हैं। कैवे अै कदैई राकस हा। अचलेश्वर जी बानै जड़ बणा'र बांरे उतपात सूं लोगां नै छुटकारो दरायो। अचलेश्वर रै प्राचीन मिंदर मे विष्णु री मूरती री आख मैं इसो नग है जकै मैं शिव रो प्रतिमा दीसै। अठै नीचे एक जैन मिंदर है अर दखण कानी पाडी मैं ऊंचे एक और प्राचीन गुफा मिंदर है।

दोपहर २ बज्यां बाद जंवाई गांव रै सारै कर गुरुशिखर कानी चाल्या। आगे रो ढ़ाई मील रो रस्तो चढ़ाई आळो है। गांव सूं थोडी दूर आगै सड़क सूं अलायदी पगडडी भी बैवे।। पण पैदल मारग मैं चढ़ाई घणी है। ज्यूं–ज्यूं शिखर कानी बढ़ा उत्तर कानी ऊंची पाड़ी माथै मिलीटरी रो रैडार नैडो आंतो लागै। शिखर सूं पैला एक चोड़ी पाडी चट्टान माथै एक टीन रै छप्पर आलो खुल्लो चाय–पाणी रो बड़ो होटल है। थकयोडा हूणे कारण सैं जातरी अठै चाय पाणी रै सारै थाक उतारे अर ताजा हू'र भळै १ फर्लांग रीं खड़ी चढ़ाई चढ'र राजस्थान री अरावली श्रंखला री सैं सूं ऊची चोटी गुरुशिखर नावड़े। गुरुशिखर भगवान दत्तात्रेय री अराधना थली बजै। शिखर ऊपर दत्तात्रेय रो मिंदर है सारै ही दूजै देवालय दांई बण्योड़े ठाम मैं बां रा पगलिया मांड्योडा है। अठै अहमदाबाद रै केई सेठ रो लगायोड़ो एक विशाल

घंटो १६२१ में थरप्योड़ो है। जकै री धुन खासी नीचे तांई सुणीजै। ऊंचे के इण शिखर सूं भी ढळते सूरज रो द्रश्य बडो आछो लागै। ५६५६ फुट ऊंचे इण शिखर सूं अचलगढ़ अर आबू तांई री बसत्यां भी धुंधली धुंधली निजार आवै। अंधेरो होणे सूं थोड़ी पैलां ही नीचे बस स्टंड पर आग्या। आंती वेळा बस सूं कोई पूण घण्टे में आबू पूगग्या।

इण भांत आबू प्रक्रिति प्रेमी सैलाणियां, कला पारखी विद्वानां, धारमिक अर आस्थावान संता, भगतां अर देस दरसन रा शौकीन घुमक्कड़ां आद सै भांत रे लोगां री आत्मा नैं एकै सागै आणन्द अर सुख री अनुभूति कराणे वाळी अनूठी जाग्या है। राजस्थान री विशाल मरुभूमी में इत्ती घणी वनस्पती री मोजूदगी आबू नैं हिमालय सूं कम दरजो नी देवै। शायद इण कारण सूं ही आबू नैं सांच ही हिमालय रो बेटो कवै।

●

पत्थरां मैं फुटरापो–जैसलमेर

राजस्थान रे मारु प्रदेश रे प्राकृतिक, सांस्कृतिक अर कलात्मक वैभव रे शुद्ध रूप रो सांचो प्रतिनिधि जैसलमेर नै कैयो जा सकै। आधुनिकता री प्रतीक मशीनी सभ्यता रो अणूतो परभाव ओजूं तांई इण रै जीवन माथै हावी नी हो सक्यो है। औ खेतर इतिहास री दीठ सूं उल्लेख जोग तो है ही, साहित्य अर कला रो भी अनूठो संगम है। अठै रा मीलां तांई पसर्योड़ा डीगा धोळा–धोळा धोरा, कोरनी री नायाब कला सूं कोर्‌या मिंदर, देवळा, छतर्‌यां अर हवेल्यां, भोज पत्रां माथै हाथ सूं लिख्योड़ी अणगिणत पोथ्यां, हजारूं बरसां तांई धरती री कोख मे समाया बिरखां रा पत्थर बण्या अवशेष, सै कांई आखे संसार रै सैलाण्यां अर जातर्‌यां नै नूतो देंवता सा लागै। अठै रो समूळो वातावरण, खास करके खुश्क रेतीळो विस्तार, राजस्थान री वनस्पती, मोठ बाजरो रो भोजन, पागडी–धोती अंगरखी रो पैरावो, तीज, त्योहार अर लोक कलावां आज भी बिदेशी परभाव री मिलावट सूं अछूंतो आपरे शुद्ध अर मूळ रूप मैं मौजूद है। इस्सी अणेक खूब्यां सूं भरी इण नगरी नै देखणे री घणी तलब खासे बखत सूं ही। सन् १९७९ री २४ मई नै छः साथ्यां सागे इण रै भ्रमण रो आयोजन कर्‌यो।

जीव सूं प्रातः सात बज्यां कोलायत, भाप मारग मूं जैसलमेर खातर रवाना हुआ। बीकानेर-जैसलमेर सड़क उत्तर पछमाद भारत रो सामरिक महत्त्व रो राज मारग है। बीकानेर सूं १३ कि. मी री दूरी माथै नाळ नाम री जाग्यां मैं सड़क सूं जीवणे पासे सेना रो हवाई अड्डो है। बस्ती डावै पासे है। पाणी री एक छोटी तळाई सड़क रै नेड़े ई है। इण खेतर मैं जिनवारां रै वास्ते ई नहीं, मिनखां सातर भी प्राक्रतिक तळाबों रो घणो महत्त्व है। धरती घणखरी कांकड़ प्राळी है, इण मांयर खेत कम ई देखण मैं आवै। हां! बाळद्यां रा भेड, बकरड्यां रा ऐवड़ थोड़ी-थोड़ी दूर पर दीसता ई रैवे। नाल सूं १० कि. मी. आगे गजनेर गांव आवै जठै रा महलात अर प्राक्रतिक झील देखण जोग है।

गांव रै पछमाद छेड़े आछी ब्रडी सोवणी कुदरती झील है। मीलां लम्बो ढळवों आघोर हूणे सूं बिरखा रै दिनां में दूर-दूर सूं बैह'र पाणी अठै भेळो हू जावै। तीन पासै बड़ा-बड़ा बिरख झील री सोभा बढ़ावै। सरदी री रुत मैं इण झील मैं बसेरो करण ताई साइबेरिया सूं हर साल सैंकड़ूं 'बटबड' नाम रा पंछी उड'र अठै पूगै अर नवम्बर सूं मार्च तांई अठैई रैवे। झील रै आसे पासे आरण है जके मे काळा हिरण, जंगली सूंअर, सियार आद रैवे। अठारवी सदी मैं बीकानेर रै राजा गजसिंह रै नाम पर गांव अर झील रो नाम गजनेर पड़्यो। गजसिंह ही सै सूं पैलां अठै शाही महलां रो निरमाण करायो। महल झील रै दखणाद बण्योडा है।

स्थापत्य कला री दीठ सूं आं री बणगत बौत सुंदर है। इण में दुलमेरा रे लाल पत्थर रो इस्तेमाल हुयो है। नुई-पुराणी शैली मैं बण्या सरदार निवास, टैनिस कोर्ट रो बरासदो, शबनम महल, डूंगर निवास देखण जोग है। महलात रै लारले कानी जेठा मुट्टा रो मकबरो

है, जठै गरम्या मैं मेळो मरै। हिन्दू राजावां रै महला रे मांय मुसलमानां री मजार अर वठै सर्वजनिक मेळां रो आयोजन, साम्प्रदायिक सद्भाव अर राजावां री सदाशयता रो परिचय देवै। बतावै कै अंग्रेजां रै बखत केई वाइसराय इण झील रै सैरगाह मैं आणंद लेणे ताई अठै आ'र इण महलां मैं ठैर्‌या हा। मरु भूम मैं इत्ती घणी हरयावळ आळी सोवणी झील अर चोखो आरण हुणो अपूरव बात ही समझो। बीकानेर राजा रे कार्यालय सूं देखण री इजाजत लैणी पडै, जकी आसानी सू मिल जावै। म्हे लोग १ घण्टा तांई झील अर महलात रै निजारा नै देखण पछै बस्ती मैं पूठा आया। सामान्य चाय नाश्तो ले'र कोलायत तांई रवाना हुया।

गजनेर सूं कोलायत २३ कि. मी दूर है। आधी घण्टा मैं ई बठै पूंच्या। सांख्य शास्त्र रा रचनाकार महर्षि कपिल री निरवाण थळी हुणे रै कारण उत्तर-पच्छमी राजस्थान रै बड़े तीरथां मै इण री गिणती हुवै। इण माथै भी एक विशाल झील अर अनेक सुंदर मिंदर है। मुख्य मिंदरा में कपिल मुनी रो मिंदर, गंगाजी रो मिंदर अर राजावां द्वारा निर्मित पंच मिंदर मानता अर बणगत री दीठ सूं उल्लेख जोग है। स्कंद पुराण मैं भी इण तपो भूमि रो वर्णन आवै। अठै सरस्वती नदी बैहती ही, जिण रै किनारे ऋषि मुनियां रा आसरम बण्योडा हा। कपिल रै नाम सूं कोलायत, माता देहुति रै नाम सूं डेह, च्यवन ऋषि रै नाम सूं चांदी, दतात्रैय रै नाम सूं दियातरा अर जाम रिषि रै नाम सूं जांगेरी आद सूं आज भी इण री प्रामाणिकता खरी ऊतरै।

इण ठाम झील रै तीन पासे सुंदर पक्का घाट बण्योडा हैं। सगळै घाटां पर नीम, पीपल, बड़ अर बोद रा बड़ा विशाल छायादार बिरख है। घाटां री संख्या ८० नेडै है। कार्तिक मास री पूनम नै भारत रै दूजा बडा तीरथां दांई अठै भी बड़ो मेळो भरीजै, जिण मैं लाखूं श्रद्धालु

साधु-संत आद भेळा हुवै। श्राडे दिनां मैं भी सन्यासी, तपस्वी अठै रैवे। श्रो धाम राजस्थान रै अलावा हरियाणा, पंजाब तांई भी मानीजै। लोक देव रै रूप मैं इण री पूजा रो विधान है। इण क्षेत्र में आ भी मानता है कै बद्री-केदार या रामेसर आद री जातरा रै पछै जे कोलायत सिनान नई करीजै तो बा जातरा सफल नी हुवै। लोक देव या खेतर पाळ री महत्ता रो श्रो दोहो भी अठै मसहूर है—'आधा देवी-देवता आधा खेतर पाळ।' सरोवर रै नेडै मोरां री भाछी संख्या विचरण करती दीसै। सरोवर रो वातावरण शांत अर एकाग्रता बढ़ाणे आळो लागे अर मन नै अठै आत्मिक सुख अर संतोष रो अनुभव हुवै। इण मैं तो कोई विवाद नी है कै आध्यामिक भाव अर संस्क्रिति रै समन्वय अर मेल भाव रे नजरिये सूं इसा ठामा री गैरी भूमिका रैई है। इण जाग्यां २ घण्टा सिनान दर्शन आद रै बाद दोपहर रो भोजन बाजार मैं कर्‌यो। बाजार छोटो सो है, कोई ४०-५० दुकानां हुसी। पशु चिकित्सालय, लडक्यां रो माध्यमिक स्कूल, लड़कां खातर उच्च माध्यमिक स्कूल अर तहसील कर्यालय भी अठै है। छोटी बड़ी ३०-४० धरमशालावां भी है, जकी मेले री बखत जातर्‌यां रै आवास री व्यवस्था करै। कुम्हारां अर विश्वकर्मा री धरमशालावां मैं लक्ष्मीनाथजी री सुंदर मूरत्या है, जकी अत्यन्त कलात्मक अर देखण जोग है। थोड़ी देर घाट माथै विसराम कर'र १ बज्यां रूणिचां वास्ते रवाना हुया।

कोलायत सूं दियातरा हुंता ढाई बज्यां नेडै जोधपुर जिले रे बाप कस्बे पूग्या। अठै तीस हजार री बस्ती है। उच्च माध्यमिक विद्यालय, जिनावर री अस्पताल, पोस्ट आफिस, बैंक, अनाज मंडी अर केई दादी संस्थावां है। कस्बे में चाय पीवण खातर थोडी ताळ रुक'र शेखासर अर बुद्धे री तळाई भांकर हुंता सिभ्का ५ बज्यां रामदेवरा पूगग्या। बीकानेर रै मोदयां री धरमशाळ मैं पड़ाव कर्‌यो। जांता पाण ई सामान रा'खर रामदेवजी रै मिंदर रा दर्शन करणे गया। मिंदर रो

आहतो खासो बडो है, जको चौभीते सूं घिर्‌योडो है। पैलां विशाल दरवाजो है। सामैं रामदेवजी री समाध है। निज मिंदर में रामदेवजी री मूरती है। आसे-पासे केई दूजा मिंदर है, जकां में रामदेवजी रै शिष्यां अर बीजा संतां री मूरतां है। इण सैंमूळे उत्तर-पछमाद रे खेतर में रामदेवजी री घणी मानता है। रामदेव विष्णु रा अवतार मानीजै अर मानखे रै उद्धारकर्ता दांई गिणीजै। लोक देव रै रूप मैं इण भाग रै घर-घर मैं रामदेव री पूजा अराधना करीजै। भादवे माह री दसम नै रुणिचे में बोत बड़ो मेळो लागे। राजस्थान ई नईं मध्य प्रदेश, गुजरात अर महाराष्ट्र सूं भी सरधालु अठै ढूकै अर 'रूणिचे रे धणियां' रा हुरखस गांता, अरदास करता आपरी सरधा रा पुसप इणा नैं अरपित करै।

राजस्थान वीर भूमि तो है ही, सतां अर सिद्धां री भी भूम है। कपिल, जाम्भोजी, गोगाजी, पाबूजी, जसनाथजी अर रामदेवजी जिस्या न जाणे कित्ता सिद्ध पुरुष अर लोक देव जन कल्याण हित अठै जिलम लियो। धरम रक्षक रामदेवजी रो अवतार वि. स. १४०६ मैं चैत मास री शुक्ल पक्ष री पांचम नैं हुयो। इणा रा पिता अजमल अर माता मैंणादे हा। कैवत है कै बचपण मैं ई रामदेव भैरव नाम रै राखस रो संहार कर लोगां रै कष्टां रो निवारण कर्‌यो हो। रामदेवजी मानवतावादी अर प्रगतिशील विचारां रा संत हा। बां जात-पात रै भेदां रो अंत कर अछूतां रै उद्धार रो भागीरथ प्रयास कर्‌यो। सच्चा समाज सुधारक अर सहिष्णुता रा प्रतीक हूणे कारण मारवाड गुजरात आद अनेक प्रांता रा हिन्दू-मुसलमान आं री पूजा करै। 'राम सा पीर' रो नाम भी इण सच्चाई नै उजागर करै। आं रै चमत्कारां री भी अनेक कथावां परसिध है। लोगां रो आजूं भी दृढ़ विश्वास है कै रूणिचे री बोलवा सूं निरधना नै धन, पूत; आंधां नैं आंख्यां अर पांगळां नैं पग परापत हुवै।

संतां रो ई परभाव है कै राजस्थान साम्प्रदायिक द्वेष सूं परयां अर अछूतो है। आजादी सूं पैलां अर बाद मैं भी अठै धार्मिक सद्भाव अर आपसी प्रेम रो चोखो माहौल मौजूद है। रामदेवजी रो निवास भी स्मारक रै रूप मैं ओजूं मोजूद है, पण बणगत इत्ती पुराणी नी लागै। सम्भव है बां रै परिवार रै लोगां बाद मैं इण रो उण जाग्यां ही पुनर्निमाण करायो हुवै। बस्ती में एक छोटो तालाब अर बावड़ी भी है। मेले मैं आस्तिक भगत इण मैं सिनान कर मिंदर दर्शन वास्ते जावै।

दूजै दिन २५ मई नै ८ बज्यां जैसलमेर तांई रवाना हुया। करीब ६ ३० बज्यां पोकरण पुग्या। पोकरण खासो बड़ो कस्बो है। दुकानां आधुनिक सज्जा री है, मकान पत्थर रा बण्या है। अठै री भाषा माथै सिंध रो खासो असर है। इलाको रेलीळो है। मिनखां रो पहरावे धोती कुरतो अर पागडी। मुसलमान लुगायां लहंगो कुर्तो पैरे। चूनड़ी कसुमल का गैरे कथई रंग री हुवै। घाघरो चोळी रो प्रचलन भी है। चांदी रा गहणां री बणगत सिंध सूं मेळ खांती हुवै। १९६७ मैं अणु विस्फोट पछै पोकरण नै आखो जगत जाणण लागग्यो है।

पोकरण सूं जयसलमेर ७० मील दूर है। सड़क वाहनां सूं ढाई-तीन घण्टा रो रास्तो है। सड़क रै दोन्यू मेर बाळू अर कठैई कठैई कांकड दीसै। भेडा अर गायां री इण खेतर मैं बोळायत है। जाग्यां-जाग्यां ऊंटा रा टोळा निजर आवै। रोहिडो, फोग, गूंदी, कुंमट अर आक रा रूंख रेगिस्तानी वनस्पती रा परमुख स्वरूप है। चांचा, लाठी, चाचन अर वासनपीर री बसत्यां मांकर जीप जयसलमेर रै कनै पूंचगी। जयसलमेर रे आसे-पासे कांकड री भूम ई बेसी है। कठे कठेई चट्टानां भी है। ईं खातर इण खेतर ने 'मगरो' कैवे। बोट्यां, खेजड़ा, जाळ अर कैर रा झाड़ अठै घणा है। भेड़, बकर्‌यां रा एवड़, खास पत्थर रा मकान अर ढीगा सांठा लोग अठै री विशेषता है। १२ बज्यां रै

करीब भाटी राजपूतां री शौर्य भूम अर महेन्द्र मूमल रै अमर प्रेम री क्रीडा थळी जैसलमेर पूगग्या। स्टेशन सामै धर्मशाला में ठैर्‌या। आ किले री तलोटी में बण्योडी है। उण बखत इण रा आधा कमरा बण चुक्या हा अर दूजे पासे रा आधा निर्माणाधीन हा। किले में पूगण तांई भाटां री आड़ी टेढ़ी सड़क है, जकी चार दरवाजां नै पार कर किले रै चौक तांई पुगै। सामान आद मेल थोड़ी देर विसराम कर्‌यो। धरमशाला रै बारे दोपहर रो भोजन कर पूठा आ'र आराम करणे उपरांत दोपहर बाद नगर भ्रमण रो कार्यक्रम राख्यो।

तीन बज्यां किले खातर रवाना हुया। जैसलमेर रो किलो एक छोटी डूंगरी माथै बण्योडो है। सोनलिया पत्थरां रो भव्य, विशाल अर मजबूत किलो कारीगरी री दीठ सूं बेमिसाल अर मोवणो है। दूर सूं ई देखण आळा इण सूं मोहित हूवै। समुद्र सूं इण री ऊँचाई ६५६ फुट है। किले रो परकोटो ऊँची भींतां आळो है। बिच-बिच में गोळ बुर्जां रो स्थापत्य देखण जोग है। सुरक्षा री दीठ सूं ओ किलो चितौड़ अर रणथमोर मुजीब है। शहर किले रे मांय बस्योडो है। अखय पिरोळ, सूरज पिरोळ, गणेश पिरोळ अर हवा पिरोळ औ चार दरवाजा पार कर किले मे पूग्या। सैर चोखो बड़ो है, पण घणा सा निवासी व्यापार धंधे खातर बारे रैवे। इण कारण नगरी री आबादी कम है अर सैर युनान देश री केई फूटरी प्राचीन पण सूनी शाप दियोड़ी नगरी दांई लागै। पाणी रो अभाव, खेती रा सुभीतां की कमी अर सामंती रजवाड़ां रै अत्याचार रै कारण अठै रे वासिंदां नै आपरी जलम भूम छोड़'र परदेशां बसणो पड्यो। पालीवाल ब्राह्मणां रा किराड़ू समेत सैमूळा गांव इण तथ रा परतख परमाण है। केई जुगां तांई जोधावां री फसल उगाणो अर काटणे आळे जैसलमेर नै आज समय रे विसम परभाव री अनबूझ छाया सूं भण्ड्यो ही पायो जावै। पुराणे जमाने में सिंध, अफगान देश अर अरब देशां सूं व्योपार अर यात्रावां

रो मुख्य मारग हूणे सूं जैसलमेर ऐतिहासिक अर औद्योगिक महत्व रो नगर हो। कर्नल टाड राजस्थान रै इतिहास में इण रे सामरिक महत्व नै खुद मान्यो है। मुसलमानी आक्रमण रै दबाव नै भी अठै भाटी राजपूत सदियां तांई झेलता रैया हा। बर्तमान नगर रो नामकरण ई. १२१२ मैं महारावल जैसल रे नाम माथै हुयो। पैलां 'लोद्रवां' इण खेतर री राजधानी ही।

किले में बण्या महलात बोत सुंदर है। विशेषकर गजविलास, मोती महल, रंग महल अर सर्वोत्तम विलास पत्थर माथै बारीक खुदाई अर सोने री कलम रै काम मैं बेजोड़ कैया जा सकै है। इण मैलां रै कोरनी रै काम मै लोग मंत्रमुग्ध हू'र देखता ई रै जावै। मन करै कै बानै देखतां ई रैवां। किले में लक्ष्मीनाथ, रतनेश्वर महादेव, टीकम जी, सूर्यदेवता, भगवती अर कुल राज राजेश्वरी आद देवी-देवतावां रा देखण जोग मिंदर भी है। जैसलमेर जैन धरम नैं मानणा वाळा लोगां री निवास थली रैई है। इण कारण चतुर्मास करण नैं अठै अणेक जैनाचार्य आंवता हा। उणारै निरदेश मुजीब अठै अणेक कलापूरण जैन मिंदर अर उपासरा बण्या, जका पत्थर री कोरनी खातर आखं जगत मैं परसिध है।

बर्तमान मैं जिण महलां मैं जैसलमेर दरबार निवास करै वै किले री तलोटी मैं बण्योड़ा है। यां में जवाहर विलास अर बादळ विलास री बारीक खुदाई अर पत्थर री जुड़ाई देख्यां ई बणै। छैणी हथौडे सूं हाथ सूं घड़णे-खोदणे मैं कित्तो धीरज, मेहनत अर समय लाग्यो हूसी इण री केवल कल्पना ई आज कर सकां। पत्थर जाणे कलात्मकता अर सुंदरता री जीवती जागती मूरत्यां दाई लागै। आज ना तो प्रस्तर कला रा इस्सा पारखी कारीगर ही मिलै ना इण कला नै संरक्षण देवण आळा समरथ लोग ई।

कलाकारी री दीठ सूं तलोटी में भी केई देखण जोग इमारतां है। आसनी रोड सूं थोडी दूर माथै महता सालमसिंह री हवेली है। पत्थर री घोरी मोडो, बारूयां, गोंखा माथै जाल्यां अर फूल पत्यां रा अनेक आकार प्रकार खोद'र बणायोड़ा है। केला पाडा रै नेड़े पटवां री हवेल्या तो खुदाई रै काम खातर खास तौ सूं परसिध है। हजारूं जातरी अर पर्यटक मध्यकाल रै भारत री प्रस्तर कला रै नायाब अर बारीक खुदाई रै काम नै मन्नमुग्ध हू'र देखता ई रैवे। इण हवेल्यां रै सामै पूग्यां पछै बठै सूं हटण नै मन नी हुवै। ज्योमित रा कित्ता डिजाइन अर पैटर्न इण में है? वां सब में समानता अर अनुपात नै देख'र अचरज हुवै। वास्तव में भवन निरमाण कला में भारत री निपुणता अर कलात्मक सूं देश-विदेश रा कलाकार आज भी प्रेरणा लेवै। नगर में मदनमोहन जी रो मिंदर, सांवले रो मिंदर अर ग्यारह मिंदर भी सरावण जोग है।

जैसलमेर जैन घरम रै लोगां री तो तीरथ थली ही है। दुर्ग रै मीतर ५२ जिनालय समेत चिंतामणि पार्श्वनाथजी रो प्राचीन अर भव्य मिंदर है। इण रो मूरती विशेष पुराणी है। कैवे कै इण रो निरमाण वि स. २ में हुयो। इण नै जैसलमेर री जूणी राजधानी लोद्रवां सूं अठै लाया। इण मिंदर रै मुख्य द्वार रै कनै एक सुंदर तोरण है। उण माथै अलायदा-अलायदा मुद्रावां में अनूठा भावां नै दरसावती आछी मूरत्यां उकेर्योड़ी है। निज मिंदर रो खुदाई रो काम भी आकर्षक है। स. १४६७ रो बण्यो श्री संभवनाथ जी रो मिंदर शिल्प अर स्थापत्य कला रो लूंठो नमूनो तो है ही इण रो वियो आकर्षण 'जिन भद्रसूरि ज्ञान भण्डार' है, जिण में हस्त लिखित हजारूं प्राचीन ग्रंथां रो अमूल्य सग्रह है। देश-विदेश रा सैकड़ूं बिद्वान आं रै अध्ययन तांई अठै ढूकै। स्थापत्य री दीठ सूं श्री शीतलनाथ जी, श्री शांतिनाथ जी अर अष्टापद जी रा मिंदर भी कलापूरण है।

श्री चन्द्रप्रभस्वामी रो मिंदर तीन तल्लां रो है। इण रै दूजे तल्ले में सयंपात री अणेक मूरत्यां है। चोगान पाडा मुहल्ला मैं महावीर स्वामी रो मिंदर है। श्री मिंदर भी जूणो है, सं. १४७३ मैं बण्योडो। पण श्री दूजां जैन मिंदरां जित्तो कलात्मक नईं है। सै मिंदर अर दर्शनीय ठामां रा दर्शन करतां सिम्झ्यां ७ बजग्या। बाजार मैं भोजन कर ८.१० बज्यां तांई पूठा धरमशाला पूग्या अर रात्री विसराम कर्यो।

आगले दिन प्रात: ६ बज्यां जैसलमेर रै विशाल सरोवर अर इण रै मायं बणायोड़ी कलात्मक प्रोल देखण नैं निसर्या। जैसलमेर नगर रै पूरब दिशा मैं ओ तालाब महारावल घड़सी (१३१६-१३५२) रै द्वारा बणवायो गयो हो। ओ तालाब खासो बड़ो है। इण रो आधार दूर तांईं फैल्योडो है। बरसात रो पाणी बै'र इण मैं भेळो हू जावै अर सालूं नईं खूटै। जैसलमेर मैं कुंआ भी कम ई है। मरुनगर रा वासिंदा इण तालाब रो ई पाणी पीवण नैं काम मैं लेवै। इण कारण तालबा रो विशेष महत्त्व है। जल रो एक पर्याय 'जीवन' भी हुवै। इण पर्याय रो गैरो मारथ जैसलमेर सूं वेमी और कुण जाणै। इण तांई अठै रा कवियां इण सरोवर रै मीठै पाणी री प्रशंसा मैं लिख्यो है—

> का अमरत आकाश रो, का सोरम री सीर
> तनड़ो-मनड़ो तारणो, गढ़मलिये रो नीर।

इण इतिहास परसिध तलाब रै एक कुणे मायं 'टीला प्रोल' नाम री कलापूरण इमारत है। इण रो निरमाण टीला नाम री भगतण करायो। प्रोल री तिबार्यां, बार्यां, झरोखा अर टोड्यां री बणगत परम्परा मुजीब है अर जाल्यां, फूल पत्यां री घड़ाई कटाई री चकित करन आळी कारीगरी है। प्रोल रे ऊपरले हिस्से मैं सत्यनारायण रो

मिंदर है, जकै में भ्राष्टघातं री मोवणी मूरती विराजै। अनीत धंधे मैं पड़ी वेश्या री धार्मिक भावना, मातृभूमि रै प्रति प्रेम भर कलात्मक रुचि रो इसो प्रेरक उदाहरण दूजो कम ही देखण नैं आवै। कैवे कै टोला ने अहमदाबाद रै बादशाह स्थाई रूप सूं आपरी पासवान बणावण तांई प्रस्ताव कर्‌यो, पण टोला भा कै'र बठै बसनै सूं नटगी कै गडसीसर रै मीठै पाणी री ओळयूं मनै भ्रापणे देस सूं अळगो नी रैवण देवै। जमल भूम रो इसो एकनिष्ठ प्रेम जाण–सुण'र टीला रै प्रति पर्यटकां मैं सरधा भर सम्मान रो भाव ऊपजै। इण तलाब रै डावै कानी गजसिंह जी रो कलात्मक गजमिंदर है, जको स्थापत्य री दीठ सूं सरावण जोग है।

दस भज्यां गड़सीसर रै नेडै ई थित 'फोक लोर म्युजियम' नाम रे संग्रहालय नैं देखण ने गया। औ सग्रहालय नंदकिसोर शर्मा नामक रै एक शिक्षक री साधना रो फळ है। बारहवी सूं बीसवीं सदी तांई रा चित्र, लकड़ी रो उपयोगी सामान, जीवाश्म, हाथीदांत री कलात्मक जिसा, पुराणा लोक वाद्य आद रो इसो अजब संग्रह अठै है कै पुराणी पीढ्‌यां रो सैंमूळो जींवतो निजारो भ्रांख्यां सामैं परतख घूमण लागै। इण मैं पांच कमरा है। पैले कक्ष मैं लोक शैली रा जूणा मांडा, चौपड, कांच अर चीढ्‌यां रै काम री पोशाकां अर जैसलमेरी शैली रा चित्र है, साधारण आदमी रे जीवण रो प्रामाणिक इतिहास बतावण आली सामग्री। दूजे कक्ष मैं लाखूं बरसां तक धरती में दब्या पेड़ां सूं पत्थर बण्या नमूना अर शंख, कौडी, मछली, मेंढक रा जीवाश्म जका भारत रै परसिध सूं परसिध भ्रजायबघरां मैं भी देखण नैं नी मिलै। इण मैं ई दो–एक शताब्दी पैलां रे हस्तलिखित ग्रंथों रो संग्रह है। तीजे कक्ष मैं रामदेवजी रा घोड़ा, राम, लक्ष्मण, सीता रा लकड़ी रा घूमता मिंदर, कावड़, सतियां रा चित्र, महेन्द्र मूमल रै अमर प्रेम प्रसंग रा चित्र आद दर्शायोड़ा है। चौथे कमरे में हाथीदांत रा चूड़ा, पत्थर रा

चकलोटा, खरल, पाबूजी री पड़, गैणां राखण री पेट्यां, पत्थर रा गैणा, पत्थर रा बर्तन आद रो कीमती खजानो। पांचवे कक्ष मैं नड़, अळगोजो, सारंगी, एकतारो, बांसरी, दिलरुवा, रेवाज, कमायचा, रावण हत्था आद परम्परागत बाजा अर वाद्य है। इण अकूत संग्रह नैं देख'र एक आदमी री खिमता अर सामर्थ मार्थं अचरज अर सरधा भाव जागै। प्रेरणा मिलै कै एक धेय निष्ठ आदमी भी संसार नैं बौत कुछ दे सकै है।

धमरशाल आ'र भोजन रै उपरांत थोडो विसराम कर डेढ़ बज्यां जीप सूं नगर रै नेड़े कनै रा मिंदर देखण तांई निकळ्या। जैसलमेर रै पछमाद ३ मील दूर अमर सागर नाम रो खबसूरत बाग अर तळाब है। महारावल अमरसिंह (सं. १७१६ सूं १७५८) आपरै राजकाल मैं इण रो निरमाण करायो। इण सरोवर रै आयूणे पासे अमरेश्वर महादेव रो मिंदर अर दखणाद कानी महता हिम्मतरामजी पटवा रै बणवायोड़ो बड़ो जैन मिंदर है। इण मिंदर री भींता माथै बारीक खुदाई री चोखो काम है। चारूं मेर फलदार रूंखां री बोळयत है। आम, जामफल, अनार, जामुण, मौसमी रा दरखत ठेठ मारू प्रदेश मैं देख'र सुखद अनुभव हुवै। सुगन्धी आळा फूलां री महक बिखरती बयार्‌या भी दर्शकां रो मन मोवै। म्हे गया जद तलाब मे खासो पाणी हो। सैंमूळो क्षेत्र हरियाबळ अर पाणी री मोजूदगी सूं बौत सुंदर अर आकर्षक लागै। प्रकृति री विभूति अर कलापूरण मिंदर रो संगम इण ठामां री शोभा नैं दुगणी कर देवै। अठै अमरसिंह री बणवायोड़ी एक बावडी भी है। तलाब सूं छण'र बावडी मैं मांय सूं मांय पाणी भरीजै। ओ पाणी शीतल अर स्वस्थ बणाणे आळो हुवै।

अमर सागर मैं आदिनाथजी रा तीन जैन मिंदर है। पैलो मिंदर सड़क रै सारै मुनि डूंगर जी री बेरी नेडे है। इण री प्रतिष्ठा

१६०३ में रणजीतसिंह जी रै बखत में हुई । दूजा दोन्यूं मिंदर जैसलमेर रै पटवा सेठां रा बणवायोडा है। छोटो मिंदर सं. १८६७ में सवाईरामजी द्वारा अर बडो मिंदर सं. १६७८ हिंम्मतरामजी रै बणवायोडो है । बड़े मिंदर री मूरती कोई डेढ हजार बरस पुराणी बताईजै । बडो मिंदर दो तल्लां रो है । कारीगरी री दीठ सूं अमर सागर रा मिंदर जैसलमेर रै दूजां जैन मिंदरां रै मुकावले रा ई है। इणां रै बारीक जाळी झरोखे रो काम देखण जोग है। विद्वान अर कला पारखी श्री पूरणचन्द नाहर आं नै 'मूल्यवान भारतीय कला रा दर्शनीय नमूना' कैयो है । दो घण्टा ताई इण ठाम रो अवलोकन कर ३.३० बज्यां लोद्रवा तांई चाल्या ।

लोद्रवा अमर सागर सूं ७ मील दूर पच्छमाद में है। दस-पंद्रह मिनट में बठै पूगग्या । लोद्रवा जैसलमेर री जूणी राजधानी ही। लोद्र राजपूत अठै रा रावल हा । इण कारण ई औ नाम पड़्यो। जैसलमेर रै शासकां रा पूर्वज भाटी रावल देवराज स. १०८२ में लोद्र राजपूतां नै हरा'र आपरी राजधानी बणाई जकी रावल जैसी रै जैसलमेर बणावणे तांई कायम रैई। लोद्रवा मे प्राचीन काल सूं पार्श्वनाथ जी रो मिंदर हो। सिंघ अर अफगनिस्तान सूं सीधो ब्योपार हूणे सूं जैसलमेर खासे सम्पन्न नगर हो। मोहम्मद गोरी इण नगर माथै हमलो कर्‌यो अर इण मिंदर नै भी नुकसान पूंचायो । सं. १६७५ में भणसाली थाहरुसाह इण रो पुनरुद्धार कर'र मोजूद मिंदर बणवायो। पार्श्वनाथ जी रै मूल मिंदर रै चारूं मेर छोटा मिंदर है। लोद्रवा रै मिंदरा री विशेषता आ है कै नींव रै बाद मकराणे री आडी भीत है, उण माथै सीधी भीत है। स्थापत्य री अनूठी रचना इण नै कै सका ।इण मिंदर रै ऊपरले हिस्से में धातु कल्पवृक्ष बण्यो है, जकै में अनेक भांत रा फल मांड्योड़ा है। बिरख सुंदर अर कलात्मक है। मूल मिंदर रै सभामंडल में शतदल पद्म यंत्र रो प्रशस्ति रो एक सिलालेख

है, जको अलंकार शास्त्र रो चोखो नमूनो है। सँमूळो मिंदर सफेद मरकाणे सूं बण्यो है, जको ऊजळी प्रामा विसेरतो सो लागे। मूल मिंदर री सीढ्यां ऊपर एक गोखो है। दर्शनार्थी नै खासी दूर सूं भी इण गोखे मांय कर मूरती रा दर्शन हुंवता रैवे। मिंदर रै मांय प्रत्यंत भव्य तोरण है जको स्थापत्य कला रो प्रकूंत नमूनो है। आज रै वैज्ञानिक युग मैं इसा कलापूर्ण मिंदर खासी कल्पना री बात रैयगी है। इणा रो परतख दर्शन अर साक्षात्कार नै सोभाग गाण'र घणो आणद आयो।

पार्श्वनाथ मिंदर सूं करीब एक मील दूर लोक गाथावां री अमर नायिका अर सुंदरता री मूरत मूमल रो महल है। बठै एक गाइड म्हाने खण्डहर जिसे घर मैं घूमांवता, बारले पासे नाळै तांई दीसते सूखे ठाम रो परिचय दियो। बतायो कैंद आ काक नदी पाणी सूं भरी रैंवती ही। अमर कोट रो राजकुमार महेन्द्र अठै री रूप सुंदरी मूंमल रै प्रेम आकर्षण मैं बन्धो रोज रात मैं ३०० मील ऊंटरी सवारी कर अठै पूग'र नदी पार कर मूंमल रै महल आंतो तो दिनुगे सूं पैला ई अमर कोट पूठो ढूक जातो। मूंमल रै महल रो खण्डहर आज भी प्रेम री गैराई अर पावनता रो संदेश देतो दीसै। खासी ताळ तांई अतीत री इण पवित्र याद मैं मगन भावां मैं चुपचाप डूबता–तिरता रैया। एक साथी सिम्हा पड़णे री बात कैई जद भळै चेतना आई अर पूठा जैसलमेर तांई भ्रात्म विभोर प्रवस्था मैं रवाना हुया।

आज भी ऐकांत छणां में जद जैसलमेर री स्मृतियां उमड़ै, उच्च कला सौंदर्य री झांकी सूं मन मायो आनन्द अर संतोष सूं भर जावै। उजाड़ सो लागण भ्राळो ओ नगर इतिहास, स्थापत्य कला, लोक कलावां भर प्राचीन ग्रंथां रो अपूर्व भंडार हूणे रै कारण यथार्थ मैं 'म्यूजियम सिटी' कैवावण जोग है। इण रो 'सोनार किलो' आपरे विशाल घेरे मैं मध्यकाल री मरु सभ्यता नै जीते–जागते रूप मैं दर्शाणे मैं आज भी अनूठे रूप सूं सफल है।

मिली-जुली संस्क्रिति रा ठाम

मध्य जुग रा मुगल सम्राट महान भवन निरमाता हा । वणा रा बणवायोड़ा किला, महल, स्मारक यूं तो सैंमूले देश रे भिन्न-भिन्न भागां में मौजूद है, पण इतिहास री दीठ सूं बौत महत्व री, कला री दीठ सूं अत्यन्त श्रेष्ठ अर अनूप अर संस्क्रिति री दीठ सूं भाईचारे अर मेल-जोल री प्रतीक अनूठी इमारतां कठैइ देखण नैं मिले तो वै नगर है फतहपुर सीकरी अर आगरा । शाहजहां रै राज मैं दिल्ली सूं पैला आगरा अर फतहपुर सिकरी ही मुगलां री राजधानी रैया । अन्तरराष्ट्रीय शांति बरस १९८६ मैं राष्ट्रीय एकता, सद्‌भावना अर सांस्क्रितिक समन्वय थापना हेतु महाविद्यालय रा रोवर छात्रां एक अन्तर प्रांतीय साहसिक जातरा रो आयोजन १७ अक्टूबर सूं बीकानेर सूं आगरा तांई रो कर्‌यो । जयपुर, भरतपुर, डीग देख'र २१ अक्टूबर नैं १९ सदस्यां रे दल साथै बस सूं फतहपुर सीकरी पूग्या ।

सीकरी आगरा सूं ३७ कि. मी. अर भरतपुर सूं ५० कि. मी. दूर है। सड़क सूं दखणाद नेड़े ही किलो अर बस्ती है। बतावै कै अठै अकबर रे जमाने में परसिध मुस्लिम सूफी संत शेख सलीम चिश्ती रैया करता हा । अकबर संतान पराप्ति खातर वां री सेवा मैं हाजिर

हुयो। उण रे आशीर्वाद सूं हिन्दू राणी जोधाबाई रै पुत्र सलीम जलम लियो। बाद में सलीम ही जांहगीर रै नाम सूं साम्राज्य रो उत्तराधिकारी हुयो। चिश्ती सूं परभावित हू'र अकबर आपरी राजधानी आगरे सूं फतहपुर सीकरी लेग्यो। सन् १५६९ ई. में अकबर सीकरी में बड़े किले रो निरमाण सरू करायो। पांच-छ: सालां में ही इण महलां, मस्जिदां अर दूजे भवनां री पांत खड़ी हूयगी। अठै १५ बरसां तांई अकबर रे राज्य री राजधानी रैयो। अकबर अठै सूं ई गुजरात माथै धावो बोल'र उणनै फतह कियो।

बुलंद दरवाजो ई. १६०१ में बण्यो। बस स्टाप सूं दखण री संकड़ी सड़क सूं सौ गज ही चालणो पड़ै। इण सड़क माथै घणी सी दूकानां खाणै-पीणै री है। चाय, दूध, नास्ते रा होटल है। अठै मावे री चीजां भी चोखी बणै। रबड़ी अर मिश्री मावे रो भी अठै प्रचलन है। इण बजार रे आखिर में सड़क रे पछमाद ऊंचा पगोथिया चढ़'र बुलंद दरवाजे पूगीजै। दरवाजो नाम मजूम खूब ऊंचो है। इण री ऊंचाई १७६ फुट है। कैवे के औ दुनिया रो सै सूं ऊंचो दरवाजो है। ई. १६०० में दखण विजय री यादगार रै रूप में इण नै बणवायो गयो। दरवाजे रो चहरो लाल पत्थर रे बीच संगमरमर री बड़ी-बड़ी पट्यां जड़'र बणायो है। ऊपरले हिस्से माथै कंगूरा अर तीन छतर्यां आला गुम्बद है। दरवाजे रो ढांचो विशाल अर आकरषक है। मूल चहरो आयताकार है। उण नै दोनूं पासे तिरछो मोड़ दियो है, इण सूं शिल्प घणो कलात्मक लागै। इण दरवाजे रे बारे गाइड खड्या रैवे। १० सूं १५ रु. तक वै एक समूह साथै इमारतां रो इतिहास आद बतावणने वास्ते तैयार हू जावै। गाइड कर लेणो उपयोगी हुवै।

दरवाजे मांय बड़ता ही बड़ो खुल्लो चौक है। इण रे एक कूणै में शेख सलीम चिश्ती री संगमरमर रो भव्य मजार बण्योड़ी है।

दरगाह री ऊंचाई २४ फुट है। इण री भींत मकराणे री बारीक जाळ्यां सूं बण्योडी है। तराश रो काम बौत महीन अर सोवणो है। सामळे हिस्से में पगोथियां ग्रागे चौड़ी चौकी है जिके माथै दरवेश अर कव्वाल ग्राद बैठ्या रैवे। सामैं संत री मजार है, जकै रे चारूं मेर परक्रमा रो घेरो छोड्योड़ो है। लूबाम अर अगर री सुवास सूं वातावरण सुगन्धित रैवे। सरधालुवां ग्रर दरसकां रो तांगो लाग्यो ई रैवे।

इण चौक रे एक कुणे में दरवाजे रे कन्ने ई पुराणो ऊंडो कुंओ है। केई तैराक अठै ऊभा रैवे। सैलाण्यां सूं रुपयो दो रुपयो आदमी दीठ भेळा कर'र दस-पंद्रह देखणियां हुणे सूं बुलंद दरवाजे री छात सूं कुए में छलाग लगा'र पर्यटकां रो मनोरजन करे। जान जोखम आले इण करतब सूं लोगां नै हैरत हुवै अर सैं उण तैराक री तारीफ करे अर शाबासी देवे। मजार रै लारे विशाल जामा मस्जिद है। इबादतगाह रो मूडो पछम मैं है। इण इबादतगाह रो दरवाजो भी खासो ऊंचो है। दोनूं कानी खुल्ला लम्बा सुदर बरामदां सूं जुड़ी मस्जिद स्थापत्य कला री दीठ सूं सोवणी लागै। कैवे के आ मस्जिद भी दुनियां री सैं सूं बड़ी मस्जिदां मैं एक है।

सीकरी रे किले मैं देखण जोग अनेक भवन है। दीवाने खास लाल पत्थर रो विशाल सभागार है, जकै में हजार डेढ़ हजार आदमी आसानी सूं ऊभा रै सकै। पचासूं बड़ा-बड़ा खम्भा माथै भवन री छात खड़ी है। दीवाने खास री इमारत छोटी पण घणी कलापूरण है। इण भवन रे बीच एक अति कलात्मक खम्भो है। लाल पत्थर रै इण खम्भे माथै उभार ग्रर फूल-पत्त्यां रा नमूना बणायोड़ा है। खम्भो नीचे सूं बड़ो ग्रर समचौरस है। बीचाळो भाग भी वर्गाकार है, पण कम चौड़ो है। ऊपर चारूं मेर सुंदर टोड्यां टिकी है, जकी नीचे सूं पतळी ग्रर ऊपर कमल रै पुसप दांई खिल्योडी ग्रर फैल्योडी है। इण माथै पत्थर

री तरास्योड़ी खड़ी जाळी री म्राड सूं बादशाह रै आसन री जाग्यां बणायोड़ी ही। ऊंवे के इण खम्भे नीचे ही अकबर रा समासद दीने–इलाही रो संदेश सुणता। अकबर ईश्वर री एकता, इंसाना री समानता अर परस्पर प्रेम रै उदार सिधांता नैं जन–जन मैं फैलावण वास्ते ही सब धरमा रै आदर्श सिधांतां ने दीने–इलाही मैं एकल किया हा। सूफी संता रो प्रेम माव, इस्लाम री एक ईश्वर मैं निष्ठा अर हिन्दुआ री सहिष्णुता अर उदारता इण मैं शामल ही। जे इण नूवे सम्परदाय रे सिधांतां ने मारत रा लोग इण जमाने मैं अपणा लेंता तो भिन्न–भिन्न सम्परदायां रा आपसी झगड़ा खतम हूणैं री सम्मावना अर माई चारे री थापणा हू सकती ही। पण कट्टरपंथी मुल्ला अर रूढ़िवादी पंडित हो सैंज इंसानियत रै मारग मैं सदा म्राडा आंवता रैया है। म्राज भी अकबर री दूर द्रष्टि अर मजबी उदारता वर्तमान युग री सम्मस्या रो व्यवहारिक निदान लागै।

किले रा बीरबल महल, जोधाबाई महल भी सुंदर हूणे रे सार्थ साथ अकबर री समन्वय भावना अर हेल मेल रे सुमाव रो परिचय देवे। पंच महल रो निरमाण भी कलात्मक है। एक रे ऊपर एक मंजिल चूड़ीदार रूप सूं बण्योडी है। नीचे री मंजिल बडी है। ऊपर री मंजिल पिरामिड दांई तर–तर छोड़ी हूंती जावैं। शाहबुर्ज मायैं खड़ा हूं'र बादशाह किले रे बारे रो जायजो लेंता। हिरण मीनार मी खम्बे री शैली री आच्छी इमारत है। बीच रैं भाग मैं शूळा रो उभार दिखायोड़ो है। आ इमारत अकबर आपरे प्रिय हाथी 'हिरण' री याद मैं बणवायी ही। नीचे एक बड़ो चबूतरो है। उण मायैं छोटो चबूतरो तद चबूतरे मायैं मीनार। हिरण मीनार भळे अकबर री उदारता रो प्रतीक कैयो जा सकै।

फतहपुर सीकरी री इमारतां अर महलां रो वास्तुशिल्प इत्तो

अनूठो है कै वास्तुविद इणा ने 'पत्थर मैं ढ़लो परीकथा' कैवे। नगर री सांकड़ी, धूड सूं मर्योड़ी हाका करती सड़क सूं जद कई तल्ला मकान जिसी निसरणयां चढ'र बुलंद दरवाजे रे लारले विशाल चौक में पूगैं तो भव्य सफेद आंगण, ऊपर नीलो ग्रामो, आडम्बरहीन शानदार मस्जिद ग्रर शांत वातावरण एक'र सैलायुयां नैं थोड़ी ताळ खातर संसारिकता सूं परियां ले जावै। मस्जिद रै बाद ग्रकबर ग्रर राज परिवार रै लोगां रा महल वाने फेर इण लौकिक जगत मैं ले ग्रावै। रैवास रे मवनां मैं न तो मकराणे रो परयोग है, न जडाऊ कीमती पत्थरा रो काम। शिल्प री सादगी, उपयोगिता ग्रर रचना ही दर्शकां नैं परभावित करै। ग्रठै री दूजी विशेषता भवन रचना मैं देशी शिल्प शैली रो परयोग है। भारत रा घरां में, चावे वै गरीब रा साधारण मकान हुवै का राजावां रा महल, तीन माग हुवै। चौक ग्रर आंगण रो खुल्लो भाग, तिवारी ग्रर बरसाळी रो ग्रध खुलो भाग ग्रर उणरे लारे कोठड़ी रो बंद भाग। फतहपुर सीकरी रै महलां ग्रर रैवास री दूजी इमारतां मैं इणी रो इस्तेमाल हुयो है। इण रै ग्रलावा भारत रा शिल्पी जाण-बूझ'र रैवास री जाग्यां नैं एक सिलसिलेवार इकाई रै रूप मैं बणावै। सीकरी री बड़ी-बड़ी इमारतां, खुला राळियारा, मण्डप, पक्के फर्श वाळा आंगण, हौज, फंवारा सैं कुछ मिल'र खुले उजाळे ग्रर हवा सूं युक्त एकता रो सामूहिक एहसास देवै।

सीकरी रा ग्रै ग्रालीशान, ग्रेकला ग्रर सूना महल ग्राज भी गरब सूं माथो उठा'र कैता दीसे कै ग्रठै बो नगर हो जकै रे निरमाण तांई देश-विदेश रे सवोत्तम कारीगरां रो हाथ हो। द्रढ़ता, सुघडता ग्रर कला री सम्पूरणता री दीठ सूं ए ग्रनूठा है, इण मैं एकै कानी इरान ग्राद री मुस्लिम शैली तो दूजे कानी दखण, गुजारत ग्रर मुख्य रूप सूं राजस्थान री हिन्दू वास्तु शैली रो उणियारो साफ झांकतो लागै। जोधाबाई रै महल रा संतुलित ग्रनुपात, बीरबल रे महल री दुछत्ती

अर पंच महल री आक्रति माथै तो मिली जुली शैलियां रो और भी वेशी प्रभाव दीसै। सीकरी रो निरमाता अकबर हिन्दू अर मुस्लिम सस्क्रिति री मेल केई स्तरां मैं देखणो चांवता हो।

सीकरी सूं सिझ्या पांच बज्यां आगरा खातर रवाना हुया। बस स्टैंड सूं तांगो कर'र आगरा फोर्ट स्टेशन आगे बाजार मैं मूरत्या बणाणे आळा सिलवटां री दूकानां रै कनै गुजरात गैस्ट हाउस मैं ठैर्‌या। भोजन रै उपरांत उण दिन तो बाजार मैं ही चहल कदमी करी। २२ तारीख नै दिनुगे ६ बज्यां आगरा रो इतिहास परसिध किलो देखण ताई नावड़्या। किलो रेल्वे स्टेशन रे लारे नैडो ही है। थोड़ी ताळ मैं पैदल ही पूगग्या। मुख्य गेट माथै टीकट ले'र प्रवेश मिलै। परकोटे री भीत सारै ढालू मारग सूं थोडो ऊपर चढ'र मळै एक पिरोळ आवै। थोडो ऊपर खुले चौगान है। पूरब दिशा मैं सारे दुमंजली विशाल इमारतां है।

बादशाह अकबर ईनै ई. १५६३ मैं बणवायो। बाद रै बादशाहां भी इण मैं आपरा जुदा महल भळै खड़ा कर्‌या। यूं तो इण मैं भवनां री संख्या सैंकडूं माथै हूसी। पण उल्लेख अर सरावण जोग इमारतां मैं दीवने आम, दीवाने खास, मोती मस्जिद, खास महल, जहांगीर महल आद विशेष है।

दीवाने आम रो भवन खासो बड़ो है। महल रे मांय सूं ऊपर री मंजिल मैं बालकोनी दांई आगे निकळ्योड़े ऊंचे गौखे मैं बादशाह रो तख्त हुंतो। नीचे विशाल सभाघर पचासूं बड़ा-बड़ा खम्भा माथै खडो है। इण मैं सभासद आपरे ओहदे मजूब खड्या हूंता। दीवान, सिपहसालार आद रै बाद चालीसहजारी मनसबदार आगै रैवा उण रै लारे तीस हजारी, बीस हजारी आद। साथै आळे गाइड बतायो कै

इस भवन मैं लारे तीसरी पांत आळै खम्भा मैं एक रै कनै ५ हजारी मनसबदारा मैं शिवाजी नै खड़्यो कर्‌यो हो। राजा जयसिंह री मनुहार पर शिवाजी औरंगजेब सूं संधि करणे आ तो ग्या पण उचित सम्मान न मिलणे कारण क्रोध मैं बादशाह नै पीठ दिखा'र दरबार सूं सागी पगा पूठा टुरग्या। साच ही कैवे सिंघां रै नकेल घातणी किसी सोरी हुवै।

जहांगीर महल लाल पत्थर ग्रर मकराणे सूं बणी विशाल इमारत है। इण ने सरू तो अकबर करवायो हो पण आ सम्पूरण जहांगीर रै समय हुई। इण भवन रे बीचो बीच मूळ दरवाजो है। दोमू पासे एक ग्रनुपात सूं बण्या भवन है। भवन रे सिरां माथै आगे निकल्योड़ा गोलाकार महल हैं, जकां रै उपर गुंबद आळी खुल्ली छतर्‌यां है। सैमूळो भवन हिन्दू वास्तुकला सूं केई तरां घणो परभावित है।

खास महल पूरण रूप सूं संगमरमर रो बण्योडो है। इण रो फर्श भी सगमरमर रो है। भवन छ खम्भां माथै खड़्यो है। छत माथै दो छोटी कलात्मक छतर्‌या है। इण महल रो निरमाण शाहजहां ई. १६५७ मैं करायो। औ बादशाह रै निजी ग्रावास रै काम आंवतो। अठै सूं ताजमहल रो द्रश्य भी दीसै। इण रै आगे संगमरमर री एक चौकी भी पडी है। चौकी माथै बैठ'र लोग फोटू खिचवावे जकै री पृष्ठ भूग मैं ताजमहल रो भी फोटू साथै आ जावै। म्हे भी साथ्यां साथै यादगार रूप मैं ग्रुप फोटू लिरवायो।

मोती मस्जिद री इमारत भी भव्य ग्रर विशाल है। आ भी विश्व री बड़ी मस्जिद मैं एक गिणीजै। इण माथै भी हिन्दू मुस्लिम भवन निरमाण कलावां रो परभाव है। मस्जिद सूं थोड़ी दूर चमेली

महल है । इण महल मैं बो ठाम भी देख्यो जठै बूढ़े शाहजहां ने उणरे बेटे आपरी राज करणे री महत्वांकाक्षा खातर कैद कर'र राख्यो हो। राजनीति रा ओछा हथकण्डा जो नी करावै सो थोड़ो ।

आगरे रो किलो दुर्ग निरमाण कला रो चोखो उदारण है। सैमूळो किलो लाल पत्थर री भींतां सूं बण्यो है । किलो दो बड़ा अर्ध चंद्राकार घेरां मैं बण्योड़ो है, जकां री लम्बाई २ कि. मी. बतावै । बारले पासे ६ मीटर चौडी खाई है । बीच-बीच मैं बड़ी-बडी बुरज्यां अर बन्दूक आद चलावणे खातर मोरचा है । दखण पूरब मैं दुर्ग रै सारै जमुना नदी बैवे । इण सैं कारणां सूं आगरे रो किलो उण जमाने रे चोखा सूं चोखा हथियारां री मार झेलणे री खिमता राखतो हो ।

भौगोलिक अर राजनैतिक दोन्यू दीठ सूं आगरे रैं किले रो लूंठो महत्व हो । जमुना अर चम्बल रैं संगम रैं नेडे बण्योडे इण किले सूं पछम रा राजपूत राजावां माथै निजर राखणो सोरो हो । मालवा माथै हमलवार सेनावां रे कूच अर प्रयाण नैं अठै सूं बराबर देख्यो जा सकै हो । अर गंगा री घाटी मैं मौजूद प्राकृतिक साधना अर सम्पदा माथै कब्जो राखणे मी राज री थिरता खातर जरुरी हो । इण रैं अलावा साम्राज्य रैं बीचो बीच हूणे सूं व्यवस्था रे संचालन मैं भी उपयोगी समझ्यो जांतो। जे कैवां कै मुगल साम्राज्य रे बजूद अर सुरक्षा तांई आगरा रे किले रो शीर्ष स्थान हो, तो की गलत नी है ।

आगरे रैं किले सूं २ मील दूर ही विश्व विख्यात ताजमहल है । भोजन रे उपरांत १ बज्यां तांगा मैं बैठ पूगग्या । ताजमहल रो प्रवेश द्वार भी लाल पत्थर री बड़ी आकर्षक चौरस इमारत है । इण रे जीवणे बाजू आछी दूब रो हर्‌यो बाग है । सामैं पुलिस री चौकी है । दरवाजे माथै एके कानी टिकट घर है । गुम्बद रे नीचे फोटो, एलबम, ताज

सम्बन्धी किताबां, पत्थरां, माडल कला री चीजां आद रो छोटो एम्पोरियम है। अठै फोटोग्राफर अर गाइडां री भीड़ मण्डी रैवै। आखे संसार रा सैलाणी खासी बड़ी संख्या में दीसै। दरवाजे रै पार लम्बा चौडा व्यवस्थित सोवणा बगीचा है। बीचो बीच फंवारां री लम्बी नियोजित कतार अर दूर ऊंचे बड़े वर्गाकार चबूतरे माथै उजळै मोती दांई चमकतो ताज रो जगत विख्यात मकबरो। शाहजांह आपरी प्रिय बेगम मुमताज री मौत रै बाद उण री यादगार रूप में ई. १६५३ में ईं रो निरमाण करवायो। २० हजार कारीगरां १६३० सूं १६५२ तांई २२ बरस री सतत श्रम साधनां सूं इण अनूठे मकबरे नै बणायो। इणरो नक्शो फारस रै परसिध शिल्पकार 'उस्ताद ईसा' त्यार कर्‌यो। भारत, ईरान, मध्य एशिया आद रै कुशल सिलावटां री अनेक पीढ्यां रो अनुभव इण नायाब मोती रै रूप में फलित हुयो। इण री खूबसूरती अर कलात्मकता माथै मोहित हु'र एक अमरीकी महिला अठै तांई कै दियो कै जदि म्हारी मौत पछै कोई अत्तो सुंदर मकबरो बणावै तो हूं आज ही मरण त्यार हूं।

लाल पत्थर रै ऊंचे चबूतरे माथै थित इण री मुख्य इमारत घनाकार है। उण माथै ५७ मीटर ऊंचो धोळो गुम्बद हवा में तिरतो उजळै बादळ रो टुकडो सो लागे। वर्गाकार चबूतरे रै चार कुणां माथै सफेद मोमबत्यां जिसी सोवणी चार मीनारां बणी है। इमारत रै चहरे, आजू बाजू री भींता अर गुम्बद री छात माथै बेल, बूंटा अर रेखिक कला रा अति बारीक सोवणा नमूना बणायोड़ा है, जाणै चांदी बरणां वस्त्र माथै सोनलिया अर भांत-भांत रै दूजा रंगा रो जीनसाधी कलात्मक काम कढ्योड़ो हुवै। मकबरे री सीधी सपाट देवळ्यां री किनार्‌यां माथै बारीक केसां दांई छोटी लकीरां री सजावट केई मासूम गोरे शरीर माथै नजरबट्टू (डीठौने) री सी लकीर दांई लागै। मकबरे री वस्तु शिल्प में जोमित री लकीरां रो तालमेल कला

री चरम उन्नत सीमा नै दरसावै । मन संगीत री ग्रमूर्त तरंगा दांई ग्राप ग्रनूठे आनन्द सूं हिल्लोरां लेण लागै ।

गुम्बद रै ठीक नीचे ऊपरले कक्ष मैं शाहजहां ग्रर मुमताज री कब्रां री नकल है । इणां रे चारूं मेर खड़ी जाली रो अति वारीक सोवणो तरासगिरी को काम है । मांयली भींता अर मजार माथै भी वेलबूंटा है । नीचे पगोथियां उतर'र ग्रसली मजार माथै पूगां । मूल रूप ने हानि नहीं पूंचै इण खातर बिजली मकबरे रै मांय नी लाईजी है । मोमबती ही रोशनी मैं मजार दिखावै । कलात्मक भव्यता ग्रर सुरुचि रो गैरो परभाव देखण आळां माथै पड़ै । ग्रकीक, कहरुबा, पन्ना, मूंगा, मैलाकाइट आद भांत-भांत रे कीमती नगा री झीणी चादर सूं मूल मजार ढकी लागै ।

मुगल बादशावां मैं अकबर ग्रर शाहजांह ग्रै दोन्यूं भवन निरमाण री दीठ सूं सैं सूं बेसी कैंवण जोग काम कर्यो । ग्रां री वास्तु रचनावां मैं आधी सदी रो ग्रंतर है, पण इत्ते समय मैं देश री भवन निरमाण कला मैं खासो फरक आग्यो हो । ग्रकबर री बणवायोड़ी इमारतां प्रक्रिति रै द्रश्य सूं मेल खाणे आळी है । प्रक्रिति सूं पूरी तरां जुड़ी सीकरी री सुतंत्र, सुरंगी, सादी ग्रर विशाल इमारतां भारत री कला रै सुजीव वैभव विलास री तुलना मैं थोड़ी सुविधावां आळे जीवन नै परायमिकता देवे । पण शाहजांह रै काल मैं मुगल साम्राज्य वैभव री ऊंचाई माथै हो । शासकां ग्रर सामतां मैं बडपण ग्रर दिखावे री होडाहोड बेजा रूप सूं बढ़गी ही । सामंत आपरे जीवतां ही बेहद आलीशान मकबरां बणावण लागग्या हा । कीमती नगां रो परयोग कपड़ा, हथियारां ग्रर सजावट आद मैं ही नही मकबरां री भींतां मैं भी हूण लागग्यो । ताज रे मकबरे अर किले रै महलां मैं कीमती पत्थरां रो खासो इस्तेमाल हूयो है । इसे निरमाण मैं इमारत रै कलात्मक

परमाव री बजाव वैभव रो दम्भ अर म्रानन्द उपमोग री अति रो परतीक है।

आगले दिन २३ तारीख री सुबह सैर सूं ६ कि. मी. दूर जमुना रै किनारे बण्योड़े इतमादुद्दौला रै मकबरे गया। स्टेशन सूं तांगा कर लियो। ग्राधे घण्टे सूं पैला ही म्हे बठै पूगग्या। जमुना रै पूळ रै पार पूरब कानी दो मंजलो भव्य स्मारक दूर सूं ई दीसै। जांहगीर री विख्यात बेगम नूरजहां ग्रापरे पिता गयासुद्दीन बेग री याद मैं ई. १६२२ सूं १६२८ रै बीच इण रो निरमाण करायो। मकबरे री मूल इमारत सूं पैलां दूजी मुगल इमारतां दांई इण मैं भी लाल पत्थर रो विशाल मकराणे रै सोवणे काम म्राळो दरवाजो आवै। इण रै लारे मूल मकबरे मैं इतमादुद्दौला री कबर है। उण रै माथै ही इमारत बणी है। स्मारक मैं लाल पत्थर अर मकराणे रो परयोग हुयो है। ताज महल सूं पैलां मकराणे रो इत्तो इस्तेमाल कोई दूजी इमारत मैं नी हुयो। म्रठै नक्काशी अर पच्चीकारी रो इसो बारीक काम है जकै ने ताज सूं टक्कर लेणे म्राळो कैयो जा सकै। म्रठै री बाळ्यां महराबां ग्रर चारू कुणा मैं ऊपर री मंजिल मैं बणी छतर्‌या नै देखते ही बणै। कलात्मक बेल बूंटा इण री शोभा नै दूणी कर देवे। आगले हिस्से में फंवारा री कतार म्राळो सोवणो बगीचो है। हिन्दू अर ईरानी स्थापत्य रो मेल इण मैं भी साफ देख्यो जा सकै।

१० बज्यां सिकंदरा कानी रवाना हुया। सिकंदरा नगर सूं १० कि. मी. दूर है। म्रठै अकबर री मजार है। पैलां मजार रो दुमंजलो दरवाजो आवै, जिकै रै चारूं कुणां मैं चार खंभा री ऊंची मीनारा है, पछै मूल मकबरो है। इण मकबरे रो निरमाण अकबर सरू करवा दियो हो, पण इणने पूरो अकबर री मौत रै बाद उणरै पुत्र जहांगीर सन् १६१३ ई. मैं १४ लाख रुपिया री लागत सूं करवायो।

भवन लाल पत्थर सूं बण्यो है । ओ अकबर रै मुजीब दृढ़ता अर सादगी रो परतीक लागै । इण भवन रै चारूं मेर तीन मंजली मीनारां है। भवन चार मंजिलो है । नीचे बड़े चबूतरे माथै पैली मंजिल सै सूं चौड़ी है । बाकी तीन्यू मंजिलां तरतर छोटी हूंती जावै । तीन मंजिलां तो लाल पत्थर री कलात्मक रचनांवां है । आखिरी मंजिल मकराणे री बण्योड़ी है । अकबर री कबर पैलड़ी मंजिल रै नीचे जमीन मैं है। पगोथियां उतर'र माय जाणो पड़ै । २ फुट वर्ग गज री मजार संगमरमर सूं बण्योड़ी है । इण शांत एकांत जाग्यां मैं आखे जगत रै महान अर उदार राजावां मैं एक गिणीजण आळो अकबर थिर नींद मैं सूत्यो है ।

सीकरी अर आगरा री सै इमारतां मैं महल, बगीचा, गलियारा सै एक अक्ष मैं पिरोयोड़ा सा लागै । सगळा भवन खुल्ला अर आरपार बरामंदा सूं जुड्या रैवे जकै सूं भारत रै दर्शन रै मुजीब दिक् री अनन्त अखण्डता रो आभास हुवै । सैग भवनां मैं बाग मौजूद हुवै। बागां री सज्जा ईरानी शैली माथै है । इणां मैं बणी मोर्‌यां अर नहरां मैं पाणी सदा बैवतो रैवे । कठैई आवाज करता झरणां रो रूप देखणे मैं आवै, तो कठैई नहरां में ज्योमत री रेखावां सूं मछल्यां री चाल रो भरम देंतो कळ-कळ री धुन सूं कानां मैं आनन्द उपजांतो पाणी बैतो दीसै । स्यात मुगलां नै बांरे पुरखां रै देश री पा'डी, नद्यां अर झरणां री याद इण सूं ताजा हूंती हुवेला । इण भांत सम्पूरण शिल्प विन्यास मैं भारत अर ईरान री मिली जुली संस्क्रिति री स्थाई छाप दीसै । कला रै क्षेत्र रो ओ भाव जदि समाज, धरम अर राजनीति मैं ही घर कर लेवै तो शांति अर सुख री थरपणा रो सुपनो सांचो हू सकै है ।

●

भारत रै धरम अर संक्रिति रो केन्द्र

भारत रै तीरथां मैं काशी रो उत्तो ही आदर जोग स्थान है जत्तो इस्लामी देशां मैं मक्का अर ईसाई देशां मैं जेरूसेलम रो। इण रो प्राचीन नाम वाराणसी है, जको आज बनारस बणग्यो है। इण देश री संक्रिति अर धरम री धुरी बजण आळो ओ ठाम, रोम, ऐथन्स अर बेबीलोनियां सूं भी जूणो है। काशी रै जोड रा जूणा औ बीजा नगर कदेई मिटग्या पण अनेक उतार चढ़ावां नैं झेलतो ओ नगर चार हजार बरसां सूं निरंतर धरम आध्यातम रो संदेश देतो देश-विदेश रा जातरूयां नैं ओजूं भी इकसार आकरसित करतो अर अठै आणै आळां नैं गंगाजी मैं शांति अर सुख रो अनुभव करातो रैवे। लारले बरस ई. १९८९ मैं दिसम्बर माह मैं पुरी सूं आवती बेलां भळै विश्वनाथ री इण रमण थळी नैं देखण रो पावन अवसर मिल्यो। इयां पैलां भी दो बार इण पावन धाम रै दरसनां रो सौभाग किसोर जीवन मैं मिल्यो हो।

बनारस रो स्टेशन सैंर दांई ही बड़ो अर भव्य है। आजादी रै बाद इण री इमारत आधुनिक तर्ज माथै बणयोड़ी अर सुविधावां आळी है। बारै निकळतां ई ऊंचा भवन अर भीड़-भाड़ आळी बड़ै सै'र रो आभास देवै। स्टेशन सूं थोड़ी दूर

मैं ठैर्या । दिनुगे ही पूगग्या हा । तैयार हू'र गंगा सिनान तांई नीकळ्या। नदी घणी दूर नी है । पुराणा बाजार जरुर संकड़ा है । अलबता गदोलिया चौक खुलो अर मुख्य रौनकदार जाग्यां है। मिंदर अर घाटां कानी जावणियां रो तातो सो लाग्यो अठै सूं दीसण लागै । थोड़ी देर में ही दशास्वमेध घाट पूगग्या । गंगा नदी री धार्मिक मानता अर शिव री रमण थळी बजणे रै कारण काशी घणी पवित्र गिणीजै । साधारण मिनखां नै ही नी आ तो साक्षात शिव नै भी मुगती देवण आळी बजै ।

अठै रा पंडां पुराणां री कथा रो उल्लेख करता बतावै कै जद हजारुं बरसां पैलां माहेश्वर इण नै आपरी आवास थळी बणावण लाग्या तो ब्रह्माजी अर शिवजी मैं झगड़ो हुयो । सगळी नद्यां री माता गंगा रै चरणां मैं ब्रह्मा भी अठै बसणो चावता । ब्रह्माजी आपरी सगती अर बडपन दिखाण नै आपरो पांचमो मुंडो धारण कर्यो । शिवजी क्रोध में बीनै काट नाख्यो । पण दोष निवारण आखर काशी मैं सिनान सूं हुयो । इणी वजह काशी नै दोष निवारक का 'अविमुक्तक' कँवे । दूजा तीरथ हिन्दुआ नै खाली मुगती देवै, पण अठै निरवाण मुगती मिलै। करमा रा कस्ट अर जलम मरण रा बन्धन सैं टूट जावै ।

गंगाजी रो प्रवाह यूं तो सै तीरथां माथै आछो लागै, पण काशी मैं गंगा जित्ती मोवणे रूप आळी है, दूजा धामां मैं उत्ती नी है । नगर रै पूरब मैं गंगा वैवे । करीब पांच मील तांई नदी रै सारे-सारे लागातार बस्ती रा ऊंचा सोवणा मिंदर, भवन आद बण्योड़ा है । करीब एक मील मैं आधे चांद दांई घूम'र बौत सोवणो आकार बणावतो गंगा माथै वस्योड़े बनारस मैं भोर रै निकळते सूरज री सोनलिया किरणां रो सो अनूठो अपूरव द्रश्य कोई दूजी थौड़ नी देख्यो जा सकै । दशास्वमेध घाट सूं दूर-दूर तांई रा असी संगम, वरुण संगम, मणिकर्णिका घाट,

हरिश्चन्द्र घाट अर पंचगंगा घाट आद दीसै। सिनान करता, श्लोक बोलता, धूप दीप करता, मिंदरां रा घण्टा बजावतां लोगां सूं सैंसूळै वातावरण मैं धार्मिक भावना री प्रधानता दीसै। सिनान रै उपरांत थोडी ताळ नांव मैं बैठ'र घाटां नै दूर तांई निरखता रैया। देख्यो कै गंगा री धार मोड ले'र अठै उत्तरायण बैवण लागै। आपरे स्रोत कैलाश परबत कानी उन्मुख हुणे सूं काशी री गंगा घणी पवित्र गिणीजै। ठीक ही है, जकी संस्क्रिति आपरे मूल सूं प्रेरणा लेवै बा क्यूं विशेष गुण सम्पन्न नी हुवै।

सेवट आतायो कै मणिकर्णिका घाट महा समसान बजै। अठै रोज औसत पांच सो शव दाग कर'र गंगा मां री गोद मैं उणा रा अस्थ वैवावे। अठै मरणे पर अस्थ प्रवाह नै हिन्दु जाति पुण्य लाभ अर मुग्त लाभ रै कारण आपरे जीवन नै सकारथ समझै। हिन्दुआं रा संस्क्रिति रै मुताबिक दिक् अर काल अनन्त हुवै। देह रो चोळो धारण कर'र आत्मा समय अर खेतर रै बंधन मैं बंधै। मौत जीव नै फेरू बंधन सूं मुगत करै। पंच तत्व भळै आप-आप रै तत्वां मैं जा'र भेळा हू जावै। काशी अर मणिकर्णिका घाट नै तो खास तौर सूं इण भव सागर सूं मुगती रो साधन मानीजै। आखर देवां रा देव माहेश्वर नै मुगती देणे आळो जो ठैरो। हजारूं सालां सूं लाखूं भगत जन अर सरधालु अठै आ'र गंगा सिनान अर स्थाई निवास कर रैणे नै ही ललकता नी रैवे अठै आ'र शरीर रो चोळो छोड़णे नै भी पुन्न रो काम मानै। आज भी सैंकड़ूं लोग इण भावना सूं आखिरी दिनां मैं अठै आ'र रैवण लागै।

काशी मैं मरणो भलै ही मुगती रो आधार मानीजै, पण काशी निजी रूप मैं खूब जीवतो जागतो हुलास बांटतो नगर है। ... मैं हसी खुशी रो भाव और पैरण खावण री आछी चीजां

लगाव सरू सू ही रैयो है। अठै रो शास्त्रीय संगीत, सोने रै काम री बेयकींमती नायाब साड्यां, माढ्या मेवा–मिष्ठान अर बनारसी पान सै कुछ जीवन रै ट्टरस अर हुलास नै दरसावै। फेर भी एक सच्चाई जरुर अठै देखण मैं आवै। राजा अर रंक, विदत अर ठोठ सै भांत रा लोग आखे देश सूं ही नहीं परदेसां सूं भी अठै ढूकै। इग्लैंड, अमरीका अर युरोप रै बीजा देसां रा सैंकडूं हिप्पी लोगां नै कंठी माळा पैर्यां अर रामनामी चादर ओढ्यां शांति री तलास मैं मिंदर–दर–मिंदर अर घाट–दर–घाट घूमता अठै दीसां।

असी घाट मायै भीड़–भाड़ थोड़ी कम ही। महाकवि तुलसीदास अठै बैठ'र रामायण री रचना करी। कैवे कै पुराणे जमाने में गंगाजी री एक शाख असी सूं अठै आ'र मिलती। दूजी साख रो नाम वरुण हो। आं दो धारावां रै बिचाळै बस्यो हूणे सूं ई तीरथ रो नाम वाराणसी पड्यो। असी रो पावन घाट मर शांत वातावरण ना जाणे भक्त तुलसी दांई कित्ता सता अर मनीषियां री साधना थळी रैये हूसी। सदियां तांई बनारस रै गंगा घाटां नै अध्ययन अर ज्ञान प्राप्ति रो पूजा जोग थळ हूणे रो गौरव मिलतो रैयो है। स्यात् इण वजह सूं ही बोधगया मैं ज्ञान पाणे रै उपरांत तथागत भगवान बुद्ध आपरे उपदेशां रो परथम परचार करण खातर इणी ज्ञान भूम रो चुनाव कर्यो। इणी भांत जैनियां रै २३ वां तिरथंकर परसनाथजी री साधणा थळी भी आ ई ही। आधुनिक भारत में ज्ञान विज्ञान री उच्च शिक्षा तांई महामना पं. मदन मोहन मालयजी अठै काशी हिन्दू विश्वविद्यालय जिसे देश रै शीर्ष अध्ययन केन्द्र री थरपणा करी, जको संस्कृत, धरम, दरशन अर विज्ञान री अनेक शाखावां रो आखे संसार मैं स्यात शिक्षण संस्थान बजै।

पुराणां रे धार्मिक अर सतवादी राजा हरिश्चन्द्र रै नाम सूं

जुड्यो घाट भी अठै है। घाट रो थोड़ो अंश तो पक्को है, कांई हिस्सो कच्चो भी है। कच्चे घाट रै कनै लगर नाव'र अनेक छोटी बडी नावा खडी रैवे। अठैई राजा हरिश्चन्द्र नै सत राखण खातर चण्डाल रो करम निभाणो पड्यो हो। कसोटी माथै चढ्यां ही खरेपण री सदा ही परख हुवै। आज ओ घाट शव दाग तांई बरतीजै।

बनारस रै घाटां रा दरसन सोवणै द्रस्यां री मोवणी अनुभूति करावै। गंगा रो लम्बो घुमावदार तट ऊंचा पगोथिया माथै चबूतरा-दर-चबूतरां सूं बण्योडो है। इणां रै लारले सिरे पत्थरां री लूंठी कारीगरी आळी सोवणी इमारतां, भवन, मिंदर अर मेंहल आद बण्योड़ा है। सगळो गंगा तट एक बड़े आधुनिक स्टेडियम दांई लागै। प्राठूं पौर भजन का रामायण पाठ इण घाटां माथै हुंतो रैवे। मिंदरां री ऊंची भगवां अर सफेद धुजावां पून साथै लैरांती अठै री आध्यात्मिक श्रेष्ठता रो संदेश देंती सी लागै। नदी मैं सिनान अर पूजा अर्चना करण आळा देस रै हर खेतर, जात अर धरम रा लोग रंग-बिरंगा गाभा पैर्यां इन्द्रधनुष री सी सोभा दरसाता सा लागै। भारत रै पुराणा रजवाडा मां सूं स्यात् ही कोई हुवै जके अठै आपरा निजी मेंहल, मिंदर आद बनारस रै घाटां सारै नी बणवाया हुवै। इण वास्ते लोक अर परलोक, स्वारथ अर परमारथ दोन्यू बातां रो आणंद लाभ सदा सूं कासी देती आई है।

कोई ३ घण्टा तांई घाटां, मिंदरां, भवनां री निरख परख उपरांत ग्यारेह बज्यां माहेश्वर रै जगत परसिध विश्वनाथ रा दरसन करणने गया। मानता री दीठ सूं कासी विश्वनाथ हिन्दुआं रै सै सूं पूजनीय अर पवित्र मिंदरां मैं एक गिणीजै। मिंदर दशास्वमेघ सूं नैड़ो ही है। घाटा तांई जाणे आळै मुख्य सड़क सूं पतळी सांकड़ी अर मैली गली सूं हूंतां एक पिरोळ मैं पूगां। मांय गलियारे सूं एक

छोटे से मिंदर मैं पूगां। मिंदर मैं शिवलिंग री पूजा हुवै। अठै इण नैं विश्वेसरदेव कैवे। मानता है कै कैलास परबत महादेव री साधना थळी है अर कासी रमण थळी अर 'आणंद कानन'। मिंदर रो आकार अर बणगत साधारण है। पैलां अठै कदैई विशाल मिंदर हूंतो। पण वर्तमान साधारण मिंदर धर्मांध मुगलां रे हमले सूं बचावण खातर सन् १७७६ ई. में इंदौर री राणी अहिल्या बाई रो बण्यवायोड़ो है। पंजाब रे राजा रणजीतसिंह अठै २२ मण सोने रे पतरे सूं समूळे गुम्बद नैं बण्वायो। हिन्दु, सिख समन्वय अर माई चारे रो किसोक लूंठो प्रमाण भी तय है। शिवलिंग चिकणे काळे पत्थर रो है अर जलेरी मकरावण री। आसे-पासे बीजा देवी-देवतावां रा अनेक छोटा मिंदर है, जकां मैं अन्नपूर्णा मिंदर री मूरत भव्य है अर सोने री बण्योड़ी है।

इण मिंदर रे हाते मैं एक ऊंडो कुंओ है, जकै नैं ज्ञान वापी कैवे। कैवे कै औरंगजेब रे हमले सूं मूळ देव मूरत नैं बंचावण नैं इण कुए मैं पधरा दियो हो। आज भी लाखूं सरधालु आस्था कारण इण कूंए रा दरसन कर आपने धन्य समझै। पण आ बात साच लागै कै देवता री असल सगती तो भक्तां री ही सगती है। जद-जद भगतां री सगती कम हुवै देवतावां री खिमता भांगीजती दीसै।

यूं तो बनारस आज भी आच्छी सोवणी अर उद्योगां रै कारण वैभव आळी नगरी है, पण बौद्धां अर पुराणां रे जमाने मैं इण री सम्रिधी आमो छूंती ही। मध्ययुग रे कट्टर मुस्लिम शासकां रै बारबार आक्रमण सूं खंडित आज रो बनारस घणे सूं घणो मराठां रे उत्थान काल सूं जोड्यो जा सकै। बनारस री सै सूं जूणी इमारतां मैं मान मिंदर गिणीजै। अठै जयपुर रे राजा मानसिंह रा बणवायोड़ा मैहल अर वेधशाळ है। आ वेधशाळ भी जयपुर, दिल्ली अर उज्जैन

री बीजी वेधशालावां री ठीक छाया क्रिति है। १७ वीं सदी तांई नक्षत्र विद्या अर खगोल शास्त्र में भारत री खिमता री बुलंदी रो इसारो करती लागै। पण पुराणी कासी नै जाणण रा स्रोत यात्रां रा आलेख, इतिहास रा दस्तावेज अर लोक गीत याद है। केई सद्यां पैलां सूं ज्ञान री भूख मिटावण नै दूर-दूर रै देशां रा यात्री अठै आवता रैया। वां लोगां बनारस रै गौरव रा लूंठा गीत गाया है। ७ वीं सदी में चीनी यात्री हेनसांग अठै पूग्यो। विण बनारस नै घणी आबादी आळो सैर लिख्यो है अर अठै रे लोगां री विद्या में गंभीर रूचि, वां री सभ्यता, भवनां री भव्यता, लोगां री मनमाणसत अर मिनखपणै री सरावणा करी है। अलबरूनी इण धाम री लकड़ी अर नग जड़ी मूरतां री घणी तारीफ करी है। अकबर रै समय अठै रालफफिच आयो उण लिख्यो है कै बनारस जरीदार काम आळै कपड़े री बौत बडी उद्योग नगरी है अर अठै जिसी सुंदर मूरतां और कठेई देखण में नी आवै। बिसप हैबर नाम रै सैलांणी बनारस नै पूरब रै देसां री सै खूब्यां आळी अनूठो इसी नगरी कैयो है, जकै में गाथिक अर यूनानी कला सूं भी बेसी पत्थर री सोवणो तरासगिरी रो काम कर्‌योड़ो है।

दोपारे रै भोजन बाद विसराम कर्‌यो। ४ बज्यां नगर रा बीजा परसिध मिंदरां रे दरसन तांई नीकल्‌यां। चौक सूं तांगो कर'र पैलां दुर्गा मिंदर गया। ओ मिंदर स्टेशन सूं कोई ७ कि. मी. दूर है। ठेठ तांई बस्ती है। मिंदर १८ वीं सदी में नागर शैली में बण्यो घणो सोवणो है। मिंदर रै सारै गंगा बैवे। गंगा माथै लाल पत्थर रा विशाल पक्का घाट दूर तांई बण्योड़ा है। घाटां माथै लम्बो बरामदो है। दुर्गा मिंदर रै नेड़े ही भक्त कवि तुलसी दास निवास' आळी जाग्यां मकराणे रो सोवणो ५ मिंदर आधुनिक शैली में सादो अर अकबक है।

अर माता जानकी री मूरतां साथै तुलसीजी री भव्य मूरती मी है। भीता माथै रामायण री चौपायां अर राम रै जीवन रा मन नै छूवण आळा दरस्यां रा मोवणा चित्राम है। इण रै उपरांत भारतमाता मिंदर नै देखण नै गया। इण मिंदर री आपरी निज री अनुठी शैली है। भारत रै मानचित्र दांई पां'ड, समतळ अर मरुभूमि मुजीब इण रा ठाम भी ऊंचा नीचा है। ओ मिंदर मकराणे सूं बण्यो है अर तीमंजलो है। ख्यात देश भगत बाबू शिवप्रसाद गुप्त इण रो निरमाण करवायो। मिंदर सादो है। कोई तरां री नक्कासी अर खुदाई रो काम कोनी पण मिंदर बौत भव्य अर परभाव पूरण लागै। इण रो बगीचो भी चोखो हरियावळ है। खजूर रे बिरखां री पांत मांड्योडे चित्राम सरीखी अनुभूति देवे। धरम अर आस्था रै कारण तो आं मिंदरा नै देखतां आतमा नै सुख रो अनुभव हुवै ही है, मिंदर शिल्प री दीठ सूं भी आपरी कलात्मकता रै कारण तिरपती अर हुलास मिलै। सरदी रा दिनां मैं ८ बजणे कारण ठंड बढगी ही। पूठा धरमशाल आया।

आगले दिन ६ बज्यां तैयार हूं'र सारनाथ खातर चौक सूं तिपैयो स्कूटर पकड्यो। सारनाथ बनारस सूं ६ किलो मीटर दूर मिरग उद्यान नाम सूं ख्यात ठाम मैं थित है। ओ बौद्ध धरम रो बड़ो तीरथ मानीजै। अठै भगवान बुद्ध रे समय अर बौद्ध धरम री उन्नति रे जमाने मैं केई परसिध मठ अर बिहार हा, जकां रा खण्डर दूर-दूर तांई आजूं भी बिखर्योड़ा मिलै। सातवीं सदी मैं ह्वेनसांग जद अठै आयो कैवे है कै उण बखत अठै पैली बार तथागत आपरे पांच शिस्यां नै जगत रै दुःख अर उणरे निवारण रो संदेश दियो।

बनारस सूं सारनाथ पूगतां ही ईंटां सूं बण्योड़ो एक ऊंचो ढिग्गो सामै दीसे। ढिग्गे माथै एक अष्टभुजी शिखर है, जिण नै चौखंडी कैवे। टीलो उण स्तूप रो अवशेष है, जठै तथागत नै पाच

सिस्य मिल्या हा। पुरातत्व रा पंडित ईनै गुप्तकाल मैं बण्योडो मानै। पण ऊपर रो अष्ट मुजी सिखर ई. १५८८ मैं आपरे पिता री याद मैं बादशाह अकबर रो बणवायोड़ो है।

कोई आधे मील उतराद मैं मिरग उद्यान रै पूरब आळै कुणे मैं धामेख रो परसिध स्तूप है। धामेख धरम मुख रो बिगड्योडो रूप है। स्तूप खाडी-भांगी दसा मैं है पण फेर भी इण रो ऊंचाई १४३ फुट है। निचले पासे बड़ा-बड़ा पत्थर लाग्या है। ऊपर पत्थर अर ईटां री चिणाई है। बिचले हिस्से मैं आठ गोखा है, जका रै आळा मैं पैलां मूरतां हुया करती। इणां रै नीचे सोवणी खुदाई रे काम री पत्थर री साकल दांई पट्टी री चारूं मेर जड़ाई है। पट्टी माथै भांत-भांत रा पुसप उकेर्योडा है। औ स्तूप आज सूं डेढ़ हजार बरस पैलां असोक रो बणायोडो बतावे। शास्त्रीय कला रे इण अनूठे नमूने तांई जनरल कंकिघम लिखे कै ताजमहल रै उपरांत इण स्तूप नै भारत री स्थापत्य कला रो सै सूं आक्रषक रूप कैयो जा सकै। भगवान बुद्ध रै धरम चक्र परवरतन री सूचना सागै औ स्तूप सदेसो देतो लागै कै जीवन ने भोगां अर शरीर रे कष्टां री अति सूं बचा'र मध्यम मारग नै अपणाणो ही श्रेष्ट जीवन शैली है।

धामेख स्तूप रै सामै महाबोधी सोसाइटी द्वारा बणवायोडो पराचीन शैली रो 'मूलगंध कुटी' नाम रो बिहार है। जापान री सरकार री सहायता सूं १६३६ में इण बुद्ध मिंदर रो निरमाण हुयो। बुद्ध रा सिस्य जठै रैवता उणा ने गंधकुटी कैणो बाजब ही है। मिंदर रा पगोथिया चढ'र सभा मण्डप मैं पुगां। इण मैं एक संकड़ो गली दांई जाग्यां मैं एक जाग्यां बौत बड़ो घण्टो लटकायोडो है। सामै मोटे बांस रो एक डण्डो टेर्योडो है। डण्डे ने जोर सूं धक्को देणे पर घण्टे सूं धाड-धाड री गम्भीर धुन बाजे। बिहार रो भवन घणो भव्य लागै। बनावट

अर स्थापत्य जूणो हूणे पर भी इमारत आधुनिक लागै। इण रो गच मकराणे रो है। मिंदर रे मांयली भीत माथै तथागत रै जीवन रा असाधारण सोवणा चित्राम है। ख्यात जापानी चित्रकार कोसोतो नोसू आनै मांड्या हा। कातिक पून्यो नै बिहार री बरसगांठ बौत धूमधाम सूं मनै। इण मौके आखे जगत रा बौध संत अर दूजा सरधालु अठै पुगै। समारोह में भगवान रे अस्थि कळश रो जलूस निकाळै। बोधि बिरख रो एक पौधो भी लंका सूं सन् १९३६ में ला'र अठै रोपोड़ो है। बिहार में अनूठी शांति अर पवित्रता रो आभास मिलै।

मिरग उद्यान में चारूं मेर पुराणे स्तूपां अर बिहारां रा खण्डर बिखर्‌योड़ा है। भांगी-टूटी मूरतां दूर-दूर तांई मिलै। भारत रै दूजा परसिध मिंदरां अर धामिक ठामां दांई सारनाथ रै वैभव नै लूटण अर मूरतां नै खण्डित करण खातर अणेक बार इण माथै बिदेसी आक्रमणकार्‌यां रा हमला हुया। पैला हूणां अर बाद में मुहम्मद गोरी अर मुहम्मद गजनवी अठै आक्रमण कर्‌या। बार-बार रे हमलां अर सरधालु भगतां रै बार-बार पूठे निरमाण रै कारण अठै बिहार, मठ, स्मारक आद अनेक बार बणता अर मिटता रैया। बौध धरम रो परभाव कम हूणे रे उपरांत आं रे रख रखाव कानी ध्यान भी कमती हुग्यो। की सैंकडूं बरसां रे लम्बे समय रे कारण भी आं में धीमे-धीमे छीजत अर जीरणता आंती गई। भारत री आजादी बाद अबै पुरातत्व विभाग आं री देख रेख अर सभाळ सावळ करै है।

इण उद्यान रै चौभीतें में ई पुरातत्व विभाग रो देखण अर सरावण जोग छोटो पण बेसकीमती जूणो जिसां अर इतिहास री महत्व री चीजां रो चोखा संग्रालय है। इण में सारनाथ रै प्राचीन खण्डरां सूं मिली मूरतां, खम्भा, मोहरां, शिलालेख, बरतन-भांडा आद रो संग्रह है। अठै मेल्योड़ी घणखरी सामग्री बौध धरम सूं सरमंध राखै।

मैं जिसा तीसरी सदी ई० पू० सैं लेकर बारवीं सदी रैं विचाळै री है। देख'र इण बात रो हरख हुवै कै जद संसार रा घणासीक देस असभ्य अर आदम दसा में रैंवतां, भारत सभ्यता अर संक्रिति रैं ऊंचे शिखरां बिरजतो हो। अठै मानखे री थिर सांती अर सुख री खोज हुवण लागगी ही। अशोक जिसा सम्राट युद्धां ने अरथहीन मान'र युद्ध घोष री जाग्यां धम्म घोष री धुजा फैराण नैं तत्पर हुग्या हा। आज भी संसार रे केई कूणे मैं हरमेश चालण आळी लड़ायां नैं देख'र सारनाथ अर इण रैं संदेश री उपयोगिता घणी बढ़ती लागै।

सारनाथ रैं इण संग्रालय मैं अशोक रे एक खम्मे रैं ऊरले सिरे माथै बणी सिंघ री अति कलापूरण मूरती अठै राख्योड़ी है, जकी भारत री राज मुद्रा माथै अंकित है। मूरती री कारीगरी नैं देखतां पलकां नी झपकै। मूरती रे शीश भाग माथै तीन सिंघ है। शीश रे दूजे भाग मैं हाथी, बळध अर घोड़ा खुद्योड़ा है। बारीक खुदाई, अनुपात अर सादगी री दीठ सूं अै मूरतां संसार भर मैं परसिध है। अशोक रो औ खम्भो सांती अर सद्भाव रो प्रतीक मानीजै। संग्रालय री दूजी अनूठी चीज सातवीं सदी मैं बण्योडो केई बड़े दरवाजे रैं ऊपरलो भारी पटाव है, जकै में भगवान बुद्ध रैं पूरबळै जलमां री जातक कथावां उकेरोड़ी है। कथा अर शिल्प दोन्यू निजर सूं आ घणी सोवणी है। पाली भाषा मैं खोद्योड़े एक लेख मैं बुद्ध रैं परथम उपदेश रा अंश है। खासी बड़ी संख्या मैं हरोज जिज्ञासू सैलाणी अर धारमिक जातरी आंने निरख'र आपने धन भाग समझै।

बोधि सत्व री अनेक मूरत्यां अठै रे खंडरा सूं लाधी है। कुषाण राजा कनिस्क रे अभिसेक रे तीसरे बरस भिक्सू नाल रैं धरयोड़ी जकी मूरत्यां मिली है, बांमै घणो तेज अर समरथ दीसै। बाद रैं गुप्तकाल री मूरत्यां मैं देवलोक री सी सोवणी आभा रो

झलको दीसैं। अठै मेल्योड़ी बलुए पत्थर सूं बणी भगवान बुद्ध री धरम चक्कर परबरतन री मुद्रा री मूरती भारत री भास्कर शिल्पकला रो श्रेष्ठ नमूनो मानीजै। बुद्ध रे अलावा बौध धरम री महायान शाखा रैं बीजा देवतावा री मूरतां भी आकरषक, मोवणी अर अनमोल है। कासी री जातरा सारनाथ बिना अधूरी है। अनेक धरमां री जलम भूम भारत री समन्वय आळी मुली-जुली संक्रिति रो साकार रूप है बनारस अर सारनाथ। हिन्दू अर बौध धरम रैं हजारां बरसां रे भाईचारे अर सह जीवन माथैं भारत रे लोगां रो माथो गरब सूं ऊंचो हू जावैं। जूणी संक्रिति री इण लूंठी विरासत माथैं कोड करता पाछा बनारस आया।

दोपहर बाद बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय नैं देखण नैं गया। भारत रैं महान सपूत देश भगत महामना पं. मदनोहन मालवीजी रैं अथक प्रयासू सूं इण री थरपणा हुई ही। इण कारण 'विश्वविद्यालय रे परमुख दरवाजे सामे 'ऊंचे चबूतरे' माथैं मालवीजी री आदम कद प्रतिमा बणायोड़ी है। विश्वविद्यालय रो दरवाजो भी खासो ऊंचो अर कलात्मक है। गेट मैं तीन दरवाजा है, बिचलो खासो ऊंचो है, आसे पासे आळा नीचा अर की छोटा है। विश्वविद्यालय दो हजार एकड़ रैं विशाल खेतर में फैल्योडो है। चारूं मेर रो घेर १० मील सूं भी ऊपर होसी। कैवे के एशिया मैं सैं सूं बड़ो आवासीय विश्वविद्यालय बनारस रो ई है। इण मैं दस हजार सूं बेसी संख्या रे छात्रां खातर केई विशाल छात्रावास है। यूं तो विश्वविद्यालय रा सैमूळा भवन ऊंचा, कलापूरण अर आकरषक है, पण गायकवाड़ पुस्तकालय, संस्क्रित महाविद्यालय अर युनिवर्सिटी अस्पताळ री इमारतां घणी सोवणी है।

विश्वविद्यालय रे मांय खासो बड़ो बाजार भी है। खाणे-पीणे अर रोज रे उपयोग मैं आणे आळी सैं जिंसा अठै मिल जावैं। इण

दूर-दूर तांई जावै। बनारस रो ओ बीत बड़ो उद्योग है। हजारां कारीगरां नै इण काम सूं रोजी मिलै। केई सदियां सूं पारम्परिक रूप मैं अठै निरंतर पनपतो रैणे कारण इण उद्योग सूं बनारस नै घणो मान अर सम्रिधी मिली है। लौकिक अर अलौकिक दोनूं दीठ सूं समस्त भारत रे धरम-संक्रिति रे इण लूंठे केन्द्र बनारस नै कोई जातरी कदेई भुला नी सकै।

●

जगन्नाथजी रो श्रीक्षेत्र

देस रै पूरब में समुदंर रै सारै बंगाल री खाड़ी मैं मानीता पावन धामां मैं गिणीजण आळो जगन्नाथ पुरी भारत रो एक प्रमुख तीरथ है। इण रो दूजो नाम श्रीक्षेत्र भी है। आदि शंकराचार्य देस मैं धरम री एकता ताई चारूं दिसावां मैं बदरीनाथ, रामनाथ (रामेसरजी) द्वारकानाथ अर जगन्नाथ, इण चार धामां री थरपणा कीनी। धरम री दीठ सूं इण सैंग रो निज मैं आप आप रो घणो महत्व है। जगन्नाथ धाम रै उतराद पूजा जोग गंगा, दखण में पावन गोदावरी, पछम मैं परबत माला अर पूरब मैं समुंदर इण री पूजा वंदना मैं सेवक दांई हाथ बांध्यां खड़ा लागै। मिंदर वास्तुकला री बेजोड़ सुंदरता, रथ जातरा जिसा सांस्क्रतिक परब, नंदनकानन जिसा थारण, अनेक झीलां, झरणां, नारेळ रा ऊंचां बिरख, इतिहास रै पराचीन गौरव अर विज्ञान री आधुनिक प्रगति रै कारण ओ उत्कल क्षेत्र सदा री भांत आज भी राष्ट्र मैं ऊंचे ठाम अर सम्मान रो अधिकारी है। प्राचीन काल में कलिंग रे नाम सूं रणवीरां री भूम बजण आळो ओ क्षेत्र आज आखे जगत मैं सै सूं बड़ा बांधां मैं एक गिणीजण आळै हीराकुद बांध अर बौत विशाल गिणीजण आळै राउरकेला जिसा कारखाना रै सारै क्रिसी अर [illegible] रै औद्योगिक क्षेत्र मैं

नूवां कीरतीमान री थरपणा करतो देश में आपरो विशेष स्थान बणा लियो है।

इण समरण जोग थळ रै दर्शनां रो मन मैं घणी उमाव हो। लारले बरस दिसम्बर १९८९ में ओ आछो मोको भी मावै मिलग्यो। ३० नवम्बर ने कलकत्ते में एक बालगोठिये साथी रै बड़े लडके रै ब्यांव मैं सामल हूंणे री मुनहार नैं टाळणो कीं सम्भव हो? निरमल प्रेम मैं कित्तो आक्रपण हुवै, कोई मुगत भोगी ही जाण सकै। पण घर सूं टुर्या पैला ही मित्र नैं घणो आगूंच लिख दियो हो कै पाछे धिरतां जगनाथ जी रा दरसन लाभ भी करणा है। ईं तांई समय रैता कलकत्ता सूं पुरी अर पुरी सूं पाछो दिल्ली रो रेल आरक्षण करवा मैं तैयार राखै। बड़ी चौकसी सूं ख्याल राख'र बैं आ भोळावण निभाई। हफ्ते भर कलकत्तै रुक'र ५ दिसम्बर नैं रात १० बज्या री गाडी सूं पुरी खातर रवाना हुया। भोर मैं ७ बज्यां पुरी रै मुकाम पूगग्या।

कलकत्ते रे प्रवास री सदा भाछी-बुरी मिलीजूली प्रतिक्रिया मन मैं हुवे। आबादी घणी संख्या मैं हूणे कारण कलकत्तो 'कीडी नगरो' तो पैलां भी हो पण अबै एके कानी मैट्रो रेल री जाग्यां-जाग्यां खुदाई रै कारण अर दूसरे पासे आजादी रै बाद व्यवस्था खिमता री कमी भर सरकारी कामगरां री कामचोरी अर काहिली रै कारण भो महानगर गंदगी अर घूड़-घूएं रो अंबार बण'र रैयग्यो है। सित्तर रै दशक तांई जिको सड़कां रो पाणी रै टैंकरां सूं रोज धुलाई हूंती बठै भाज रोज झाड़ू-बुहारी भी नी लागै। कलकत्तो पूरबी भारत रो बारणो गिणीजै। भारत रे परमुख बंदरगाहां मैं इण रो नाम है। उद्योग भर व्यापार रो तो भो सैं सूं बड़ो केन्द्र है। पण जद सूं चीन सूं भारत रा सम्बन्ध बिगड्या है इण बंदरगाह नैं भी थोड़ो धक्को

लागयो है। फेर भी व्यवसाय, कला अर संस्क्रिति रो महत्व पूरण सगम ओ आज भी है। नाट्य अर संगीत रै क्षेत्र मैं इण रो आज भी अग्रणी स्थान अवश्य है। साहित्य री भी कोई विधा इसी नो है जकै मैं रचनात्मक लेखन नो हुवै। समस्यावां अर अभावां रै बावजूद कलकत्ते रो देस मैं उल्लेख जोग स्थान निरंतर बण्योड़ो है।

पुरी रै स्टेशन माथै पूगतां ही पंडा जातरयां रै आडा झूम जावै। आपरे जजमान सूं ही आं री आजीविका अर बिरत चालै। पं० शिवानंद उपाध्याय नाम रै पंडे सागै रिक्से मैं बैठ'र म्हे स्टेशन सूं कोई २ कि. मी. दूर जगन्नाथ मिंदर रै सामै बागडिया धरमशाळ पूग्या। आ दुमजली धरमशाळा खासी बड़ी अर साफ सफाई आळी है। मारवाड़्यां री ही बणायोड़ी है। कमरे रो किरायो भी ५ रुपया रोज मात्र है। कनै ही कोठारी धरमशाळा है। सामै मिंदर री दिशा मैं दूध वाला री धरमशाळा अर गोयनका, धनजी आद केई दूजी धरमशाळावां है। हरोज हजारूं जातरी अठै देस रे कुणे-कुणे सूं आवै। इण कारण होटल, गेस्ट हाऊस, मोटल आद भी अठै घणाई है। अंग्रेजी ढर्रे रा ५ सितार होटलां सूं ले'र देसी सामुहिक निवास तक सब री हैसीयत मुताबिक ठैरण री व्यवस्था ढूक जावै। धरमशाळ मैं ही सिनान आदि कर, बारै मिंदर दरसन तांई निकळ्या। उपाध्यायजी साथै हा। वै सारली दूकानां सूं पूजा री सामग्री पुष्प, धूप, दीप, परसाद आद खरीदायो। मिंदर नेडे सड़क रै दोन्यू पासे रामनामी दुपट्टा, गमछा, कंठी माळ, चंदन, कूंकूं, खील, मखाणा, नारेळ आद मिलै। बिंदी चोटी, शृंगार री जिसा, पुसप अर माळावां री बिसाता भी सड़क माथै बिछी रैवे। धरमशाळ सूं १०० गज दूर सामै जगन्नाथजी रो विख्यात मिंदर है।

मिंदर चार अंशा मैं बण्योड़ो है। आं रा नाम है–विमान,

जगमोहन, नाट्य मिंदर अर भोग मंडप है। भारत रा मिंदर शिल्प रा प्राय: तीन प्रकार है–नागर, द्रविड़ अर वेसर। पण उड़ीसा री मिंदर कला इणा सब सूं जुदा अर अनूठी कलिंग शिल्प बजै। उत्कल रा मिंदर गोळाकार है। हरेक मिंदर रै ऊपर कळश हुवै अर चारूं मेर देवतावा री मूरता मडी हुवै। हरेक द्वार, दिसा अर कुणे माथै रक्षक रै रूप में देवता री थापना करी जावै। लता, मंडप, तोरण, शंख, चक्र, पदम आद शुभ परतीक अर न्रत्य, वादन, लेखन, भजन, कीरतन आद सात्विक भावां रै अलावा शिकार, मैथुन अर विलास री मूरतां भी कोर्‌योड़ी हुवै। लौकिकता अर अलौकिकाता दोना रो मूरत रूप अठै मिलै। पण संसारिकता सूं मुगत हू'र ही ईष्ट रै धाम तक पूग्यो जा सकै, ओ भाव ही परसुख दीसै।

जगन्नाथजी रो मिंदर सड़क सूं ले'र शिखर तांई २१४ फुट ऊंचो है। मिंदर रै चारूं मेर पत्थर रो बडो चौभींतो है, जिण री लम्बाई ६६५ फुट अर चौड़ाई ६४० फुट है। पूरब दिशा में मिंदर रो मुख्य द्वार है। दोनूं कानी सिंघा री मूरतां बणी है। इण कारण ई ई नै सिंघ द्वार भी भी कैवे है। इण रै ठीक सामै ४० फुट ऊंचो एक काळै पत्थर सूं बण्यो गरुड़ खम्भो है। गरुड़ रै माथै सूरज भगवान रै सारथी वरुण री मूरत है। मिंदर में जगन्नाथ, बलभद्र अर सुभद्रा री प्रतिमावा है। सह देवतावां रै रूप में वामन, वराह, नरसिंघ अर विष्णु भी विराजै। भोग मंडप में क्रिसनजी री बाल लीलावां री मूरतां खोद्योड़ी है। मिंदर रै मांय पच्छम दिसा में रतन वेदी रै ऊपर सुदरसन चक्कर बण्यो है। भगतां री खासी तगड़ी भीड़ हरमेश अठै रैवे। अगर चदन री सुवास सूं महकते अर जगन्नाथ भगवान रै जैकारे सूं गूंजते वातावरण में आत्मा नै आनन्द रो अनुभव हुवै। दूजे धामां तांई पण्डा तुलसी का दूजे पुसपां री माळा पैरा'र पइसा चमूलने री लोंठाई अठै भी करै। बंगाल अर उत्कल रै जातर्‌यां रै

अलावा राजस्थान, बिहार अर उत्तर प्रदेश रा जातरी अठै बेसी मातरा में दीसैं। दूजा प्रातां अर विदेशां सूं भी लोग अठै खासी संख्या में आवैं। जगन्नाथ मिंदर रो निरमाण अर ध्वंश केई लार हुयो। पैलम पैल राजा विश्वावस्तु ईनैं बणवायो बाद में ई. ११९२ में चोडगंगदेव, फेर ययाति केसरी, भळै ११९८ में अनंग भीमदेव इण रो पूठो निरमाण करायो।

उपाध्यायजी आ बात भी बताई कै हर बारह साल बाद जगन्नाथजी रो 'नव कलेवर' उछब मनाईजै। काठ री नुंई मूरत्यां जंगल री पवित्र काठ महदासू सूं बणाइजै अर जूणी मूरत री अंतेष्ठी कर देवैं। आ विलक्षण परम्परा श्री जगन्नाथ मिंदर रै अलावा स्यात ही कठैई देखण में आवैं।

जगन्नाथ मिंदर रै सामैं बड़ो चौक है। चौक सूं उत्तर दिसा में सीधी चौड़ी सड़क श्री गुंडिचा मिंदर तांई जावैं। अषाढ़ सुदी दूज नैं अठै भगवान जगन्नाथजी री रथ जातरां रो उछब मनाइजे। जगन्नाथजी, बलभद्रजी अर सुभद्रा जी तीन्यू न्यारा-न्यारां रथा माथैं बिराजै। आखे देस सूं आयोड़ा भगत गण रथा नैं खींच'र गुडिचा मिंदर तांई ले जावैं। इण सेवा ने घणे पुन्न रो काम मानीजै। भारी हूणे कारण जे रथ मिनखां सूं नी टुरैं तो हाथी इणा नैं खींचैं। इण परब माथैं लाखूं सरधालु पुरी में भेळा हुवैं। मानता आ है कै जगन्नाथजी रा दरसन सूं मनुष्य बारम्बार रे जीवन मरण सूं मुगत हू जावैं। इण अवसर माथैं जगन्नाथ मिंदर में भोग रो महा परसाद ५६ मिठाया सूं बणैं। हजारां लोग सावळ धाप सकै इती व्यवस्था हुवैं। रथ जातरा रैं बखत घण्टा भेरी, तुरही, शंख आद बाजैं। भजन, कीरतन अर निरत्य सूं सड़क कांपण लागैं। एकादशी तांई तीन्यू देव विग्रह गुंडिचा मिंदर में विराजै अर सेवा पावैं। एकादशी नैं तीनू रथ पूठा जगन्नाथ मिं

मैं बाहुडै । मजे री बात है के इण वापसी नैं उडिया भाषा मैं भी 'बाहुडे' जातरा ही कैवे । संस्कृत रै 'बहुरि' शब्द सूं उत्पत्ति रै कारण आ समानता है । रथ आए साल नूवी काठ सूं बणै । केई महिनां पैलां सूं ही रचना रो काम सरू हू जावै । सैंकडूं कारीगरां नै पुन्न रै सागै रोजी भी नसीब हुवै ।

म्हे लोग भी पैदल ही गुंडिचा मिंदर रे दरसन खातर पूग्या । मिंदर रो हातो खासो बड़ो है । रथ मांय आवण तांई धोरी मोड़े री पिरोळ खासी ऊंची है । मांय एक बड़ो हाल है । इण री पिरोळ भी ऊंची है । हाल रै पछमी भाग मैं ऊंची चौकी है, जकै माथै जगन्नाथजी बलभद्रजी, सुमद्राजी री मूरतां बिराजै । मुख मिंदर सूं चिपता ही और केई छोटा बड़ा मिंदर आयताकार घेरे मैं बण्योड़ा है । अै सब मिंदर *ओडिसी शिल्प मैं बण्योडा है । आंती बेर सोनार गोरांग मिंदर अर* लोक कथा मिंदर भी देख्या । शकर मठ भी शांत, एकांत अर हरियावळ रै कारण आनन्द दायक लाग्यो । अठै साधु सन्यासियां रै रैवण खातर आसराम अर साधना खातर शिवालय है । शिव मिंदर रै बारै बडो प्रांगण है जकै मैं भजन कीरतन हूंता रैवे ।

तीजे पौर समुन्दर सिनान दरसन तांई निकळ्या । मिंदर चौक सूं ओटो रिक्शा कर्‌यो । मिंदर रै आगै कर सड़क दखिण मैं बाजार मांय हूती नीसरे । अठै खाणे पीणे री दूकानां अर चाय मिठाई रा होटल अर ढाबा बेसी है । दूजी जिंसा री दूकानां भी है । कोई ३–४ कि. मी. माथै पूरब कानी सड़क मुड़ै । मोड़ सूं ही समुंदर दीसण लागै अर गरजणे री आवाज सुणीजै । जठै तांई निजर जावै पाणी ही पाणी दीसै । सूरज रो किरणां सूं समुन्दर री ऊंची नीची लहरां मैं सोनलिया आभा री झिळमिळाट छिटकती रैवे । पूरब सूं पछम मैं मीलां दूर तक पसर्‌योड़ो सोधो समुन्दर तट इयां लागै जाणै कोई

साप जोख'र सीधी लीक मांड राखी हुवै। समुन्दर मैं लहरां ऊंची हवोळा खाती रैवे। सैकड़ूं लोग समुन्दर मैं सिनान करता अर लहरां री क्रिडा रो आनन्द लेतो रैवे। म्हे भी न्हाणे, बदळणे रा वस्त्र सागै लाया हा। जद पाणी रो हिलोरो बेग सूं नैड़े आवै तद लोग पूठा पगां दौड़'र लारै आ जावै। पण पगां सूं टकराते पाणी री उछाळ सूं सारो शरीर छांटा सूं भीग जावै। पाछो जातो पानी पगां नीचली रेत नै आपरै सागै खिसकातो जद ले जावै तो मूंडे सूं आपे किळकार्‍यां निसरै अर बड़ा बूढ़ा, लोग-लुगायां सै टाबरां दांई जल क्रिड़ा रै आनन्द सूं विभोर हू जावै। दिसम्बर रो महिनो हूणे उपरांत भी न तो अठै ठंड हुवै न सिनान करतां सरदी लागै। राजस्थान रै अगस्त सितम्बर महिना जिसो तापमान अनुभव हुवै। समुन्दर बीच कठैई कठैई पाल आळी छोटी नावां पंख फैलायां सारसां सरीखी सोवणी लागै। डेढ दो घण्टा तांई सिनान रो आनन्द लियो। एक तरह सूं ताजगी रो अहसास हुयो। गाभा पैर्‍या ही हा। समुन्दर माथै ही चाय बेचण आळो पूगग्यो। एक टीन रै बड़े टुकड़े री ओट मैं तेज हवा सूं स्टोव नै बचांवतो बो बठै ही चाय बणावे हो। कप दीठ २ रुपयां लेणे उपरांत भी बींरी केतली मिटा मैं ही खाली हू जाती। बो भळै इण क्रिया मैं लग जांतो। मेहनती आदमी खोड़ मैं भी कमा खावै इण रो जीतो जागतो उदाहृण अठै देख्यो।

समुन्दर री चौपाटी माथै सड़क रै सारै संख, सीपी, मिणिया अर समुन्दरी गड्डा सूं बणी माळावां, मूरत्यां अर सजावट री जिन्सा मिलै। चूड़्या, हार, मंगलसूत्र, रोली, कुंकु, देवी-देवतावां री तसवीरा आद भी बिकै। बीस्यूं लोग रेत मायं ई फड़ लगावै। खरीदारां मैं घणकरी महिलावां अर टाबर ही हुवै। लारै सड़क माथै चाट पकोड़ी, चाय, काफी अर आइसक्रीम आद रा गाड़ा भी खड़्यां रैवे। इणां मायं भी खासी भीड़ रैवे। सगळै दिन मेळो सो मण्ड्यो

रैवे। अठै ऊगते सूरज अर ढ़ळते सूरज रो द्रश्य मोवणो लागै। सूरज री लाल किरणां सूं रंग्यो रातो आभो समुंदर री लैरां माथै सोनलिया रंग सूं घणो सुरंगो दीसै। ज्वार भाटे रै उतार चढ़ाव सागै झिलमिल करतो निजारों इत्तो आकर्षक हुवै कै लगातार देखतां रैणे पर भी आंख्या नैं धाप नी आवै।

आगले दिन भोर मैं ७ बज्यां टूरिष्ट बस सूं कोणार्क अर भुवनेश्वर रा परसिध मिंदर अर दूजा ठाम देखण तांई रवाना हुआ। इण बस में सीटां रो आरक्षण पैलां करवाणो पड़ै। डीलक्स बस मैं ४० रुपया सवारी किरायो है। सीटां आरामदायक है। सागै गाइड़ भी चाले। गाइड़ देखण जोग ठामां रो इतिहास, सांस्क्रतिक महत्व अर कलाकारी रे सम्बन्ध मैं हिन्दी मैं चरचा करतो रैवै। कोणार्क पुरी सूं ३२ कि. मी दूर है। समूळो मारग हर्‌यो भर्‌यो है। सूर्य मिंदर सूं कोई ३ कि. मी. दूरी माथै एक सोवणो समुन्द्र तट है। अठै गाड़ी पंद्रह मिनट रुकै। जातरी रेतळे किनारे सूं समुंदर रा आकर्षक दश्य देखे। चाय पाणी रा होटल भी अठै है। डाभ (कच्चा नारेळ) अठै रुपिये रुपये मैं मिलै। डाम रो पाणी मीठो अर ताजगी देणे आळो हुवै। थोड़ी देर मैं ही कोणार्क पूगग्या। इण रै अवलोकन तांई १ घण्टे रो समय दियो जावै। अठै मोटर आळो गाइड नी आ सकै। दूजा लाइसेंस शुदा गाइड़ करणा पड़ै। १५ रुपियां मैं एक गइड़ सागै लियो। पण अनुभव कर्‌यो कै गाइड बड़े विस्तार सूं मिंदर सम्बन्धी जित्ती बातां री जाणकारी देवे बा बड़ी उपयोगी अर ज्ञानवर्धक हुवै।

कोणार्क रो सूर्य मिंदर बारीक कारीगरी, सुंदर कल्पना अर मिनख जमारे री भांत-भांत री भाव दशावां रै चित्राम रै कारण 'पत्थरां मैं कविता' रै नाम सूं आखै संसार मैं परसिध है। इण मिंदर री भीतां माथै देवी-देवतावां, अपसरावां, पशु-पक्षियां, अर बेल-बूंटां

री लूंठी पच्चीकारी रो इसो कलापूरण काम है के मिंदर नै उडिया स्थापत्य रो अनूठो दस्तावेज कैयो जा सकै। ओ भारत अर विदेशी सैलाण्यां रे आकरषक रो प्रमुख केन्द्र है।

पैलां मूल मिंदर ऊंचे परकोटे सूं घिर्‌योड़ो हो। इण मैं तीन ही प्रवेश द्वार हा। घोरी मोडो पूरब दिशां में हो, जकै रै सामोसाम दूर समुंदर मैं सूरज उगतो सो लागतो। मिंदर रो सामलो भाग न्रत्य मिंदर नाम सूं जाणिजतो, बिच मैं जगमोहन मिंदर है जकै ने अराघना मिंदर भी कैवे। लारलो हिस्सो गरभ ग्रह बजे। जगमोहन मिंदर तो ओजूं भी ठीक स्थिति मैं है, पण न्रत्य मिंदर अर गरभघर समय रे आघात सूं जीरण हुग्या है।

मैंमूळो मिंदर सूरज रै रथ री कल्पना रो साकार रूप है; जिणनै सात घोडा खीचता सा लागै। इण रथ रा चौबीस पहिया घणी बारीक तरासगिरी रा सोवणा नमूना है। अै बारै महिना अर चौबीस पखवाड़ां रो संकेत करै। इण रै पहिया मैं आठ–आठ आरा कं तीलयां है, जकी आठ–आठ पौरां ने दरसावै। इण चक्कां री गोळाई २.९४ मीटर (९ फुट आठ इंच) है। सूरज री किरणां रथ रै आरां माथै पडे। उण री छाया सूं आज भी मिन्टा, सैकिडां तांई ठीक समय बतायो जा सकै। गाइड़ इण नै पढ़णे री विघी भी समझाई।

न्रत्य मडप मैं अनेक कलापूरण मूरत्यां है। इण रै चारूं मेर ऊपर जाणे रा पगोथिया है। पूरब पासै रै पगोथिगां रै दोनू कानी गजशार्दुलां री विशाल मूरत्यां है। जका देखण में ताकतवर अर डरावणा लागै। कोणार्क मिंदर मैं युद्ध रै बलशाली घोड़े री बौत चोखी मूरती है। इण मैं चालक घोड़े रै साथै खड्यो है। जोरावर घोड़े रो जीवणो पग ऊंचायोड़ो है। माथो झुक्यो है, लारला पग तण्यां है।

घोडो दुरण तांई जोर करतो सो लागे। पत्थर में घोड़े ने साकार रूप ही नी मिल्यो है इण री कलाकरी देख'र वास्तु विद्वान हावेल खबसूरती में इण घोड़े ने वेनिस रै महान कलाकार वेरएकिन्यश्रो रै बणायोड़े जगत परसिध घोड़े री टक्कर री सोवणी मूरत बताई है।

कोणार्क री नारी मूरतां भी घणी कलात्मक है। प्रेम सम्बन्धी हाव भाव, सिणगार री चेष्टावां, नख सिख री मोवणे अनुपात में चित्राम, सै कुछ अचरज सागै आनन्द देणे आळो है। उल्लेख री बात आ है कै समाज रै रीति रिवाजां नै भी बारीकी सूं आंकीज्यो है। गाडी खीचता बळध, रोटी पकावती ओरतां, रस्साकसी, लडाई सूं बाहुड़ता रणवंका, पाग बांधता मिनख तो है ही कान, नाक, कमर रा गैणा, पिलंग, पाटो, कुरस्यां, पालक्यां, ढोल, पखावज, घण्टा, वीणा आद वाद्य तीर--कमान, तलवार, छुरा, बरछा, गदा आद हथियारां जिसी सैंकडूं चीजां नै दरसायो है। कला री इसी ऊंचाई रै कारण ही उडीसा रो 'उत्कल' नाम सार्थक जाणीजै।

'आइने अकबरी' रै मुजीब इण मिंदर ने ९ वीं सदी मैं केसरी वंश रै केई राजा बणवायो। बाद मैं गंगवंशीय राजा नरेशसिंह देव आज रै रूप मैं इण रो निरमाण करवायो। कैवे कै १२ हजार कुशल कारीगरां १२ साल री कठिन मेहनत रै बाद इण भव्य मिंदर नै बणायो। कोणार्क रै अवशेषां मैं दुर्गा, जगन्नाथ, बलभद्र, सुभद्रा अर नवग्रह री मूरत्यां मिली है। इणां सूं पतो लागै कै मिंदर रै निरमाण रे वखत शैव, साकत अर वैष्णवां मैं आपस मैं विरोध नी हो अर एक मिंदर मैं ही सैंग सम्प्रदायां रा देवी–देवता थोकीजता।

कोणार्क सूं भुवनेश्वर ३५ कि मी. दूर है। कोई पूण घण्टे मैं बठै पूगग्या। अठै सूं पैलां खण्डगिरी उदयगिरी री जुणी गुफावां देखण नै गया। अै गुफावा जैन अर बौद्ध धरम रा तीरथ है। उड़ीसा रै इतिहास मैं आं रो बौत महत्व है। खण्डगिरी री पा'डी १३३ फुट

ऊंची है। खासी दूर तांई माठां सूं कच्चा पगोथिया बणायोड़ा है, ऊपर कच्चा मारग अलग-अलग गुफावां तांई जावै। डूंगरी माथै खासा बड़ा अर घणा बिरख है। खण्डगिरी माथै पारसनाथ जी रो मिंदर है। एक छोटो सो तलाब है जकै नै आकाश गंगा कैवे। पत्थरां नै काट'र पाडी माथै २४ तीरथकरां री मूरत्यां बणायोडी है। दूर-दूर तांई पाडी मैं ई पचासूं छोटी बड़ी गुफावां बणायोड़ी है, जकां मैं पुराणे जमाने मैं जैन साधू रैवता हा। कैवे के अै घुफावां २००० बरस पुराणी है।

खण्डगिरी रै सामै ही सड़क रै दूजै कानी उदयगिरी री गुफावां है। उदयगिरी री ऊंचाई ११८ फुट है। अै गुफावां भगवान बुद्ध रे जमाने री है। अै गुफावां भी पा'ड काट'र बणायोड़ी है। अै खण्डगिरी सूं बड़ी है। केई जागां एक-एक गुफा मैं केई कोटड़्यां अर बरामद है। गुंपा रानी री गुफा दुमंजली हैं। गणेश गुफा रै आगे दो हाथी द्वारपाल दांई खड़्यां है। सर्प गुफा, बैकुण्ठ गुफा अर स्वर्णद्वारी गुफावां भी आछी वड़ी अर मसहूर है। हाथी गुफा रो इतिहास री दीठ सूं बडो महत्व है। इण मैं उडीसा रे सम्राट खारवेस रे शासन काल रै तेरह बरसां री घटनावां रो ब्योरो एक अभिलेख मैं लिख्योड़ो है। औ शिलालेख ई. पू. दूजी सदी रो है। जिण बेला संसार रा घणखरा देश जंगली अवस्था मैं हा, भारत री सभ्यता खासी उन्नत ही इण तथ्य रो ओ अभिलेख परतख परमाण है। दोपैर रे भोजन पछै अठै सूं रवाना हुया।

भुवनेश्वर मिंदरां रो नगर गिणीजै। कैवत है कै अठै पुराणे समय मैं मिंदर खासा हा। इण नै 'कोटिलिंग' भी कैवता। आज भी इण नगर मैं पांच सो नेड़ा छोटा-बडा मिंदर है। उडीसा रा मिंदर गोळाकार है। अठै रे मिंदरां रो शिल्प मध्य भारत रै मिंदरां सूं जुदा है। मिंदर रे ऊपर कळश चारूं पासै रक्षक देवी-देवतां, लता, मण्डप, तोरण, शंख,

चक्र, पदम म्राद शुभ प्रतीकां रै अलावा काम, क्रोध आद पट्विकार अर सिकार, मैथून म्राद विलास भावनावां री मूरत्यां भी हुवै। भारत री संस्क्रिति जीवन नैं समग्र रूप मे ही ग्रहण करै। इण खारत सिरिष्टी री उत्पत्ति रै काम भाव नैं अश्लील न मान'र प्रक्रत भाव मैं ग्रहण कर्यो है।

टूरिस्ट बस म्राळा खास मिंदर ही दिखावै। सबसूं पैलां म्हे मुक्तेश्वर मिंदर पूग्या। म्रो मिंदर खासो श्रो अर कलात्मक है। इण रो निरमाण आठवी-नवीं सदी मैं हुयो, पण म्रोजूं तांई ओ सही सलामत है अर भव्य लागै। इण मैं सुंदर आक्रिति म्रर गैणां गामा आळी महिलावां रो हाव-भावां समेत सोवणो चित्राम है। चौकड़ी भरता हिरण, पूजा करता सन्यासी, अध्ययन-अध्यापन करता शिष्य अर गुरु, क्रिड़ा करता बांदर म्राद री मोवणी मूरत्यां रै कारण मिंदर सुपन लोक दांई लागै। मिंदर रै दरसन निरखण तांई हजारुं जातरी रोज म्रठै ढूकै। परसिध स्थापत्यकार फरगूसन इण मिंदर नैं उड़ीसा रै मिंदरां मैं कला री दीठ सूं शिरोमणि मिंदर कंयो है।

इण रै उपरांत सातवी सदी मैं बण्योड़े परशुरामेश्वर रै प्राचीन मिंदर नैं देखण नै पूग्या। इण री बणगत सूं भी इण री प्राचीनता रो आभास हुवै। इण मिंदर मैं शिव लिंग रै अलावा पारवती, लिछमी, महिसासुर मारणी दुरगा, गणेश, वाराह म्राद री मूरत्यां भी है। इणां रै एकैसाथै मौजूद हूणे सूं शैव अर साकत सम्प्रदायां रै सह अस्तित्व रो भी पतो लागै।

भुवनेश्वर रै मिंदरां मैं लिंगराज रे मिंदर रो भी घणो महत्व है। म्रो बड़ो विशाल म्रर ऊंचो बण्योड़ो है मिंदर री ऊंचाई १४७ फुट म्रर चौमीते री लम्बाई, चौड़ाई, ऊंचाई ५००×४६५×७.३० फुट है। इण मिंदर रै म्रांगण मैं दूजा केई मिंदर है, जकां मैं पारवतीजी रो

मिंदर विशेष सुंदर है। गणेशजी री मूरती घणी बड़ी है अर एकल सिला सूं बण्योड़ी है। पारवतीजी री मूरती में दुपट्टे माथै बारीक बेल बूटां रो काम है। मिंदर री दीवारां माथै फूल तोड़ती महिलावां, अभिसारिकावां, बीणावादिनी स्त्रियां, परजा रा दुख दरद सुणता राजा अर अध्ययन करता पण्डितां आद रा अनूठी मूरतां है। अष्ट दिकपालां री मूरत्यां, पाण्डवां रो स्वर्गारोहण अर युद्ध री मूरत्यां, मूरती कला री श्रेष्ठ रचनावां है। उड़ियां शिल्प री सम्पूरण विशेषतावां इण में देखी जा सकै। इण मिंदर में प्रसाद अर भोग री भी सुंदर व्यवस्था है। जात पांत रै भेद भाव बिना अठै सब एक पांत में बैठ'र प्रसाद पावै। ओ मिंदर पंचरथ शैली में बण्यो है जिणमें बिमान, जगमोहन, नाट्य मिंदर, गरभघर अर विशाल मिंदर स्थापत्य कला नै देख'र जातरी दंग रै जावै अर सरधा सूं इष्ट रै आगे ही नहीं मिंदर रै निरमाण करण वाळा कलाकारां रै आगे भी नत मस्तक हू जावै।

पाछा घिरती विरियां भुवनेश्वर सूं १० कि. मी. दखण पूरब में धौली पाडी माथै बण्योड़े शांति स्तूप नै देखणनै गया। पा'डी माथै ऊपर तांई बस जावै। आखिर में थोडो दूर पैदल जाणो पड़ै। पछै पगोथिया चढ़'र स्तूप माथै पूग्या। ओ स्तूप बोध गाया में जापान सरकार रै बणायेड़े स्तूप रै हू-बहू सरीसो है। शांति रो प्रतीक ओ स्तूप भी सफेद रंग सूं पोत्योड़ो है। चारूं दिशावां में बुद्ध री चार मूरत्यां बणायोड़ी है। इण पा'डी रै नीचे दखण में कलिंग रो इतिहास प्रसिद्ध युद्ध महानदी रै किनारे हुयो। कलिंग देश रा लोगां पराक्रम सूं युद्ध लड्यो। अशोक युद्ध जीत तो ग्यो, पण अठै हुये खून खराबे नै देखकर उण रै मन में पछतावो अर ग्लानि हुई। चंड अशोक धर्म अशोक में बदळग्यो। युद्ध घोष री जाग्यां अबै धर्म रो घोष हूण लाग्यो। अशोक रो ओ मानस परिवर्तन इतिहास री अपूर्व घटना है। उणरी याद में ई ओ स्तूप बण्यो है। अठै रै एकांत अर शांत वातावरण में घणो आत्मिक सुख मिलै। स्तूप सूं नीचे, बस स्टाप सूं पैलां पा'डी

मारग माथै अठै रा लोग काजू बेचता दीसे। अठै नेड़े कने रे खेतर मैं काजू री खेती हुवै। इण वजह सूं अठै काजू सस्ता है। भाव ताव करयां ७० रुपिया किलो रे भाव सूं आज भी मिल जावै। म्हे भी अठै सूं काजू रा पैकेट खरीद्या। पण बाद मैं तोलणे पर ५०० ग्राम माल ४०० ग्राम ही निकळ्यो। बीच में पुराणा काजू भी मिलायोड़ा हा। ठगी री इण प्रकिति नै म्हे कद छोड़ सां ? इसा प्रसंगां सूं मन में पीड़ा हुवै अर अणजाण लोगां माथै अविश्वास री भावना पैदा हुवै।

इण जातरां री आखिरी पड़ाव नंदन कानन बगीचो हो। भुवनेश्वर सूं १२ कि. मी. दूर ४०० हैक्टेयर भूमि माथै पसर्योड़ो ओ बाग विशाल, हर्यो–भर्यो वन है। इणरे नजदीक बारंग रेलवे स्टेशन भी है। बाग मैं एक कुदरती झील है, जकै रे एकै कानी 'बाटेनिकल गार्डन' अर दूजै कानी चिड़ियाघर है। चिड़ियाघर मीलां लम्बो है अर जंगली जानवरां री संख्या भी खासी बड़ी है। कानन मैं पेड़-पौधां, झाड़ां-लतावां अर दूब आद री रख–रखाव माथै चोखो ध्यान दरीजै। चिड़ियाघर मैं भांत–भांत रा हंस, रंग बिरगां पंछी अर सफेद मोर है। केई किसम रा मालू, बारहसींगां, हिरण अर चीतळ भी दीसै। बिना पूंछ वाळा बांदर अर भूरे रंग रा भालू दरसकां नै आक्रष्ट करै। अठै हाथी अर जिराफ भी चिड़ियाघर मैं राख्योड़ा है। शेरां री तादाद भी खासी है। पिंजरां री जाग्यां खुले बाड़े मैं विचरण करता शेरां नै बंधन रै बावजूद कुदरती माहौल मिलै। बागीचे में चांय नास्ते री स्टाल माथै थक्या–भूखा जातरी सुस्तावै अर पेट पूजा कर थकान मिटने री चेष्टा करे। केई *महिलावां तो दिन भर रै भ्रमण सूं शिथिल हु'र पाछो फुरणे री जल्दी* करण लागी ही। छ बज्या पाछा टुर्या। ८ बज्या रे नेड़े पुरी पूंचग्या। मन मैं ओ भाव लियां कै भारत री मूर्ति कला, मिंदर निरमाण अर गुफा निरमाण री कला उड़ीसा रै बिना पूरणता नी पा सकै।